

2/12/63

संगीत राग दर्शनि

मुद्रणाय - ग्रन्थालय,
अरसमिड, करौली
वाराणसी-६

ग्रन्थालय
वाराणसी-५
12/63



वसंत रा. इराण

भाग १

(संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण)

संपादक

वसंत चामन ठकार

एम० ए०, संगीत शास्त्रकार

मंत्री, गांधी सर्वोपनिवेशालय मंडळ प्रकाशन, प्रयाग



संगीत राग-दर्शन

भाग १

(संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण)

०३१ मूला

श्रीमो

~~VII~~ B
IX

आभ्यास-ग्रन्थादयः

भारतनिधि, कराँची

वाराणसी-५

संपादक

श्री वसंत वामन ठकार

एम० ए०, संगीत प्रभाकर

मंत्री, गांधर्व महाविद्यालय मंडल प्रकाशन, प्रयाग

प्रथम संस्करण के संपादक

स्व० पं० नारायण मोरेश्वर खरे



इस पुस्तक के छापने का सब अधिकार
प्रकाशन मंडल ने स्वाधीन रक्खा है

संशोधित तथा परिवर्धित चतुर्थ संस्करण ३०००
१९५१

मूल्य
दो रुपया आठ आना

प्रकाशक—गांधर्व महाविद्यालय मंडल प्रकाशन, प्रयाग
मुद्रक—रामप्रताप त्रिपाठी, सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

अ ४२/६३

अभिनय-ग्रन्थालय,

भारतनिधि, कलकत्ता

कागज-५



परमपूज्य स्वर्गीय पंडित विष्णु दिगम्बर जी पलुस्कर

जन्म—कुसुंदवाड

निधन—मिरज

तिथि—श्रावण शुद्ध १५, संवत् १९२९
(राखी पूर्णिमा)

तिथि—श्रावण शुद्ध अष्टमी
संवत् १९८८

ग्विवाङ्, ता० १९ अगस्त, १८७२

गुरुवार, ता० २१ अगस्त, १९३१

आम्नाय—ग्रन्थाख्य,

भरतनिधि, करौली

वाराणसी-5

परमपूज्य गुरुवर्य स्वर्गीय पंडित विष्णु दिगम्बर
पलुस्कर जी के चरणकमलों में सविनय और
सादर समर्पित जिनकी तपस्या और साधना
से मृतप्राय संगीतकला का पुनरुद्धार
हुआ है और जिनकी शिक्षा एवं शुभा-
शीषों के फलस्वरूप हमें इस अमर
कला का कुछ परिचय प्राप्त हो
सका है तथा जिनकी प्रेरणा
एवं कृपा से ही प्रस्तुत
कार्य भी संपन्न हो
रहा है ।

गांधर्व महाविद्यालय मंडल प्रकाशन

प्रयाग

श्री. विष्णु अण्णाजी कशाळकर	अध्यक्ष
श्री. वामन नारायण ठकार	} उपाध्यक्ष
श्री. सदाशिव दत्तात्रय आपटे	
श्री. वसंत वामन ठकार	मंत्री तथा कोषाध्यक्ष
श्री. जगदीश नारायण पाठक	} सदस्य
श्री. शंकर श्रीपाद बोडस, कानपुर	
श्री. शेषगिरि वासुदेव जोशी, कानपुर	

उद्देश्य

आधुनिक तथा प्राचीन संगीत साहित्य को प्रकाशित करना तथा संगीत की क्रमिक पुस्तकें शुद्ध और शास्त्रीय सिद्धांतों के अनुसार तय्यार करके प्रकाशित करना ।

भूमिका

“संगीत राग दर्शन” के प्रथम भाग का चतुर्थ संस्करण संशोधित और परिवर्द्धित रूप में संगीत प्रेमियों, एवं विद्यार्थियों की सेवा में उपस्थित करते हुए, आज हमें अत्यंत हर्ष होता है। इधर बहुत दिनों से इस पुस्तक के पुनर्मुद्रण की मांग थी, परन्तु कुछ विशेष कठिनाइयों के कारण हम इस पुस्तक को इसके पूर्व प्रकाशित करने में असमर्थ रहे। आशा है, पाठक हमें इस विलंब के लिए क्षमा करेंगे।

इस संस्करण में हमने उत्तर प्रदेश के हाईस्कूल के संगीत-पाठ्यक्रम, प्रयाग संगीत समिति के द्वितीय वर्ष (ज्यूनियर डिप्लोमा) तथा संगीत की अन्य समकक्ष परीक्षाओं के पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए, कुछ आवश्यक संशोधन किए हैं। कुल १९ रागों में हमने करीब-करीब १२० गीत दिए हैं जिनमें सरगम, राग लक्षण, विलंबित ख्याल, द्रुत ख्याल (तीन ताल, एक ताल, इ०), ध्रुपद, धमार, होली, ठुमरी, भजन आदि का समावेश है। हर राग के साथ उसका विवरण, स्वरविस्तार और तानों सहित दिया गया है। साथ ही साथ विषय-प्रवेश में कुछ रागों का तुलनात्मक विवरण भी है। कुछ अलंकार भी दिए गये हैं जिनके अभ्यास से तानें बनाना तथा गाना सुगम हो सकता है।

सर्वश्री शंकरराव व्यास, बी आर० देवधर, वि० ना० पट-वधन, डी० व्ही० पलुस्कर, विनय चन्द्र मौद्गल्य, स० द० आपटे

ने अपनी कुछ अमूल्य स्वर रचनाएं तथा गीत देकर हमें अत्यंत अनुग्रहीत किया है। गीत इस प्रकार हैं :—

- (१) श्याम सुंदर—राग तिलंग—श्री शंकर राव व्यास कृत
- (२) नयना वसी—राग बिलावल— ” ” ”
- (३) गावत सखी—राग कालिंगड़ा— ” ” ”
- (४) काहे सजत अंग—राग कालिंगड़ा— ” ” ”
- (५) अरेमन मान—राग कालिंगड़ा—श्री० विनयचन्द्र
मौद्गल्य कृत (श्री० वि० ना० पटवर्धन कृत “राग विज्ञान”)
- (६) मूरख छाड़—राग कालिंगड़ा—श्री० वि० ना० पटवर्धन
कृत “राग-विज्ञान”
- (७) जोगी मतजा—राग भैरवी—श्री० वि० ना० पटवर्धन
कृत “राग-विज्ञान”
- (८) कान्ह मुरली वाले—राग तिलंग—श्री० बी० आर० देवधर
कृत “राग बोध”
- (९) आज कैसी ब्रिज में—राग काफी—श्री० बी० आर० देव-
धर कृत “राग बोध”
- (१०) कैसे रहूँ घर आज—राग काफी—श्री० बी० आर०
देवधर कृत “राग बोध”
- (११) टेरे टेरे रसना—राग काफी—श्री० डी० व्ही० पलुस्कर
कृत
- (१२) प्रेम नदी के तीरा—राग भीमपलासी—शब्दकार—पं०
बालकृष्ण राव, स्वरकार—श्री० स० द० आपटे

इस पुस्तक में छपे सभी राग लक्षण, इस पुस्तक के प्रथम संस्करण के संपादक स्वर्गीय पंडित नारायण मोरेश्वर खरे द्वारा रचित हैं।

हम श्री रामनरेश त्रिपाठी तथा पं० बालकृष्ण राव को, जिन्होंने अपनी अमूल्य रचनाओं को छापने की हमें अनुमति दी है, विशेष धन्यवाद देते हैं।

श्री महेश नारायण सक्सेना, तथा गांधर्व महाविद्यालय मंडल, प्रयाग के सदस्यों की विविध प्रकार की सहायता के लिए हम उनके भी आभारी हैं।

इस पुस्तक को शीघ्र छपवाने का प्रबंध करने में, और छपाई तथा कागज संवधी अन्य कार्यों में, जो सहायता और सहयोग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन मुद्रणालय के व्यवस्थापक श्री सीतारामजी गुंठे, तथा उनके सहकारियों द्वारा प्राप्त हुआ है उसके लिए हम उन्हें जितना धन्यवाद दें वह कम ही होगा।

पुस्तक की आकार-वृद्धि तथा महँगाई के कारण हमें लाचारी से इस पुस्तक का मूल्य बढ़ाना पड़ा है। इस पुस्तक से संगीत-प्रेमी तथा विद्यार्थी पूरा लाभ उठा सकेंगे, ऐसी हमें आशा है और यदि इसके द्वारा उनकी कुछ भी सेवा हो सकी, तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक और सफल समझूँगा।

शुक्रवार, २४ अगस्त, १९५१
 श्रावण कृष्ण अष्टमी सं० २००८,
 १०७, बाई का बाग, अलाहाबाद

वसंत वामन ठकार
 मन्त्री, गांधर्व महाविद्यालय
 मंडल प्रकाशन, प्रयाग

सांकेतिक चिह्नों का परिचय

१. विकृत स्वर (तीव्र, कोमल) जैसे—रे ग ध नी म्

• मंद्र सप्तक जैसे—प ध नी

। तार सप्तक जैसे—सारंगम

५ उच्चारण (स्वरों का) जैसे—सा ५ रे ५

• उच्चारण (अक्षरों का) जैसे—सा ५ नि
रा . म

(मीड) जैसे—प ग

कणस्वर स्वरों के ऊपर दिये गये हैं जैसे—ग प
~ गुरु = २ मात्रा जैसे—सा रे

—लघु = १ मात्रा जैसे—सा रे ग

○ द्रुत = १/२ मात्रा जैसे—सा रे ग म

∪ अणुद्रुत = १/४ मात्रा जैसे—सारेगम

∪ अणुअणुद्रुत = १/८ मात्रा जैसे—सारेगमपधनीसा

’ विश्रांति जैसे—सा ’ रे

१ सम जैसे—सा ५ रे

रा . म

१

+ खाली जैसे—सा ५ रे

रा . म

+

(अन्य तालियों के लिए मात्रा के क्रमांक का उपयोग इसी प्रकार होगा)

। एक आवर्त पूर्ण ।

॥ गीत के विभाग की समाप्ति ।

इस पुस्तक में आए हुए तालों का परिचय

(१) तीनताल—मात्रा १६ विभाग ४ (४-४ मात्रा के) ताली

१-५-१३ और खाली ९ पर

मात्रा :—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ |
 चोल :—धाधिधिधा धाधिधिधा धा ति ति ता ता धि धि धा |
 १ ५ + १३

(२) ऋपताल—मात्रा १०, विभाग ४ (२-३-२-३ मात्रा के)

ताली १-३-८ पर और खाली ६ पर

मात्रा :—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० |
 चोल :—धी ना धीधीना तीना धीधीना |
 १ ३ + ८

(३) चारताल (पखावज का ताल)—मात्रा १२, विभाग ६ (२-

२ मात्रा के) ताली १-५-९-११ पर और खाली ३-७ पर

मात्रा :—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ |
 चोल :—धाधा दिता किट धा दिता किट त्रक गदिगन |
 १ + ५ + ९ ११

(४) एकताल मध्यलय—मात्रा १२, विभाग ६ (२-२ मात्रा

के) ताली १-५-९-११ पर और खाली ३-७ पर

मात्रा :—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ |
 चोल :—धि धि धा त्रक तुना कंता धि त्रक धी ना |
 १ + ५ + ९ ११

(५) एकताल विलंबित—मात्रा १२, विभाग ६ (२-२ मात्रा के) १-५-९-११ पर और खाली ३-७ पर

मात्रा:—१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
 बोल:—धि धि धा गि तिरि किट तूना कत्ता धा गि तिरि किट धीना
 १ + ५ + ९ ११

(६) तीत्रा (पखावज का ताल)—मात्रा ७, विभाग ३ (३-२-२ मात्रा के) ताली १-४-६ पर, खाली नहीं होगी

मात्रा:—१ २ ३ ४ ५ ६ ७
 बोल:—धा दि ता किट तक गदि गन
 १ ४ ६

(७) रूपक—मात्रा ७, विभाग ३ (३-२-२ मात्रा के) सम और खाली पहली मात्रा पर और ताली ४-६ पर

मात्रा:—१ २ ३ ४ ५ ६ ७
 बोल:—ती ती ना धी ना धी ना
 + ४ ६

(८) दादरा मात्रा ६, विभाग २ (३-३ के) ताली १ और खाली ४ पर

मात्रा:—१ २ ३ ४ ५ ६
 बोल:—धा धीना धा ती ना
 १ +

(९) कहरवा मात्रा ४, विभाग ४ ताली १-२-४ पर और खाली ३ पर

मात्रा:—१ २ ३ ४
 बोल:—धा गि नति नक धिन
 १ २ + ४

अलंकार अभ्यास

१. सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनी, धनीसां ।
सांनीध, नीधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा ।
२. सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनी, पधनीसां ।
सांनीधप, नीधपम, धपमग, पमगरे, मगरेसा ।
३. सारेगग, रेगमम, गमपप, मपधध, पधनीनी, धनीसांसां ।
सांनीधध, नीधपप, धपमम, पमगग, मगरेरे, गरेसासा ।
४. सासारेग, रेरेगम, गगमप, ममपध, पपधनी, धधनीसां ।
सांसांनीध, नीनीधप, धधपम, पपमग, ममगरे, गगरेसा ।
५. साग, रेम, गप, मध, पनी, धसां ।
सांध, नीप, धम, पग, मरे, गसा ।
६. सारेसाग, रेगरेम, गमगप, मपमध, पधपनी, धनीधसां ।
सांनीसांध, नीधनीप, धपधम, पमपग, मगमरे, गरेगसा ।
७. सारेगसा, रेगमरे, गमपग, मपधम, पधनीप, धनीसांध ।
धसांनीध, पनीधप, मधपम, गपमग, रेमगरे, सागरेसा ।
८. सागरेसा, रेमगरे, गपमग, मधपम, पनीधप, धसांनीध ।
धनीसांध, पधनीप, मपधम, गमपग, रेगमरे, सारेगसा ।
९. सारेगरेग, रेगमगम, गमपमप, मपधपध, पधनीधनी,
धनीसांनीसां ।
सांनीधनीध, नीधपधप, धपमपम, पमगमग, मगरेगरे,
गरेसारेसा ।
१०. सागरेग, रेमगम, गपमप, मधपध, पनीधनी, धसांनीसां ।
सांनीसांध, नीधनीप, धपधम, पमपग, मगमरे, गरेगसा ।

अनुक्रमणिका

विषय-प्रवेश—(अ) रागों का तुलनात्मक विवरण पृ० एक

(ब) रागों में छाया पृ० सात

12. राग विलावल (अल्हैया)—परिचय, स्वर विस्तार तानें—
पृ० १, सरगम—पृ० ३, कहत विलावल (राग लक्षण)—पृ० ३,
दैया कहाँ (वि० ख्याल)—पृ० ४, प्रबल ही श्याम—पृ० ५, तूँहि आद
नाद (ध्रुपद)—पृ० ७, सुमीरन कर—पृ० ८, नयना बसी,—पृ० ९।

राग बिहाग—परिचय, स्वर विस्तार तानें—पृ० १०, सर-
गम—पृ० १४, गावत मधुर (राग लक्षण)—पृ० १४, जय राम रूप
(धमार)—पृ० १५, सखी आज—पृ० १७, कैसे सुख सोवे (वि०
ख्याल)—पृ० १८, सकल भुवन—पृ० २०, जय रामचन्द्र—पृ० २१,
अपनो कबहूँ कर—पृ० २२।

राग कल्याण—परिचय, स्वर विस्तार तानें—पृ० २४,
सरगम—पृ० २५, गावत गुनि (राग लक्षण)—पृ० २६, पारब्रह्म
(ध्रुपद)—पृ० २८, कह सखी कैसे के (वि० ख्याल)—पृ० २९,
अखिया राम रूप—पृ० ३०, अवंगुण न कीजिये—पृ० ३१।

राग भूपाली—परिचय, स्वर विस्तार तानें—पृ० ३३, सरगम—
पृ० ३४, गावत सुन्दर (राग लक्षण)—पृ० ३५, अयिभुवन पृ०—३६,
अपनो निज पद (ध्रुपद)—पृ० ३८, सुधे बोलत ना (वि० ख्याल)—
पृ० ४०, जबसे तुमीसन पृ० ४१।

राग हमीर—परिचय, स्वर विस्तार तानें-पृ० ४२, सरगम-
पृ० ४५, यह सुखद राग हमीर (राग लक्षण)-पृ० ४६, चंचल
चपला (ध्रुपद)-पृ० ४८, करन चहूँ (वि० ख्याल)-पृ० ४९, गुरु
बिन-पृ० ५०, ढीठ लंगरवा-पृ० ५१ ।

राग खमाज—परिचय, स्वर विस्तार तानें-पृ० ५३, सरगम
पृ०-५५, सोहत मधुर खमाज (राग लक्षण)-पृ० ५५, राजत
रघुवीर (ध्रुपद)-पृ० ५६, जयाति नव नागरी पृ०-५८, ऐसो को
उदार-पृ० ५९, जानकी जीवन-पृ० ६०, क्यों मन जीवन सार
विसारा-पृ० ६१ ।

राग देश—परिचय, स्वर विस्तार तानें-पृ० ६३, सरगम-
पृ० ६६, गुनी देस गावत (राग लक्षण)-पृ० ६७, प्रभो तुम बिन-
पृ० ६९, नेक चाल चलिये पृ०-७०, श्यामा तेरी-पृ० ७१, तराना-
पृ० ७१ ;

राग तिलंग—परिचय, स्वर विस्तार तानें-पृ० ७४, सरगम
-पृ० ७७, सब करत तिलंग (राग लक्षण) पृ०-७८, आये जगत
(धमार)-पृ० ७९, तुमही मंजुल रसना-पृ० ८१, कान्ह मुरली-पृ०
८२, श्याम सुन्दर-पृ० ८३ ।

राग तिलक कामोद—परिचय, स्वर विस्तार तानें-पृ० ८५
सरगम-पृ० ८८, तिलक कामोद बुधजन-(राग लक्षण)-पृ० ८९,
नवल रंग (ध्रुपद)-पृ० ९०, तीरथ को-पृ० ९१, कोयलिया बोले-पृ०
९३, नीर भरन कैसे जाऊँ-पृ० ९४, बेग बेग-पृ० ९५ ।

राग काफ़ी—परिचय, स्वर-विस्तार-तानें-पृ० ९७, सरगम-
पृ० ९९, कैसी काफ़ी (राग लक्षण)-पृ० १००, मनुवा राम नाम

पृ०-१०१, टेरे टेरे रसना-पृ० १०३, आज कैसी ब्रिज में-पृ० १०३,
कैसे रहूँ घर आज (दीपचंदी)-पृ० १०४ ।

✓ राग बागेश्री-परिचय स्वर विस्तार तानें-पृ० १०६, सरगम-
पृ० १०९, धन्य बागेशरी (राग लक्षण)-पृ० १०९, धन धन
(ध्रुपद)-पृ० १११, टेरे सुनो (वि० ख्याल)-पृ० ११३, बेला चमेली-
पृ० ११४, जमुना तट-पृ० ११६, तराना-पृ०-११७ ।

राग सारंग-परिचय स्वर विस्तार तानें-पृ० ११९, सरगम-
पृ० १२२, धन धन (राग लक्षण)-पृ० १२२, माया मोहनी (धमार)-
पृ० १२३, बौरे जिन अल्ला (वि० ख्याल)-पृ० १२४, मधु मद न
मन करो-पृ० १२६, बन ही बन-पृ० १२७ ।

राग भीमपलासी-परिचय, स्वरविस्तार तानें-पृ० १२९,
सरगम-पृ० १३२, गावत बुध जन (राग लक्षण)-पृ० १३३, निरख
मदन (ध्रुपद)-पृ० १३४, राम भज-पृ० १३५, अब तो बड़ी वेर
(वि० ख्या)-पृ० १३६, ठाढ़ी प्रेम नदी के तीरा-पृ० १३८, सबसे
कैची पृ० १३९, तराना पृ० १४० ।

राग पीलू-परिचय, स्वर विस्तार-तानें-पृ० १४२, सरगम-
पृ० १४५, पीलू राग सकल (राग लक्षण)-पृ० १४६, रघुवीर
तुमको-पृ० १४७, पार लगा दे (पंजाबी)-पृ० १४८, डग मग हाले-
पृ० १४९ ।

✓ राग आसावरी-परिचय, स्वर विस्तार-तानें-पृ० १५१,
सरगम-पृ० १५३, कहत गुनी (राग लक्षण)-पृ० १५३, सुमीर हो
नाम को-पृ० १५५, नेवरिया (वि० ख्याल)-पृ० १५७, भोर भई-
पृ० १५८, तराना-पृ० १५९ ।

राग भैरव-परिचय, स्वर विस्तार-तानें-पृ० १६१, सरगम-
पृ० १६३, प्रथम भैरव (राग लक्ष्मण)-पृ० १६४, प्रथम आद नाद
(ध्रुपद)-पृ० १६५, बालमुवा मोरे (वि० ख्याल)-पृ० १६७, जागिये
रघुनाथ-पृ० १६८, जागो मोहन प्यारे-पृ० १७० ।

राग कालिंगडा-परिचय, स्वर विस्तार तानें-पृ० १७२,
सरगम-पृ० १७४, मन भावत (राग लक्ष्मण)-पृ० १७४, गावत
सखी-पृ० १७५, काहे सजत अंग-पृ० १७६, अरे मन मान-पृ०
१७८, मूरख छांड-पृ० १७९ ।

राग भैरवी-परिचय, स्वर विस्तार-तानें-पृ० १८१, सरगम-
पृ० १८३, जयति जय रागिनी (राग लक्ष्मण)-पृ० १८४, मत कर
मौह-पृ० १८५, जोगी मत जा-पृ० १८६, सरस्वती शारदा-
पृ० १८७, बीत गये दीना-पृ० १८८ ।

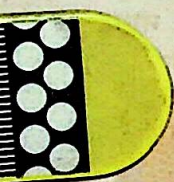
राग मालकंस-परिचय, स्वर विस्तार तानें-पृ० १९०,
सरगम-पृ० १९३, मालकंस को रूप (राग लक्ष्मण)-पृ० १९३, आये
रघुवीर (ध्रुपद)-पृ० १९४, ओंकार हर हर (सुरफाक)-पृ० १९६,
सा सुन्दर वदन-पृ० १९७, कबहो कपी (वि० ख्या)-पृ० १९९, हम
खोज खोज-पृ० २००, तराना-पृ० २०१ ।

ईश-प्रार्थना-जय जगदीश हरे-पृ० २०३ ।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	६	सा s गs पs	सा sगs पs
३७	७	सासा	सासा
४६	५	पपसा	पपसा
१०३	१२	सारेंग ००	सारेंग ००
१३३	१८	निनिसा	निनिसा
१३३	१८	निनिसा	निनिसा
१४५	१४	रेसारे	रेसारे
१४५	१९	रेसारे	रेसारे
१५०	५	निनिनि	निनिनि
१७०	७	धsपsधम	धsपsध्म
१७७	१०	सासारे	सासारे

नमें
गव-
पथ-
और
खेत
सा
सा
और
हैं।



संगीत राग-दर्शन

भाग १

विषय-प्रवेश

(लेखकः—श्री वसंत वामन ठकार)

यस्य सर्वे समारंभा संगीतोद्धार हेतवे ।

तस्मै दिगंबरान्धाय विष्णवे गुरवे नमः ॥

(अ) रागों का तुलनात्मक विवरण

(१) खमाज और तिलंग

समता — (१) ये राग खमाज थाट के हैं । (२) इनमें आरोह में ऋषभ वर्जित है, (३) आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद और अवरोह में दोनों निषादों का साथ-साथ प्रयोग होता है । (४) दोनों ही पूर्वांगवादी राग हैं और दोनों में गंधार वादी तथा निषाद संवादी हैं । (५) निम्नलिखित स्वर समुदाय दोनों में समान हैं :—साग, मग, पमग; नि सा ग म प, ग म प, प म ग; ग म ग प, म ग; प नि सा; प नि सा रें नि सा; नि सा ग म ग रें सा । (६) दोनों में षड्ज और गंधार न्यास स्वर हैं । (७) दोनों ही चंचल प्रकृति के राग हैं ।

विभिन्नता —(१) खमाज षाडव-सम्पूर्ण राग है (आरोह मे रे वर्जित है) । तिलंग ओड़व ओड़व राग है (रे और ध वर्जित हैं) । (२) खमाज में धैवतका प्रयोग आरोहावरोह में होता है । तिलंग में धैवत वर्ज्य है । (३) खमाज में ध-म की संगति और तिलंग में नी-प की संगति है । (४) दोनों निषादों का प्रयोग खमाज में 'सान्निधि, मप धमग' इस प्रकार, तथा तिलंग में "गमपनिन्धि पम" । (५) तिलंग में मध्यम का न्यास है, खमाज में नहीं है । (६) तिलंग में ऋषभ का विवादी-प्रयोग है, परंतु खमाज में ऋषभ का अनुवादी के नाते आवश्यक प्रयोग है । (७) खमाजका मुख्य अंग "ग म प ध नि ध, म प ध, म ग" है, और तिलंग का "ग म प नि प म ग" है ।

(२) देश और तिलक-कामोद

समता —(१) दोनों खमाज थाट के राग हैं (२) दोनों ओड़व-संपूर्ण हैं (गंधार-धैवत आरोह में वर्ज्य हैं) । (३) आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग दोनों में है । (४) पंचम स्वर का महत्त्व दोनों रागों में वादी या संवादी के नाते है । (५) दोनों रागों के पूर्वांग के उठाव में "सारे मप" यह स्वर-क्रम है । (६) उत्तरांग में दोनों में "पनि सां रें सां" "सां, नि ध प" यह स्वर-प्रयोग हो सकता है (यद्यपि तिलक कामोद में सां, नी ध प कम होता है) । (७) ध-म की संगति दोनों में है । (८) दोनों में रे वक्र है । (९) दोनों चंचल प्रकृति के राग हैं ।

विभिन्नता —(१) तिलक-कामोद का चलन देश की अपेक्षा अधिक वक्र है । (२) तिलक-कामोद में गंधार और षड्ज

तीन

का महत्त्व, तथा देश में ऋषभ का महत्त्व है। (३) निषाद कोमल का प्रयोग देश का आवश्यक अंग है परन्तु तिलक कामोद में यह विवादी प्रयोग है (४) शुद्ध निषाद का प्रयोग तिलक कामोद में विशेष रूप से होता है—“पनि सारेग, सा” या “मग, सारेग, सानि”। परन्तु वाकी विस्तार निषाद को छोड़कर “पधमपस्मिध मग” इस प्रकार होता है। किन्तु देश में शुद्ध निषाद का आरोह में अभ्यास-मूलक बहुत्त्व है (५) गंधार कोमल का विवादी प्रयोग देश की विशेषता है। तिलक-कामोद में यह प्रयोग नहीं है। (६) “पसा” “साप” और “रेप” की स्वर-संगति का तिलक-कामोद में विशेष महत्त्व है। (७) देश का मुख्य अंग “ध, म, गरे, गनिसा” है और तिलक कामोद का—सारेप, मग, सारेग, सानी, पनि सारेग, सा” यह मुख्य अंग है।

(३) देश—सारंग

समता—(१) दोनों के आरोह ओडव हैं (गंधार और धैवत वर्ज्य हैं)। (२) आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग है। (३) दोनों रागों में ऋषभ और पंचम का वादी या संवादी के नाते महत्त्व है। (४) “मरे मपनि सा;” “रे म प नि सा;” “म प नि सा;” “म प नि सा रे म रे” इन स्वर समुदायों का प्रयोग दोनों ही रागों में होता है।

विभिन्नता—(१) देश खमाज थाट और सारंग काफी थाट का राग है। (२) देश ओडव-संपूर्ण राग है परन्तु सारंग ओडव-ओडव जाति का राग है। (३) सारंग में प-रे की संगति, किन्तु देश में ध-म की संगति है। (४) सारंग का गाने का समय दोपहर का, और देश का रात का है (५) कोमल गंधार का

विवादि-प्रयोग देश में है। किन्तु गंधार स्वर सारंग में वर्ज्य है।
(६) देश चंचल प्रकृति का राग है; सारंग अपेक्षाकृत गंभीर है। (७) देश का मुख्य अंग, “ध, म, गरे, ग नि सा” और सारंग का “नि सा रे, मरे, प म नि प, मरे, नि सा” है।

(४) बागेश्री-भीमपलासी

समता—(१) दोनों काफी थाट के राग है। (२) दोनों ओडव-संपूर्ण हैं (भीमपलासी के आरोह में ऋषभ और धैवत, तथा बागेश्री के आरोह में ऋषभ और पंचम वर्जित हैं)। (३) दोनों में मध्यम वादी और षड्ज संवादी हैं (४) दोनों में सा-म की संगति है। (५) दोनों में “ग् रे सा;” “म ग् रे सा;” “ग् म ग् रे सा;” “नी सा म, ग् म ग् रे सा” ये स्वरप्रयोग होते हैं।

विभिन्नता—(१) भीमपलासी काफी थाट के धनाश्री अंग का राग है, किन्तु बागेश्री कानडा अंग का है। (२) बागेश्री में मध्यम-धैवत तथा मध्यम-निषाद की संगति और भीमपलासी में पंचम-निषाद की संगति है। (३) भीमपलासी के आरोह में “ग् म प नी सा” और बागेश्री में “ग् म ध नी सा” ऐसा होता है। (४) भीमपलासी में पंचम स्वर आवश्यक है। बागेश्री पंचम के बिना गाई जा सकती है। और उसमें कभी कभी पंचम स्वर का प्रयोग वक्र रूप से होता है:—“सा नी ध, म प ध म ग्”। (५) बागेश्री को कुछ लोग षाडव संपूर्ण और कुछ संपूर्ण-संपूर्ण मानते हैं, किन्तु भीमपलासी ओडव संपूर्ण है। (६) बागेश्री में कभी कभी “मग्, रे ग् म” यह होता है (अर्थात् आरोह में ऋषभ का प्रयोग) भीमपलासी में नहीं। (७) भीमपलासी की अपेक्षा बागेश्री में गंधार का महत्त्व अधिक है। (८) बागेश्री का मुख्य

अंग “म ध, नि ध, म, ग् रे सा” और भीमपलासी का मुख्य अंग “ग् म प, ग् म ग् रे सा” है।

(५) राग भैरव और कालिंगड़ा

समता—(१) ये दोनों राग भैरव थाट के हैं। (२) दोनों ही संपूर्ण जाति के हैं। (३) दोनों में ही ऋषभ और धैवत के कोमल होने से तथा दोनों के संपूर्ण जाति के होने के कारण राग चलन में जरासी असावधानी करने पर एक राग दूसरे के क्षेत्र में प्रवेश कर सकता है। (४) पंचम और मध्यम यह दोनों स्वर इन रागों में महत्त्व रखते हैं। (५) आरोह में “निसागम” यह स्वर प्रयोग दोनों ही में हो सकता है।

विभिन्नता—(१) भैरव का चलन मंद्र सप्तक में अधिक है, और कालिंगड़े का मध्य सप्तक में है। (२) भैरव गंभीर प्रकृति का राग है, कालिंगड़ा के राग-चलन में चपलता अधिक होती है। (३) भैरव में धैवत वादी तथा ऋषभ संवादी हैं, परन्तु कालिंगड़े में पंचम वादी तथा षड्ज संवादी हैं। (४) भैरव का चलन सरल तथा विलंबित भाव का है परन्तु कालिंगड़ा की गति चक्र है (५) भैरव में धैवत और ऋषभ आंदोलित हैं, परन्तु कालिंगड़े में ऐसा नहीं है। (६) कालिंगड़े में पंचम के न्यास का एक विशेष महत्त्व है। (७) कालिंगड़े में आलाप के अंत में गंधार पर न्यास एक विशेष रूप से होता है :—“पध् पध् मपध्प, मग, रे सा” परन्तु भैरव में गंधार पर न्यास नहीं होता है। कुछ विद्वानों के मत में कालिंगड़ा में “नि, सारे ग” और “ध् प, नी गमग” स्वर-समुदाय महत्त्व रखते हैं। (८) भैरव में “सा, ध् ध् प”

ग ग

“म रे रे सा” इस प्रकार सा से ध तथा म से रे तक मीड से आते हैं, परंतु कालिंगड़े में मीड का प्रयोग नहीं है (९) कालिंगड़ा चंचल प्रकृति का राग होने से इसमें मध्यम तीव्र और निषाद कोमल का विवादी-प्रयोग होता है। तथा इस राग का परज राग से मिश्रण भी करते हैं। (१०) कालिंगड़ा राग के अंतिम प्रहर में गाया जाता है और भैरव प्रातःकाल के प्रथम प्रहर में गाया

निनि ग ग

जाता है। (११) भैरव का मुख्य अंग, “गमध्ध्प, ग म रे रे सा” और कालिंगड़े का मुख्य अंग—“पध्मप गमप, ध्प”।

(६) आसावरी और जौनपुरी

समता—(१) ये दोनों राग आसावरी थाट के हैं। (२) दोनों में “रेमप, निध्प” “सारेमप” “सान्निध्, प, निध्, प” “मप-ध्मप, ग्, रेसा” यह स्वर प्रयोग होते हैं। (३) दोनोंही रागों का वादी स्वर धैवत है। (४) दोनोंही के अवरोह संपूर्ण हैं। (५) तानों में दोनों रागों में “मपध्न्नीसा” यह स्वर क्रम हो सकता है।

विभिन्नता—(१) आसावरी ओडव-संपूर्ण, किन्तु जौनपुरी षाडव-संपूर्ण है (जौनपुरी में आरोह में निषाद है)। (२) आसावरी में निषाद का प्रयोग आरोह में केवल तानों में होता है, किन्तु जौनपुरी में यह प्रयोग राग वाचक है। (३) जौनपुरी में आसावरी की अपेक्षा धैवत का महत्त्व कम है, किन्तु पंचम का

म सा

महत्त्व अधिक है। (४) “मपग्, रे, मप” (गंधार पर रुककर सा रे, मप द्वारा फिरसे पंचम पर पहुँचकर पंचम का महत्त्व

दिखलाया जाता है) यह स्वर प्रयोग जौनपुरी का आवश्यक अंग है। आसावरी में भी इसका प्रयोग है, परन्तु वह आवश्यक नहीं है। (५) कुछ लोग जौनपुरी में पंचम वादी तथा ऋषम संवादी मानते हैं। (६) जौनपुरी का मुख्य अंग “मप धन्धिप, मपधन्नीसा,

म सा
निधिप, मपग, रे, मप, न्धिप” है, और आसावरी का मुख्य अंग—मपधमप, ग, रेसा, रेमपध, मपधसा, रेन्धिप, मपधमप, ग रेसा”

(ब) रागों में छाया

(१) राग पीलू

यह काफी थाट का संकीर्ण प्रकृति का राग है और इसमें विवादी और अनुवादी के नाते बारहों स्वरों का प्रयोग होता है। इसलिए स्वाभाविक रूपसे इस राग में अन्य रागों की छाया आती है। पीलू राग का चलन विभिन्न रागों के स्वर समुदायों को मिलाकर बनता है। परन्तु एक विशिष्ट स्वर समुदाय का प्रयोग पीलू अंग को कायम रखता है :—“निसाग, रेसा, रेसा, पं, धं, निसा”। पीलू में जिन रागों की छाया आती है उनमें से कुछ का वर्णन नीचे किया जा रहा है :—

खमाज की छाया— पीलू में निम्नलिखित स्वर समुदाय गाते समय खमाज राग की छाया आती है :—“निसागमप, गमप, धप, निधिप, गमग; गमपनिसा, निधिप, गमग।” परन्तु इसके बाद तुरंत “सागमप, धप, साप, ग, ग, रेमग, रेसानि, धप, धं, निसा” इस स्वर समुदाय द्वारा राग का आविर्भाव होता है।

भीमपलासी की छाया—“मग्, प ग् म ग् रेसा; निधप मग्” इन स्वर समुदायों में भीमपलासी की छाया दिखती है, परंतु ऐसे स्वर समुदाय अधिक देर तक न गाते हुए इनके बाद “मग् रेसानि, पंनिसाग्, निसा, ध्, मं पं नि, सा” इन स्वर समुदाय द्वारा पीलू प्रकट होता है।

भैरवी की छाया—भैरवी की छाया “ग्, मग्; पमग्; धूपमग्; नीधूप, मग्, रेग्, सारेसा” इन स्वर समुदायों में आती है किन्तु बाद में “सा रे सानि, ध्, मं पं, निसा, ग्, निसा।”

तिलंग की छाया—“नि सा ग म प, ग म प, म ग; ग म, सा ग म प, म ग, ग म प नि सा” इन स्वर समुदायों में राग तिलंग की छाया पीलू में दिखती है। फिर पीलू का आविर्भाव “नि धूप, ग म ग, ग म प, ग्, रे सा नि, सा।”

काफी की छाया—ठुमरी गाते समय पीलू में कुछ स्वर समुदायों का उपयोग काफी की छाया उत्पन्न करता है :—“म प नि सा, नी ध प” “म प, ग म ग्, रे सा रे नि सा।” किन्तु बाद में पीलू के विशेष स्वर समुदाय “नि ध् पं, मं पं नि सा, ग्, नि सा” द्वारा पीलू का आविर्भाव होता है।

(२) राग भैरवी

राग भैरवी में निम्नलिखित रागों की छाया आती है :—

सां सां

मालकंस की छाया—“ग् म, ध् नी सां, नी ध्” “नी, नी

नी सां ध्; नी ध् म ग्” इन स्वर समुदायों में मालकंस का आभास उत्पन्न होता है किन्तु इन स्वर समुदायों के बाद पंचम स्वर का स्पष्ट प्रयोग

नौ

करके अथवा “ न् ध् म ग्, रे ग्, सा रे सा, नीं ध् सा” इस प्रकार भैरवी को फिर से प्रकट करते हैं ।

भीमपलासी की छाया— भीमपलासी की छाया भैरवी के निम्नलिखित स्वर समुदायों में आती है :—“नीं सा ग् म प, प म, ग् म ग् प म, सा ग् म प ग् म प म ।” किन्तु इसके बाद भैरवी का आविर्भाव “ ग्, रे ग्, सा रे सा, ध्, नि सा रे ग्, रे, सा” इन स्वर समुदायों द्वारा होगा ।

म

आसावरी की छाया— सा रे म प, ध् प ग्, ” “म प नीं

म

ध् प, म प ग् ” “नीं ध् प, म प ध् प म प ग् ” इन स्वर समुदायों में भैरवी में आसावरी की छाया आती है । इसके बाद “रे ग्, सा

रे म ग्, सा रे सा, ^{नीं,} ध्, नीं सा रे सा” इन स्वरों को गाने से भैरवी का रूप फिर से उपस्थित हो जाता है ।

संगीत राग-दर्शन

राग अल्हैया बिलावल

यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। इसमें दोनों निषाद का प्रयोग होता है और शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। शुद्ध निषाद का प्रयोग आरोह अवरोह दोनों में होता है, पर कोमल निषाद का प्रयोग अवरोह में धैवत के साथ होता है—‘धन्धिप’। इस राग की जाति पाडव-संपूर्ण मानी जाती है। आरोह में मध्यम वर्ज्य होता है। बहुधा आरोह में निषाद और अवरोह में गंधार वक्र होता है। वादी स्वर धैवत और संवादी गंधार। गाने का समय प्रातः काल का प्रथम प्रहर। शुद्ध बिलावल में सब स्वर शुद्ध लगते हैं। कोमल निषाद के प्रयोग से ही अल्हैया बिलावल होता है। प्रचार में अल्हैया बिलावल ही अधिक गाया जाता है।

आरोह :— सा, गरेगप, ध नि सा।
अवरोह :— सा नि ध प, धन्धिप, म ग म रे, सा।
पकड़ :— म ग म रे, गप, ध, नि सा।

आलाप

- (१) सा, साग, मरे, गप, मगमरे, ग, निसा।
- (२) साग, गरे, गप; गपमग, मरे गपध, धन्धिप; पध; पमग, मरे, ग, निसा; सा, निधनिंसा।

- (३) गप, गपध, धप; मगमरे, गपधनि सां; सांनिधनिसां;
सां, धन्धिप; पध, पधनि, धप; गपधनि धप; मगमरे,
गप; मगमरे, गनिसा ।
- (४) पपधनिसां; सां; निधनिसां; सारें, सां; सां, गरें, गं; नि
सां; सांनिधन्धिप, गप, निध, निसां; निधन्धिप; गपधप,
मगमरे; गप, मगमरे ग, निसा ।
- (५) गरे, गप, ध, निसां; सारेंसां, सांगं, गंमरें, गंपं, मंगंमरें,
गनिसां; सारेंनिसां, धन्धिप; गपधनिसांनिधन्धिप;
धप, मगमरे, सा, ग, प, धनिसां; धन्धिप, मगमरे, ग,
निसा ।

ताने

- (१) सागरेगपपमगरेसा, गपधन्धिपमगरेसा, गपधनि
सांनिधप धन्धिप मगरेसा ।
- (२) गगरेग पप मगरे सा, धध पधन्धिपमगरेसा, निनिधनि
सारें सांनि धप मगरेसा ।
- (३) सांनिधप मगरेसा, सारेंसां निधपमगरेसा, गरेंसांनिधप
धन्धिप मगरेसा ।
- (४) सारेगपमगरेग पधन्धिपमगरे, गपधनिसारेंसांनिध
निसां गरेंसांनिधपमगरेसा ।
- (५) गपपगपपमगरेसा, धनिनिधनिनिधप मगरेसा, सां रें
रें सां रें रें सांनिधपमगरेसा, मंपंपंगंपंपमंगरेंसां निध-
पमगरेसा ।
- (६) पमगरे गपमगरेसा, धन्धिपमग रेगपमगरेसा, सारें-
सांनिधप धन्धिपमग रेगपमगरेसा, मंगरेंगंपमंगरें
सांनिधपमगरेसा ।

- (७) गपधनिसा, सानिधपमग रेगपधनिसा, सारें सानिधप मगरेग पधनि सा, सासांगरेंसानिधप धनिसानिधप मग रेगपधनिसा, गरेंसानिधपमगरेसा ।

राग अल्हैया बिलावल-तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

सा S ग S	प S ध नि	सा नि ध प	म ग म रे
+	१३	१	५
ग प म ग	म रे ग प	ध नि ध प	म ग रे सा
+	१३	१	५

अंतरा

प प ध नि	सा S सा सा	ध नि सा रें	सा नि ध प
+	१३	१	५
ग रें सा नि	ध नि रें सा	ध नि ध प	म ग रे सा
+	१३	१	५

राग अल्हैया बिलावल-तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

कहत बिलावल भेद अल्हैया । प्रात समय गुनि गावत जेहि को । ध-ग सम्वाद करैया ॥ संपूरन सुध सुर लेवैया । आरोहन मध्यम तज दैया संग धैवत मृदु नी बिचरैया । गप धनि सानि धप धनि धप मग मरे सुर लेवैया ॥

स्थायी

सा नि ध प	म ग म रे	ग प म ग	म रे सा S
क ह त वि	ला व ल	भे द अ	ल्है या
+	१३	१	५

ग ऽ ग रे	ग प प ध	प ध नि ध प	ध प म ग म रे
प्रा त स	म य गु नि	गा व त	जे हि को
+	१३	१	५
ग ग ग रे	ग प ध नि	ध नि रे सा	सानि ध प म ग म रे
ध ग सं	वा द क	रे	या
+	१३	१	५

अंतरा

ग ऽ ग रे	ग प ध नि	सा सा सा ऽ	सा रे सा ऽ
सं म्पू	र न सु ध	सु र ले	वै या
१	५	+	१३
ध ऽ ध ऽ	नि सा सा ऽ	सा रे सा नि	ध नि ध प
आ रो	ह न म	ध्य म त ज	दै या
१	५	+	१३
प ध प ध नी	ध प म ग	ग प म ग	म रे सा ऽ
सं ग धै	व त मृ दु	नी बि च	रै या
१	५	+	१३
ग प ध नि	सा नि ध प	ध नि ध प	म ग म रे
ग प ध नि	सा नि ध प	ध नि ध प	म ग म रे
१	५	+	१३
ग प म ग	म रे सा ऽ		
सु र ले	वै या		
१	५		

राग अल्हैया बिलावल-तिलवाडा (विलंबित ख्याल)

दैया कहाँ गयेलो बृज के वसैया ॥

ना मोरे पंख न पायल और बल, ना कोउ सुध को लेवैया ॥

(५)

स्थायी

ध प ग ऽ म	ग ऽ ऽ रे	सा ऽ ऽ ऽ	सा	ग म रे ऽ ग म प
० ०	० ०	०	०	० ० ० ० ०
दै या . . क	हां . . .		ग	ये
१३	१	५		+

प ऽ प सां नि	सां ऽ ऽ ऽ	सां ध नि ध प ऽ	ध ग ऽ म रे ग ः
० ०	० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ० ० ० ०
लो वृ ज के	व . . .	सै . . या . .	
१३	१	५	+

अंतरा

प ध नि सां ऽ सां	सां ऽ ऽ	सां रे गं ऽ म रे गं रे सां	ध नि ध प ध प ध
० ० ०	० ० ०	० ० ० ० ०	० ० ० ० ० ० ० ०
ना मो रे पं .	ख ना . .	पा य ल . .	औ र व ल . . . ना . .
१३	१	५	+

नी ध प म ग म रे ऽ ग प ध नि	सां ऽ ऽ	सां ध नि ध प ऽ	ध ग ऽ म रे ग ऽ
० ० ० ० ० ० ० ०	० ०	० ० ० ०	० ० ० ० ० ० ०
. को . ड सु ध को ले . . .	वै . . या . .		
१३	१	५	+

राग अल्हैया बिलावल-भूपताल

प्रवल ही श्याम अब दुर्बल ही देख जन भटहि पट भूपट कर
गज वचायो ॥ गोपही ग्वाल को राख लियो गिरिधर इन्द्र को मान
छिन में घटायो ॥ नरहरी रूपधर वरहि सब परिहरो दास प्रह्लाद
पर यों नमायो ॥ चक्रधर दास हरि प्रेम के वश भये गोपिधर
चोर के दूध पायो ॥

(६)

स्थायी

ध ध	रें सां ऽ	ध नि	प म ग
प्र व	ल ही .	श्या .	म अ व
१	३	+	द
रें ग	प म ग	रें ऽ	सा सा सा
दु .	व ल ही	दे .	ख ज न
१	३	+	द
सा सा	ध ध ध	नी प	ध नि सा
क ट	हि प ट	क प	ट क र
१	३	+	द
गं गं	रें सां ऽ	प ऽ	ध नि सा
ग ज	व चा .	यो .	. . .
१	३	+	द

अंतरा

प ऽ	प ध नि	सां ऽ	सां सां ऽ
गो .	प ही .	ग्वो .	ल को .
१	३	+	द
सां ऽ	गं गं मं	गं रें	ध नि प
रा .	ख लियो	गि रि	ध . र
१	३	+	द
प ऽ	ध ग प	ध नि	सां सां सां
इ .	न्द्र को .	मा .	न छि न
१	३	+	द
गं ऽ	रें सां ऽ	प ऽ	ध नि सा
में .	घ टा .	यो .	. . .
१	३	+	द

राग अल्हैया त्रिलावल-चार ताल

तूँहि आद नाद ब्रह्म विष्णु तूँहि महादेव तूँहि गुरु तूँहि चेला ।
तूँहि खड़ग तूँहि कपर्द तूँहि आवला कर तूँहि आकर अकेला ॥

स्थायी

सां S	सां ध	नी प	ध नि	ध प	म प
आ .	द ना	. द	त्र .	म्ह वि	. ष्णु
१	+	५	+	९	११
ग म	रे ग	म प	म ग	रे सा	रे सा
तूँ .	. ही	. म	हा .	. दे	. व
१	+	५	+	९	११
सा S	S ग	प प	प S	S ध	नि रे
तूँ .	. ही	. गु	रू .	. तूँ	. ही
१	+	५	+	९	११
सां S	ध नि प	नि ध	प म	रे ग प S ध नि	
चे .	० ०	. ला	. .	० ० तूँ ० ०	ही .
१	+	५	+	९	११

अंतरा

ग प	प नि ध	सां सां	सां S	सां रे	सां सां
तूँ .	हि ख .	. ड्ग	तूँ .	हि क	प र्द
१	+	५	+	९	११
सां ग रे	ग म	ग रे ग रे	सां रे	सां S	S ध
० ०	हि .	० ० ० ०	व .	ला .	. क
तूँ .	+	५	+	९	११

नि ध	प ऽ	ग प	ध ऽ	नि प	प ऽ
र	.	तुं ही	आ .	क	र .
१	+	५	+	९	११
ध नि	रें सां	ध नि प नि	ध प म	रे ग प	ध नि
अ .	के	...	ला .	तू	ही .
१	+	५	+	९	११

राग अल्हैया बिलावल—तीनताल (मध्यलय)

सुमीरन कर मन राम नाम को, जो कुछ होवे भला होवे वंदे ।
एक दिन वो घर जाना होगा, सोच समझ कर रहना वंदे ॥

स्थायी

ध नि ध प	म ग रे ग प म	ग ऽ रे सा रे ग	म प म ग रे ग
सु मी र न	क . र . म न	रा . म . ना .	म की .
+	१३	१	५
ग ऽ म रे	ग प नि ध नि	सां सां ऽ ध नि	सां रें नि सां ध प म ग
जो . कुछ हो . वै . .	भ ला . हो . . .	वै . वं . दे .	
+	१३	१	५

अंतरा

ग प प प	प नि ध नि नि	सां ऽ सां ऽ ध नि	सां रें नि सां
ए क दिन वो . .	घ र	जा . ना . हो . . .	गा .
+	१३	१	५
सां गं रें मं	गं रें सां सां	ध नि ध प	प ध नि ध प म ग
सो . च स	म भ क र	र ह ना .	वं . . . दे . .
+	१३	१	५

राग अल्हैया विलावल-तीनताल (मध्यलय)

नयना बसी मोरी साँवरी, तोरी शाम मूरत सुखमा भरी, नहि देखुं औरन को श्रीहरी ॥ मोर मुगुट पीतांबर सोहे, कानन कुंडल जन मन मोहे, प्रीत करत नित हम तुम पर सखी री ॥

—व्यासकृति

स्थायी

गप ध नि सां नि | सां s s नि ध प ध नि सां नि ध प म ग रे नी
 नय ना . . व | सी . . मो रे सां . . व . री . . तो
 १३ १ ५ +

ध प म | ग म रे ग प ग म रे सा ग ग ग म रे | ग प प
 री शाम | मूरत सुखमा भरी नही दे खुं | और न
 १३ १ ५ + १३ १

ध नि सां रे सां नि ध प म ग ||
 को श्री ह री ||
 ५ +

अंतरा

ग म रे ग प नि ध | सां सां सां नी ध नी सां ध नी ध नी सां सां सां |
 मोर मुगुट पी | तां व र सो हे का न न कुंडल |
 + १३ १ ५ + १३

सां रे नि सां ध नि ध प ग म रे ग प ध नि | सां सां ग रे सां नि ध प
 जन मन मो हे प्रीत करत नित हम तुम पर सखी
 १ ५ + १३ १ ५

सां नि ध प म म ||
 री ||
 +

राग-विहाग

विहाग को प्रचार में विलावल थाट का मानते हैं। इसको अधिकतर दो मध्यम और अन्य स्वर शुद्ध लगाकर गाया जाता है। कुछ गुणीजन विहाग सब शुद्ध स्वरों से भी गाते हैं। तीव्र मध्यम का प्रयोग पहले तो विवादी के नाते से आरंभ हुआ है, परंतु अब वह राग का एक आवश्यक अंग बन गया है। और इसीलिये कुछ लोग इसे कल्याण थाट का मानने लगे हैं। आरोह में रिषभ और धैवत स्वर वर्जित है। अवरोह संपूर्ण है। जाति ओडव-संपूर्ण। अवरोह में भी ऋषभ और धैवत का प्रमाण अल्प है। तीव्र मध्यम का प्रयोग विशिष्ट प्रकार से होता है, जैसे—‘प, मृग, मग;’ ‘धप मृग, मग’। शुद्ध मध्यम का प्रयोग आरोहावरोह में है। वादी स्वर गंधार और संवादी निषाद है। आरोह निषाद से आरंभ करते हैं, जैसे :—‘नि साग, मग’। गाने का समय रात का दूसरा प्रहर है।

आरोहः—नि साग म प नि सां।

अवरोहः—सानिधपमृप गमग, रे नि सा।

पकड़ः—प, मृप, गमग, रे नि सा।

आलाप

(१) सा, नि सा, ग, रे नि सा, सा ग, म ग, नि सा मग, प म् ग म ग, रे नि सा।

- (२) निं सा, निं सा ग, म ग, प म् ग म ग, सा ग प म् ग म
ग, ध प म् प ग म ग, ग प म् ग म ग, सा ग प ध ग म
ग, रे निं सा, निं, पं निं सा ।
- (३) सा म ग प, प, ध म् प, ग म ग, ध प म् ग म ग, नि,
प ध म् प म् ग म ग, निं सा ग म प म् ग म ग, ग म प
नि, ध प म् प, ग म ग, प, ग म ग, म ग, रे निं सा,
निं, पं निं सा ।
- (४) पं निं सा ग, म ग, सा ग, प, ध प, ग म प नि, नि,
ध प, प नि, सां नि, ध म् प, नि, ध म् प, ग म ग,
निं सा ग म ध प ग म ग, प, ग म ग, ग, निं सा,
पं निं सा ।
- (५) निं सा ग म प नि, ध म् प, प सां नि सां, सां रें नि
सां, नि, ध म् प, ग म प नि सां, नि सां, नि, ध म् प
प नि सां रें नि सां, नि, ध म् प, सां, नि, ध म् प,
प, म्, म्, म्, ग म ग, सा म ग प ध, ग म ग, रे निं सा ।
- (६) ग म प नि सां, सां नि, प नि सां, सां, रें सां, सां गं, रें
नि सां, नि सां गं, मं गं, रें नि सां, नि सां रें नि सां, नि,
नि, नि, ध म् प, प नि, प ध म् प, ग म ग, नि सां नि,
गं मं गं, नि सां नि, प, ग म ग, सा ग प ध ग म ग,
रे निं सा ।
- (७) ग म प नि सां गं, रें नि सां, सां गं, सां गं मं गं, सां गं
पं म् गं मं गं, गं पं म् गं मं गं, मं गं, रें नि सां, सां नि,
ध म् प, ग म प सां नि, ध म् प, नि ध म् प, ध म् प,
प म् ग म ग, सा म ग प, प नि, सां, ग म ग, रे निं सा,
निं, पं निं सा ।

- [illegible]

नि सां रें नि सां गं मं गं रें सां नि ध प म् प ग म ग रे
सा, नि सा ग म प ध ग म प नि सां रें नि सां गं मं पं मं
गं रें सां नि ध प म् प ग म ग रे सा ।

(५) ग म ग रे सा, प ध म् प ग म ग म ग रे सा, नि नि ध प प
ध म् प ग म ग रे सा, सां रें सां नि प ध म् प ग म ग रे
सा, गं गं रें सां सां रें सां नि प ध म् प ग म ग रे सा, गं
पं मं गं सां रें सां नि प ध म् प ग म ग रे सा ।

(६) ग म म ग म म ग म म ग रे सा, म प प म प प म प प
म ग रे सा, प नि नि प नि नि प नि नि ध प म ग रे सा,
नि सां सां नि सां सां नि सां सां नि ध प म ग रे सा, सां
रें रें सां रें रें सां रें रें सां नि ध प म ग रे सा, सां गं गं
सां गं गं सां गं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, गं मं मं गं मं मं
गं मं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, मं पं पं मं पं पं
मं पं पं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा ।

(७) नि सा ग म प नि सां नि ध प म ग रे सा, नि सा ग म प
ग म प नि सां रें सां नि ध प म ग रे सा, सां गं रें सां नि
ध प म ग रे सा, नि सा ग म ग सा ग म प नि ध प प नि
सां गं रें सां सां गं मं पं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, म
म ग म ग रे सा, प प म प प म प प म ग रे सा, नि नि
ध नि ध प म ग रे सा, सां सां नि सां सां नि सां सां नि ध
प म ग रे सा, गं गं रें गं रें सां नि ध प म ग रे सा, मं मं
गं मं मं गं मं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, नि सा ग
म प ग म प नि सां प नि सां गं मं सां गं मं पं मं गं रें सां
नि ध प म ग रे सा ।

राग-विहाग-तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

नि	सा	ग	म	प	मू	ग	म		ग	५	म	ग	रे	नि	सा
+				१३					१			५			
प	नि	सा	ग	रे	सा	नि	सा		प	मू	ग	म	ग	रे	सा
+				१३					१			५			

अंतरा

ग	म	प	नि	सा	नि	सा		प	नि	सा	ग	रे	नि	सा	
+				१३				१			५				
सा	रे	सा	नि	ध	प	मू	प		ग	म	प	म	ग	रे	सा
+				१३				१			५				

राग विहाग-तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

गावत मधुर विहाग राग गुनि, द्वितीय प्रहर निस ।
 सुध सुर मेल जनित मध्यम मृदु तीवर अरु सो ॥
 आरोहण में रि-ध न लगावत, संपूरन प्रतिलोम कहावत ।
 ग- नि वादी संवादी संमत उलट पुलट सुर संगत साधत ।
 औडव षाडव अरु संपूरन भेद बतावत ॥

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

सा	ग	म	प	प	नि	नि		सा	रे	नि	सा	नि	ध	नि	सा	नि	ध	मू	प	ग	म	ग	रे	
								०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
गा	व	त	म	धुर	वि	हा		हा					ग	रा				ग	गु	नि	द्वि	ति	य	प्र
+				१३				१									५				+			

ग० म० नि० ध० म० प० ग० म० ग० रे० नि० सा० सा० नि० प० प० नि० सा० सा० सा० सा० ॥
ह० र० नि० स० सु० ध० सु० र० मे० ल० ज० नि० त० म० ध्य० म० मृ० दु० ॥
१३ १ ५ + १३

ग म प ध ग म ग रे सा रे नि सा ॥
ती व र अ रु सो ॥
१ ५

अंतरा

गम गम पप निथ नि सां सां सां सां रे सां सां नि नि नि सां ध नि
आ रो ह न मे रि ध न ल गा व त स म्पू र न प्र ति
१ ५ १३ १ ५

ध नि सा नि सा नि ध नि मू० | ग नि ध मू० ग म ग रे ग म प ध
लो . म क हा . व त | ग नि वा . दी . सं . वा . . .
+ १३ १ ५ +
ग म ग रे नि सा नि पं नि नि सा सा ग रे ग म प ध ग म ग रे नि सा
दी स . म्म त उ ल ट पु ल ट सु र सं . . . ग त सा . ध त
१३ १ ५ + १३

सा म ग प प प नि ध नि सा नि ध नि म प । ग म प ध
 औ ड व षा ड व अ रु सं . पू . र न । भै . . .
 १ ५ १३ १
 ग म ग रे नि सा ॥
 द व ता . व त ॥
 ५

राग बिहाग—धमार ताल

जय राम रूप अनूप निर्गुण सगुण गुण प्रेरक वही ।
दश शीश बाहु प्रचंड खंडन चाप शर मंडन मही ॥

पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं ।
नित नौमि राम कृपालु बाहु विशाल भव भय मोचनं ॥

स्थायी

ग	म		ग	नि	सा	सा	५	रे	सा	नि	५	पं	नि
ज	य		रा	.	म	रु	.	प	अ	नू	.	प	नि
			१					६		+			११
सा	सा	सा		नि	सा	सा	ग	ग	ग	प	प	नि	
र	गु	ण		स	गु	ण	गु	ण	प्रे	.	र	क	
				१					६		+		
ध	ध												
प	म	५	ग	म		प	नि	नि	सा	५	सा	सा	नि
व	ही	.	द	श		शी	.	श	वा	.	हु	प्र	चं
	११					१					६		+
प	ध	म	प	म	ग		ग	५	ग	ग	म	नि	ध
ड	०	०	.	ड	न		चा	.	प	श	.	र	०
	११						१						६
प	प	म	ग	रे	नि	सा							
.	ड	न	म	ही	.	.							
	+			११									

अन्तरा

ग	म		प	नि	नि	सा	५	सा	सा	सा	५	सा	सा	२
पा	.		थो	.	द	गा	.	त	स	रो	.	ज	मु	
			१					६		+			११	

(१७)

नि	ग	म		प	नि	नि	सां	॥	गं	मं	गं	नि	सां	
ख	रा	.		जी	.	व	आ	.	य	त	लो	.	च	
				१					६		+			
नि	॥	सां	पं	मं		गं	नि	सां	सां	॥	रे	सां		
नं	.	नि	त	.		नौ	.	मि	रा	.	म	क		
११						१					६			
नि	म	प	ध	म	प	ग	म		ग	॥	ग	ग	म	नि
पा	.	लु	वा	.	.	हु	वि		शा	.	ल	भ	.	व
+			११						१					
ध	म	प	ग	म	ग	रे	नि	सा	॥					
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०					
भ	.	य	मो	.	च	नं	.	.	.					
६			+			११								

राग विहाग-भूपताल

सखी आज नंद नंद सुख कंद मुखचंद
हसत आनंद सो मची होरी ॥
एक संग ग्वालन श्याम सो बात कर
ऋत वृज नार मिल राधा गोरी ॥

स्थायी

प	नि		सां	॥	सां	नि	ध	नि	ध	म	प	प	ध	प	
स	खी		आ	.	ज	नं	.	द	नं	.	.	द	सु	ख	
			१		३				+			८			
ग	॥	म	प	म	ग	॥	रे	नि	सा	सा		नि	सा	प	
कं	.	द	मु	ख	चं	.	०	०	.	द		ह	स	त	
१		३		+	८							१		३	

(१८)

प ऽ ध म प म ग ऽ ग ग म प ध ग म
आ . नं . द सो . म ची . ३ . . .
+ द १ ३

ग सा ग म
हो . री .
+ द

अन्तरा

प ऽ प नि नि सा ऽ सा सा ऽ सा ऽ सा
ए . क सं ग ग्वा . ल न . श्या . म
१ ३ + द १ ३

रे नि सा नि ध म प प सा नि सा ग म
सो . वा . . . त क र ऋ त .
+ द १ ३

प म ग रे नि सा सा रे सा नि ऽ ध म प ऽ
वृ ज ना . . . र मि ल रा . धा . . .
+ द १ ३

म ग म
गो री .
+ द

राग बिहाग-विलम्बित तीनताल

खयाल

कैसे सुख सोवे नींदरिया, श्याम मूरत चित चढ़ी ॥
सोच सोच सदारंग अकुलाय, या विध गांठ परी ॥

(१९)

स्थायी

ग रे नि सा नि सा नि सा म | ग रे नि सा
 कै से . . . सु ख | सो . . .
 + १३ १
 सा स स सा स नि सा स सा रे नि सा नि स |
 वे . . नी . . द रि या .
 ५ + १३
 स स पं धं मं पं स स स सा म ग म म
 श्या म मू र त
 १ ५ + १३
 म ग रे ग म | प स नि ध नि ध म प
 ० ० ० ० चि | त च . ढि .
 . . . चि . . ढि .
 १ ५
 स म ग म ||

अन्तरा

प स सा सा स स नि सा स | सा स स स
 सो च सो . . . च . . .
 + १३ १
 सा नि सा नि ध नि नि सा रे नि सा नि
 स दा रं
 ५ +
 ध म प स म ग म प म | ग रे नि सा स सा
 ग अ कु ला . . . ये
 १३ १ ५

स स स सा म ग स ग म प सा | नि स
 . . . या वि ध . गा . ठ प | री .
 + १३ १
 ध म प स स म ग म ||

 ५

राग विहाग-तीनताल (मध्यलय)

सकल भुवन उसके गुण गावे ।
 जाके मुख पर तेज विराजे, जो सबके सुख में सुख पावे ॥
 सुन्दर यौवन रूप वृथा सब, जो न चरित अति दिव्य दिखावे ।
 प्रेम निकेतन सरल सचेतन, जन्म सफल कर सुयश कमावे ॥
 पं० रामनरेश त्रिपाठी

स्थायी

साम गम पप नि ध सा रें नि सां नि सां नि ध नि म प गम ग रे
 सक ल भु व न उ स के . . . गु ण गा . वे . जा . के .
 + १३ १ ५ +

ग म नि ध म प ग म ग रे नि सा सा नि पं नि नि सा ग रे
 मु ख पर ते ज वि रा जे जो स व के सु ख
 १३ १ ५ + १३

ग म प ध ग म ग रे ग नि सा ||
 . . . सु ख पा . वे . ||
 १ ५

अंतरा

ग म ग म प नि ध | नि सा सा सा सा रे सा नि नि सा
 सु न्द र यौ व न | रू . प वृ था स व जो न च
 + १३ १ ५ +

नि ध प | प नि नि ध नि सा नि नि सा रे सा नि ध प ध
 रि त अ ति | दि व्य दि खा . . वे प्रे . म नि के . त .
 १३ १ ५ + १३

म प | ग म प म ग रे सा रे नि सा s सा ग म प प नि नि |
 न . | सर ल स चे . त . न . . ज न्म स फ ल क र |
 १ ५ + १३

प नि सां गं गं रे सा नि ध प म ग ||
 सु य श क मा . . वे . . . ||
 १ ५

राग विहाग-तीनताल (मध्यलय)

जय रामचन्द्र कमला विहार । जय कौशलेश करुणावतार ॥
 रघुवंश कमल कानन दिनेश । कंदर्प कोटि कमनीय वेश ॥

स्थायी

सा नि सा म ग प s प नि ध | सा रे नि सा नि ध म प प ग म
 ज य रा . म चं . द्र क म | ला . . . वि हा . . र ज य
 + १३ १ ५

ग ग ग s म ग रे | ग म प ध म ग रे नि सा ||
 कौ श ले . श क रु | णा . . . व ता . . र ||
 + १३ १ ५

अंतरा

ग म प नि नि नि सा सा नि ध | नि सा सा सा s सा सा नि
 र धु वं . श क म ल का . | न न दि ने . श कं .
 + १३ १ ५
 सा मं ग सा रें नि सा नि प ध म प | ग प म ग रे नि सा सा ||
 द . प को . . . टि क . म . | नी . . य वे . . श ||
 + १३ १ ५

राग त्रिहाग-तीनताल (मध्यलय)

अपनो कवहूँ कर जानि हो । राम गरीब निवाज राज मनि ।
 विरुद लाज उरझानी हो ॥
 शील सिन्धु सुन्दर सब लायक । समरथ सदगुण खानी हो ।
 पाले हो पालक पुनि पालउ, प्रणत प्रेम पहिचान हो ॥

स्थायी

नि सा ग ग म प नि ध | सा रें नि सा s नि नि ध म प ग म
 अ प नो क व हूँ कर | जा . . . नि हो . . . रा .
 + १३ १ ५ +
 ग रे ग म प ध म प | ग म ग रे सा नि रे सा सा नि पं पं नि सा
 म गरी . व . नि . | वा . ज . रा . ज म नि वि र द ला .
 १३ १ ५ + १३
 सा ग म | ग म प ध ग म ग रे सा ||
 ज उ र | मा . . . नी हो . . ||
 १ ५

अंतरा

ग म प नि नि नि सा सा सा सा नि ध सा नि | ध म प ५
 शी ल सि . न्धू सुं द र स व ला . . य क . . .
 १ ५ + १३ १

ग म ग ग ग म प सा नि ध म प | सा नि सा ५ ५
 स म र थ स द गु णी खा . . . | . नी हो . . .
 ५ + १३ १ ५

नि सा ग रे सा नि | ध नि रे सा नि ध म प ग म ग ग
 पा ले हो . पा . ल क पु नि पा ल . हू प्र ण त प्रे
 + १३ १ ५ +

५ ग ग रे | ग म प ध ग म ग रे सा ||
 . म प हि | चा नी हो . . . ||
 १३ १ ५

राग कल्याण

यह कल्याण थाट का आश्रय राग है। इसमें मध्यम तीव्र लगता है और अन्य सब स्वर शुद्ध। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। वादी स्वर गंधार और संवादी निषाद है। इस राग के आरोह में पङ्क और पंचम को वर्ज्य करने का प्रचार है, जैसे:—‘निरेगम्प; म् धनिसा’। जब दो गंधारों के बीच शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है, तब इसे जैमिनी-कल्याण अथवा यमन कल्याण कहते हैं, जैसे:—‘प, म्, गमग, रेगरे, निरेसा’। गाने का समय रात का पहला प्रहर है।

आरोहः—निरेग म्धनिसा।

या, सा रे ग म् प ध नि सा।

अवरोहः—सानिधप म्गरेसा।

पकडः—निरेग, रे, पम्ग, रेग, निरे, सा।

आलाप

- (१) सा, निर्धनिरे, सा, निरेग, गरे, निरे, सा।
- (२) निरेग, ग, रे, म्ग, गम्प, म्ग, गरे, निरेगरे, निरे, सा।
- (३) निरेगम्प, प, म्ग, गम्प, म्ध, प, म्धनि, धप, धपम्ग, रेग निरेनिंग, निरेसा।
- (४) निरेगम्धनि, धप, म्धनिसा, सा, निध, निरे, निरेगरेसा, सानिधपम्धनि, ध, म्ध, प, म्ग, गरे, म्ग, प, रे, सा।

- (५) गग म्ध, प, म्धनिसा, निरें, निरेंगं, गरें, मंगं, परेंगं, रें, निरें, सां, सांनिध, प, गम्ध, प, म्ग, रेगप, रेग, निरेनिग, रे, निरे, धनिरे, धनिसा ।

ताने

- (६) निरेगरेनिसा, निरेगम्पम्गरेसा, निरेगम्धनिधपम्गरेसा, निरेगम्धनिसांनिधपम्गरेसा ।
- (७) गम्पम्गरेसा, गम्पधपम्गरेगम्पम्गरेसा, गम्पधनिधपम्-
गम् पधनिसांनिधपम्गरेसा, ग म्पधनिसांनिधपम्गम्पधनि-
सारेंसांनिधपम्गरेसा ।
- (८) गगरेसा, म्ग्गरे, धधपम्, निनिधप, सांनिधपम्गरेसा, निरेगम्प, गम्पधनि म्धनिरेंगं, गरेंसांनिधपम्गरेसा ।
- (९) सांनिधनिसांनिधपम्गरेसा, सांनिधनिसारेंसानि धनिसांनि
धपम्गरेसा, निरेंगरेंसांनिधनिरेंसांनिधपम्गरेसा ।
- (१०) गगरेगगरेगगरेसासा, धधपधधपधधपम्, रेंसारेंरेंसारें
सानि, गगरेंगंगरेंगंगरेंसांनिधपम्गरेसा ।
- (११) निरेगम्पम्गरे, गम्पधपम्गरे, गम्पधनिधपम्गरे, गम्-
पधनिसांनिधपम्गरे, गम्पधनिरेंगरेंसांनिधपम्गरे, गम्धनि
रेंगंम्पंम्गरेसांनिधपम्गरेसा ।
- (१२) निरेगम्प, पम्गरेगम्प, म्धपम्गरेगम्प, म्धनिधपम्गरेग
म्प, म्धनिरेंसांनिधपम्गरेगम्प, म्धनिरेंगंम्पंम्गरेसांनिधप
म्गरेगम्प, म्धनिधपम्गरेगम्पम्गरेनिसा ।

राग कल्याण—तीन ताल (मध्यलय)

स्थायी

नि ध ऽ प म् प ग म् | प ऽ म् ऽ ग ऽ रे ऽ
+ १३ १ ५

(२६)

सा नि सा ग रे म ग रे | सा ग रे सा सा नि धं स
 + १३ १ ५
 सा रे स रे ग स प म् | ध प स म् ग म् प ध
 + १३ १ ५

अन्तरा

नि नि ध ध प म् ग रे
 १ ५
 ग प स ग ग प स ध | सा स स रे सा नि ध स
 + १३ १ ५
 ग रे सा नि ध स सा स | नि ध प म् ग रे सा स
 + १३ १ ५
 ग ग ग प प प ध नि | प स ध प म् ग रे सा
 + १३ १ ५
 सा सा रे रे ग ग म् म् | प ध प म् ग म् प ध ||
 + १३ १ ५

राग यमन कल्याण—तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

गावत गुनि शुभ कल्याण राग, निस प्रथम याम, सब तीवर
 सुर सों, लेत मधुर आलाप तान ॥ सुर ग नी वादी संवादी, शेष
 अनुवादी, सरल सम्पूरन रूप सुहाग वतावत, अरु कोमल मध्यम
 लव युत, मधुर करत जैमिनी भेद आन ॥

स्थायी

सा नि धं नि रे ग रे नि रे सा नि | ध नि धं पं ऽ पं नि धं
गा . . व त गु नि शु भ क . | ल्या . ण रा . ग नि स
+ १३ ? ५

सा सा सा सा नि रे सा नि | सा ऽ ग रे ग म् प म् ग म् ग रे
प्र थ म या . म स व | ती . व र सु र सो . ले . त म
+ १३ ? ५ +

ग रे नि रे | ग म् प म् रे ग रे ||
धु र आ . | ला . . प ता . न ||
१३ ? ५

अंतरा

प ग | प प ऽ प म् ध ध ऽ नि ध प ग ऽ नि म् प | ग म् ग रे
सु र | ग नी वा . दि सं . वा . दी शे . प अ नु | वा . दि स
? ५ + १३ ?

ग प म् ग रे ग रे सा सा नि ऽ रे ग रे | नि सा नि धं नि धं पं पं
र ल . सं . पू . र न रू . प सु . | हा . ग व ता . व त
५ + १३ ? ५

सा नि रे ऽ ग म् ग रे | ग म् प म् प प सा नि ध नि ध प
अ रु को . म ल म . | ध्य म ल व यु त म धु र क र त
+ १३ ? ५ +

प
सु प ग रे | ग म् प म् रे ग रे ||
जै मि नी | अ . . द आ . न ||
१३ ? ५

राग यमन कल्याण-चारताल

पारब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम परमानन्द, नन्द नन्दन
 आनन्दकन्द जसोदानन्द श्री गोविन्द ॥ दीनानाथ दुख भंजन
 पद्मनाभ मधुसूदन, वासुदेव वनवारी वृजपति यदुनन्द नन्दन ॥

स्थायी

प म	ग ग	रे ग	ध प म	ग म	ग रे
पा	र ब्र	म्ह	प र	मे	श्व र
१	+	५	+	९	११
ग म	प स	ध प म	ग म	ग रे ग	रे सा
पु रु	पो	त्त म	प र	मा न	न्द
१	+	५	+	९	११
नि	s धं	नि सा	सा सा	ग रे ग	s ग
न	न्द	न न्द	न आ	न न्द क	न्द
१	+	५	+	९	११
सा	नि ध	नि ध	प प	s म ग रे ग	
ज	शो दा	न	न्द श्री	गो वि	न्द
१	+	५	+	९	११

अन्तरा

ग म	ध सा	s सा	सा सा	सा सा	s सा	सा
दी ना	ना	थ दु	ख भं	ज न		
१	+	५	+	९	११	
नि	s ध	नि सा	सा सा	रे सा	नि ध	प
प	द्वा ना	भ म	धु सू	द न		
१	+	५	+	९	११	

अंतरा

नि
 ग ग म् ध सा ऽ नि सा ऽ | सा ऽ सा रे नि सा ऽ नि ध ऽ
 सु न री स खी . मै . का . . . क हूँ .
 ९ ११ १ + ५

सा सा नि ध नि ऽ ऽ ध प प ऽ ऽ प ऽ ग ऽ प ऽ रे ऽ ऽ | प प
 तो . . . से . . . उ . न . ही . के . . . जा .
 + ९ ११ १

नि रे
 ध नि नि प प ध नि सा ऽ ऽ ध प रे ऽ ग ऽ रे ऽ ध ऽ नि ऽ सा ||
 न त ढ ग
 + ५ + ९

राग-कल्याण-तीनताल (मध्यलय)

अंखिया रामरूप अनुरागी ।

श्याम वरन मन हरन माधुरी, मूरत अति प्रिय लागी ॥

सुन्दर वदन मदन शत शोभा, निरख निरख रस पागी ।

रत्नहरि पल टरत न टारी, परम प्रेम रंग रागी ॥

स्थायी

नि ध नि ध प म प ग म् | प प रे रे सा सा नि धं नि
 रा . . म रू . प अ नु | रा गी अं खि या श्या म व र
 + १३ १ ५ + १३
 रे ग ग | रे ग प रे ग रे सा नि रे ग रे ग म् ध प
 न म न | ह र न मा . धु री मू . र त अ ति प्रि य
 १ ५ + १३

म॒ ध॒ नि॒ सा॒ नि॒ ध॒ प॒ रे॒ रे॒ सा॒ ॥
 ला॒ गी॒ अँ॒ खि॒ या॒ ॥
 १ ५

अंतरा

प॒ ग॒ प॒ प॒ प॒ ध॒ प॒ प॒ सा॒ सा॒ सा॒ सा॒ सा॒ नि॒ रे॒ सा॒ नि॒ ध॒
 सु॒ . द॒ र॒ व॒ द॒ न॒ म॒ द॒ न॒ श॒ त॒ शो॒ . . भा॒ नि॒ र॒
 + १३ १ ५ +

नि॒ सा॒ नि॒ ध॒ म॒ प॒ म॒ ध॒ नि॒ सा॒ नि॒ ध॒ प॒ नि॒ रे॒ ग॒ रे॒
 ख॒ नि॒ र॒ ख॒ र॒ स॒ पा॒ गी॒ र॒ . त्न॒ ह॒
 १३ १ ५ +

सा॒ नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ प॒ रे॒ रे॒ ग॒ प॒ रे॒ सा॒ नि॒ रे॒ ग॒ म॒ ध॒ नि॒ म॒ प॒
 रि॒ . . . प॒ ल॒ ट॒ र॒ त॒ न॒ टा॒ री॒ प॒ र॒ म॒ प्रे॒ . म॒ रं॒ ग॒
 १३ १ ५ + १३

ग॒ म॒ प॒ ध॒ नि॒ ध॒ प॒ रे॒ रे॒ सा॒ ॥
 रा॒ गी॒ अँ॒ खि॒ या॒ ॥
 १ ५

राग यमन कल्याण—तीन ताल (मध्य)

अवगुण न कीजिये गुनि सन, का जाने गुन
 की सार औगुनी, गुनी जाने गुन की सार ॥
 बड़ी बेर समझे नहीं समझत, बेर बेर
 कौन कहे एक बेर कह दीन्ही, कौन कहे यह बार बार ॥

स्थायी

नि सा

अ व

रे ग प रे ग रे सा ऽ | ग रे ग ग प म ग म
 गु न न की जि थे . गु नि स न का . जा .
 + १३ १ ५

ग रे सा नि धं पं ऽ पं | ग ऽ ग ग ऽ रे नि रे
 ने . गु न की सा . र | औ . गु नी . गु नी .
 + १३ १ ५

ग रे ऽ सा नि रे ग रे | ग मू प ऽ रे ग रे |
 . जा . ने गु न की सा . रा
 + १३ १ ५

अंतरा

ग ग ऽ प ऽ प सा ध
 व डी . वे . र स म
 १ ५

सा ऽ सा सा सा रे सा सा | ध नि ध नि सा सा ध नि
 भे . न ही स म भ त | वे . र वे . र कौ .
 + १३ १ ५

ध प प म ग ऽ रे ग | ऽ रे नि सा रे ऽ सा ऽ
 न क हे . ए . क वे | . र क हे दी . न्ही .
 + १३ १ ५

धं नि धं नि सा ऽ नि रे | ग ऽ प रे ग रे ||
 कौ . न क हे . यह | बा . र बा . र ||
 + १३ १ ५

राग भूपाली

यह राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इसके आरोहावरोह में मध्यम और निषाद वर्ज्य हैं। इसलिए इसकी जाति ओडव-ओडव है। सब स्वर शुद्ध लगते हैं। गाने का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। वादी स्वर गंधार और संचादी धैवत है। विश्रांति स्थान षड्ज, गंधार और पंचम हैं। धैवत पर अधिक न्यास नहीं होना चाहिए। पूर्वाङ्गवादी राग होने से पूर्वाङ्ग में ही स्पष्ट होता है।

आरोहः—सा रे ग प ध सा।

अवरोहः—सा ध प ग रे सा।

पकड़ः—ग, रे, सा धं, पं धं सा रे ग, ध, प ग, रे, सा।

आलाप

- (१) सा, सा रे, सा रे ग, ग रे, सा रे, सा धं, पं धं सा।
- (२) सा रे ग, ग रे, ग प, ग रे, ग प ध, प ग, रे, ग प, ग रे, ग रे, सा रे ग, रे, सा रे सा धं, पं धं सा।
- (३) सा रे ग प, ग रे, ग प ध, ध प, प ग रे, ग प ध सा, सा, ध प, प ग, ध प, ग प, ग रे, ग रे सा धं, पं धं सा।
- (४) ग रे, ग प ध प, ग रे, ग प ध सा, सा रे, सा ध, प ध सा, ध प, प ध, प ग रे, प, ग रे, ग, रे, सा रे सा धं, पं धं, सा।
- (५) सा रे ग प ध सा, ध सा रे, सा रे, सा ध, प ध सा रे ग, ग

रें, सां रें सां ध, सां, ध प, ग प ध, प ध, प ग रे, सा रे ग प,
ग रे, सां धं, पं धं सा ।

जलद तानें

- (६) सा रे ग रे सा, सा रे ग प ग रे सा, सा रे ग प ध प ग रे
सा, सा रे ग प ध सां ध प ग रे सा ।
- (७) ग रे ग प ग रे सा, ग प ध प ग प ग रे सा, ध सां रें सां ध
सां ध प ग रे सा, सां रें ग रें सां रें सां ध प ग रे सा ।
- (८) ध प ग प ध प ग रे सा, सां ध प ध सां ध प ग रे सा, रें
सां ध सां रें सां ध प ग रे सा, ग रें सां रें ग रें सां ध प
ग रे सा ।
- (९) सा रे ग प ग रे, ग प ध सां ध प, ध सां रें ग रें सां, ध सां
रें सां ध प, ग प ध सां ध प, रे ग प ध प ग, सा रे ग प ग
रे, सा रे सा धं सा ।
- (१०) ग ग रे ग प प ग रे सा, ध ध प ध सां सां ध प ग रे सा,
रें रें सां रें ग रें सां ध प ग रे सा, ग ग रे रे, प प ग ग,
ध ध प प, सां सां ध ध, रें रें सां सां, ग ग रें रें, प प ग रें,
सां सां ध प ग रे सा ।
- (११) सारे ग रे, ग प ग रे, ग प ध प ग रे, ग प ध सां ध प ग रे, ग प ध सां रें
सां ध प ग रे, ग प ध सां रें रें सां ध प ग रे, ग प ध सां रें ग प ध ग रें
सां सां ध प ग रे सा ।

राग भूपाली—तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

ग	प	ग	रे	ग रे	सा रे		प	५	ग	५	ग	५	रे	रे
+				१३			१				५			

ग ऽ प प ध ऽ सां ऽ | सां ध प ग ध प ग रे ॥
 + १३ १ ५

अंतरा

ग ग ग प प प सां ध | सां ऽ सां सां सां रे सां सां
 + १३ १ ५

सारिं गरीं सारिं सां ध | प सां ध प ध प ग रे ॥
 + १३ १ ५

राग भूपाली-तीनताल

राग लक्षण

गावत सुन्दर मेल सुसंगत वरज म-नी भूपाली रुचिर सुर ।

मंगलमय कल्याण मेल युत ग-ध वादी संवादी सोहत ॥

प्रथम याम निस गेय सुसंमत पंचम तृतीय सुरन की संगत ।

उलट पुलट सुर की गुनि साधत रचना प्रभाव शाली सुसंगत ॥

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

ग प ध सां ध प ग रे सा रे | प ग ग रे ग प ध प
 गा . . . व त सु . न्द र | मे . ल सु सं . ग त
 + १३ १ ५

ग ग ग रे ग प प ग | ग प ध प प रे रे सा सा
 व र ज म नी . भु . | पा . . ली रु चि र सु रं
 + १३ १ ५

अंतरा

ग ५ ग ग प प सा ध | सा ५ सा सा ५ रे सा सा
 मं . ग ल म य क . | ल्या . ए मे . ल यु त
 + १३ १ ५

ध सा ध सा सा ५ रे ५ | सा रे ग रे सा ध ५ प प
 ग ध वा . दी . सं . | वा . . दी . सो . ह त
 + १३ १ ५

ध ग ग रे ५ सा ध ध | ध सा रे सा ध ५ प प
 प्र थ म या . म नि स | ने . य सु सं . म त
 + १३ १ ५

प ५ ग ग प प ध प | ग रे ग रे सा ५ सा सा
 पं . च म वृ ति य सु | र न की . सं . ग त
 + १३ १ ५

सा सा रे रे ग ग प प | ध ५ ध ध सा ध सा सा
 उ ल ट पु ल ट सुर | की . गु नी सा . ध त
 + १३ १ ५

ध प ग रे ग सा ५ रे | प ग ग रे ग प ध प ||
 र च ना . प्र भा . व | शा . ली सु सं . ग त ||
 + १३ १ ५

राग भूपाली-तीनताल (मध्यलय)

अयि भुवन मन मोहिनी ।

निर्मल सूर्य करोज्वल धारिनि । जनक जननी जननी ॥

नील सिन्धुजल धौत चरण तल । अनिल विकम्पित श्यामल अंचल

अम्बर चुम्बित भाल हिमाचल । शुभ्र तुषार किरिटिनि ॥

प्रथम प्रभात उदित तव गगने । प्रथम साम रव तव तपोवने ॥
 प्रथम प्रचारित तव वन भवने । ज्ञान धर्म कत काव्य काहिनी ॥
 चिर कल्याण मयी तुमि धन्य । देश विदेशे वितरिछ अन्न ॥
 जान्हवी जमुना विगलित करुना । पुण्य पीयूष स्तन्य वाहिनी ॥

स्थायी

' ' सां सां

. . अ थी

५

ध प ग ग	रे सा s रे	प s ग s	रे ग s s
मु व न म	न मो . हि	नी . . .	
+	१३	१	५

ग s प प	प s प प	ध s प प	रे s सा सा
नि . र्म ल	सू . र्य क	रो . ज्व ल	धा . रि नी
+	१३	१	५

ग ग ग रे	ग प ध ध	प ध सां सां	ध प ॥ सां सां
ज न क ज	न नि ज न	नी . . .	. . ॥ अ थि
+	१३	१	५

अन्तरा

ग s ग प	s प सां ध	सां s सां सां	सां रें सां सां
नी . ल सि	. न्धु ज ल	धौ . त च	र ण त ल
+	१३	१	५

ध सां ध सां	सां s रें रें	सारें ग रें सां	ध s प प
अ नि ल वि	क . म्पि त	श्या . . म ल	अं . च ल
+	१३	१	५

ग <u>५</u> रें सा	रें <u>५</u> सा ध	सा <u>५</u> ध प	ध <u>५</u> प ग
अ . स्वर	चु . म्वित	भा . ल हि	मा . च ल
+	१३	१	५
ग <u>५</u> ग रे	ग प ध सा	प ध सारें ग रें सा ध प	सा सा
शु . अ तु	पा . र कि	रि टि नी .	अ यी
+	१३	१	५

राग भूपाली-तेवराताल

ध्रुपद

अपनो निज पद देत बली को,
दान मांगत वाल हो को ।
बहु कपट जब समझ कवी को,
मांगे सो मत दे तोय लहि रख बाको ॥
भूव तीन पद की मांगे वामन
हँस के नृप बोले और ले धन
भयो त्रिविक्रम कियो पद क्रम,
एक मही पर बीजे को अम्बर ।
वैजु के प्रभु तीजे को शिर पर ॥

स्थायी

ध सा ध प	ग ग प	सा रे ग सा रे सा <u>५</u>
अ प नो नि	ज प द	दे . त व ली को .
१	४	१ ४ ६

ग <u>५</u> ग प <u>५</u> प प	ध <u>५</u> प रे <u>५</u> सा <u>५</u>
दा . . न मां . ग त	वा . ल हो . को .
१	४ ६ १ ४ ६

ग प ध सा सा सा रे | ग ग रे सा रे सा s |
 व टु क प ट ज व | स म मे क वी को . |
 १ ४ ६ १ ४ ६

ध रे रे रे ध सा प | सा ध प ग रे सा सा ||
 मां गे सो म त दे तो | य ल हि र ख वा को ||
 १ ४ ६ १ ४ ६

अन्तरा

ध सा ध प ग ग प | सा रे ग सा रे सा सा |
 भू व ती न प द की | मां . गे वा . म न |
 १ ४ ६ १ ४ ६

ध रे रे रे ध सा सा | प सा ध प रे s सा सा |
 हं स के नू प बो ले | औ . र . ले . ध न |
 १ ४ ६ १ ४ ६

रे सा रे ध s सा सा | प प ध ग s प प |
 म यो त्रि वि . क म | कि यो प द . क म |
 १ ४ ६ १ ४ ६

ग प ध सा सा सा रे | ग ग रे सा रे सा सा |
 ए . क म ही प र | वी जे को अ . म्ब र |
 १ ४ ६ १ ४ ६

ध s रे ध s सा सा | प सा ध प ग रे सा ||
 वै . जु के . प्र . मु | ती जे को शि र प र ||
 १ ४ ६ १ ४ ६

राग भूपाली-तिलवाडा (त्रि० ख्याल)

ख्याल

सूधे दोलत ना रूप की गरूर ।

कर रही मान मान न प्यारी कीन्हे जतन करोर ॥

स्थायी

सां.	ध	ध	रे		सा		ग
ध सां s प ग प		ग s रे s सा s धं सा s रेग s					
० ० ० ०		० ० ० ०		० ०	० ०	० ०	० ०
सू . . धे . .		बो . . . ल .		त . .	ना . .		
१३		१		५			

ग		सां
ध s प ध पप s ग रे ग प s		ध सां s सां सारें s सारें सां सां s
० ० ० ० ० ०		० ० ० ० ० ०
रू . प की . .		ग रू
+		१३ १ ५

	सां	ध	ध
ध प पध s गप ध सां s प गप			
० ० ० ० ० ०		० ० ० ०	
र सू . . धे . .			
+		१३	

अन्तरा

	ध	ध
सां ध सां सां s सां		सां s सां सां s सां रें रें s सां
० ० ० ०		० ० ० ०
क र र ही . .		मा . . न . मा . न . न
१३		१ ५

	प		सां
सारें सांसां s ध प प सां s ध प ग रे s ग प ध		ध सां s	
० ० ० ० ० ० ० ० ० ०		० ० ० ०	
प्या री . की . . न्हें ज त न		क . . .	
+		१३ १	

ध सा सां ध ध
 सां सां रें ऽ सारें सांसां ऽ ध प पध ऽ गप ध सां ऽ प ग प
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 रो र सू . . धे . .
 ५ + १३

राग भूपाली—तीनताल (मध्यलय)

जबसे तुमीसन लागरी प्रीत नवेलरी प्यारे बल्मा मोरे ॥
 जोनन देखो तोहे कल न पावे मोहे चरचा करे सब सहेलरी ॥

स्थायी

गरे गरे सारे साधं | सा ऽ सारे ऽ रे ग ऽ ग प ग |
 जब से तुमीसन ला . . . ग री . प्रीतन
 + १३ १ ५ + १३
 प ध प प ग रे सा ' ग प ध सां | प ध सां सां ध प ||
 वे . . . ल . री प्यारे व . ल्मा . . मो रे ||
 १ ५ + १३ १ ५

अंतरा

' ' प ऽ सां ध सांसां ऽ ऽ ध | सां ऽ ध ध सांसांसां रें ऽ सारें सां ध |
 . . जो . न न देखो . . तो हे . कल नपा . . वे . मो हे |
 १ ५ + १३ १ ५ + १३
 प ऽ ध सां ध प ग रे ऽ ग प ध सां | धरें सांसां ध प ||
 . . च . र्चा क . . रे सब स हे . . लरी ||
 १ ५ + १३ १ ५

राग हमीर

यह कल्याण थाट का राग है। इससे दो मध्यमों का प्रयोग है। कोमल नी का प्रयोग कभी कभी विवादी के नाते होता है। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में पंचम का अल्प प्रयोग है। आरोह में बहुधा रे, प, और नी वक्र होते हैं और अवरोह में गंधार वक्र है। इसलिए इसकी जाति वक्र संपूर्ण है। कुछ लोग पंचम को आरोह में वर्ज्य मानकर जाति षाडव-संपूर्ण मानते हैं। शुद्ध मध्यम का प्रयोग आरोहावरोह में बराबर है। पर तीव्र मध्यम का प्रयोग पंचम के साथ होता है, जैसे :—‘मूप, गमध,’ या ‘मूप, गमरे, गमध’। वादी स्वर धैवत और संवादी गंधार है। कुछ लोग पंचम वादी मानते हैं और कुछ लोग गंधार भी वादी मानते हैं। गानेका समय रात का दूसरा प्रहर है।

आरोह :—सारेगमध, निसा।

अवरोह :—सानिधप मूप, गमरेसा।

पकड़ :—गमध, मूप, गम रेसा।

आलाप

- (१) सा, सा रे, सा, ग म रे सा, सा रे ग म, रे सा, सा रे ग म, रे, ग म प, ग म, रे सा।
- (२) सा रे सा, सा रे ग म, रे, ग म प, प, ग म रे, ग म प, ग म रे, म रे, रे ग म प ग म रे, ग म ध, मूप, ग म रे, प, ग म रे, नि सा।

- (३) सा रे ग म प, प, ध म् प, ग म रे, ग म ध, ध, ध, म् प, प
ध म् प, ग म रे, रे ग म ध, म् प, ध म् प, ग म रे, रे सा, म
रे, सा, प, ग म रे सा, ध, म् प, ग म प, ग म,
रे सा ।
- (४) सा नि धं, नि सा, सा रे, सा, सा रे ग म ध, म् प, ग म ध,
नि ध नि सां, नि ध म् प, सां नि ध प, प ध म् प, ग म ध,
ध, प, म् प ध, प, ग म प, ग म रे, सा, प, ग म रे, म रे,
नि सा ।
- (५) ग म ध, नि ध, नि सां, सां नि ध, प म् प, ध प, ग म ध,
सां, सां रें, सां, रें, सां नि ध, प, म् प ध प, नि ध नि सां,
नि ध, प, प ध म् प, ग म रे, ध, ग म रे, सा रे ग म प, ग
म रे, नि सा ।
- (६) सा रे ग म ध, नि सां, सां रें, सां, सां रें गं मं रें, सां, मं रें,
सां, रें सां, सां रें सां नि ध प म् प, ग म ध, ध नि सां रें,
सां नि ध प, नि ध, म् प, ध प, प, ध म् प, ग म रे, म रे,
ध म् प, ग म रे, रें, सां नि ध प, म् प, ग म रे, ग म ध, म्
प, ग म प, ग म रे, नि सा ।
- (७) ग म ध, नि सां, सां नि ध नि रें सां, सां रें गं मं रें सां, सां
रें गं मं पं, गं मं पं, गं मं रें सां, सां रें, सां, ग म ध, सां, नि
ध नि सां, म् प ग म ध, नि सां, सां नि, ध म् प, प ध म्
प, ग म रे, रे, ग म ध, रे, प, ग म रे, सा म ग प, म् ध म्
प, नि ध नि सां नि ध म् प ग म रे, प, ग म, रे, सा रे नि
सा ।

तानें

- (१) सा रे सा, सा रे ग म रे सा, सा रे ग म प ग म रे सा, सा
रे ग म ध प ग म रे सा, सा रे ग म नि ध म् प ग म रे सा,

ध प म् प ग म प ग म रे सा, सां रें सां नि ध प पं ध
 म् प ग म प ग म रे सा, गं मं रें सां सां रें सां नि ध प
 प ध म् प ग म प ग म रे सा, मं पं गं मं रें सां सां रें
 सां नि ध प प ध म् प ग म प ग म रे सा ।

(६) ग म म ग म म ग म म रे सा, म प प म प प म प प
 ग म रे सा, प ध ध प ध ध प ध ध म् प ग म रे सा,
 नि सां सां नि सां सां नि सां सां ध प म् प ग म रे सा, सां
 रें रें सां रें रें सां रें रें सां नि ध प म् प ग म रे सा, गं मं मं
 गं मं मं गं मं मं रें सां नि ध प म् प ग म रे सा, मं पं पं मं
 पं पं मं पं पं गं मं रें सां नि ध प म् प ग म रे सा ।

(७) सा रे ग म ध नि सां नि ध प म् प ग म रे सा, सा रे ग म
 ध म् प ध नि सां रें सां नि ध प म् प ग म रे सा, सां रें गं
 मं रें सां नि ध म् प ग म रे सा, सा रे ग म रे सा रे ग म
 ध म् प ध नि सां रें नि सां रें गं मं पं गं मं रें सां नि ध प
 म् प ग म रे सा, म म ग म रे सा, प प म प प म प प ग म
 रे सा, ध ध प ध म् प ग म रे सा, सां सां नि सां सां नि सां
 सां नि ध प म् प ग म रे सा, रें रें सां रें सां नि ध प म्
 प ग म रे सा, मं मं गं मं मं गं मं मं रें सां नि ध प म् प ग म
 रे सा, सा रे ग म ध ग म ध नि सां म् प ध नि सां रें सां
 रें गं मं पं गं मं रें सां नि ध प म् प ग म रे सा ।

राग हमीर—तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

ध	५	नि	सां नि	ध प	म् प	ग म	ध ध	म् प	
१			५		+		१३		

ग म रे सा सारे ग म रे रे सा सा प मपग म ॥
 १ ५ + १३

अन्तरा
 प प सा सासासासा धनि सारे सानिधप ॥
 १ ५ + १३
 सारे गम रे रे सासा सानिधप म प ग म ॥
 १ ५ + १३

राग हमीर-तेवरा ताल

राग लक्षण

यह सुखद राग हमीर निशि प्रति प्रहर पहले गाईये ।
 रखि सुर समस्त पुनीत निर्मल तीख मध्यम लाईये ॥
 सुर वादि धैवत करत अरु संवादि सुर गंधार को ।
 आरोह पंचम हीन विलसत वक्र नी अनुलोम को ॥१॥
 प्रति लोम सोहत मधुर वक्र गंधार सुर इस राग में ।
 अस मधुर रचना प्रगट होवत वीर अरु शृंगार में ॥२॥
 पं० खरे शास्त्री

स्थायी

सा	सा	प	प	प	प	ध	म	प	ग	म	नि	ध	५	रे
य	ह	सु	ख	द	रा	.	.	.	ग	ह	मी	.	.	र
६		१			४				६		१			
सा	नि	ध	प	म	प	ध	म	प	प	५	ग	५		
नि	शि	प्र	ति	प्र	ह	र	प	ह	ले	.	गा	.		
४		६		१			४		६		१			

नि
 म ध ऽ म् प | ध ध प म् प प प | ध
 इ ये . र खि | सु र स म . स्त पु | नी
 ४ ६ १ ४ ६ १
 ऽ प म् प प प | ग म रे ग म ध प |
 . त नि . र्म ल | ती . ख म . ध्य म |
 ४ ६ १ ४ ६
 प
 ग म रे सा ऽ ||
 ला . इ ये . ||
 १ ४

अन्तरा

प प | सां ऽ सां सां ऽ सां सां | सां सां सां
 सु र | वा . दि धै . व त | क र त
 ६ १ ४ ६ १
 सां सां सां ऽ | ध नि ध सां सां सां ऽ | सां रे
 अ रु सं . वा . दि सु र गं . धा .
 ४ ६ १ ४ ६ १
 नि सां सां ध ऽ सां ऽ | गं म रे नि सां सां सां | ध ऽ प
 . र को . आ . रो . ह पं . च म | ही . न
 ४ ६ १ ४ ६ १
 म् प प प | ग म रे ग म ध प | ग म रे सां ऽ ||
 विलसत | व . क नी . अनु | लो . म को . ||
 ४ ६ १ ४ ६ १

राग हमीर-चारताल धृपद

चंचल चपला की गत तैसो कमल वदनी अनुपम ।
 कामिनि सुन्दर करन फूल राजत माने मंगल गावो ॥
 मुख मूरत छवि सुन्दर परम काम विश्राम धाम ।
 दृग विशाल अधर पर बिह्वम बार बार डार ॥

स्थायी

सा स सा ध स | नि ध स म प प ध प स म प प |
 चं . . च ल . | च प . ला . की ग त . तै . सो |
 + ९ ११ १ + ५ + ९ ११

ग म रे ग म ध म प ग म स रे सा स | रे सा रे स सा सा रे
 क म ल व द नी अ नु . . . प म . का . . . मि नी सु
 १ + ५ + ९ ११ १ + ५

सा रे स सा सा सा रे धं सा | स रे सा स
 . . . न्द र क र न फू | . ल रा .
 + ९ ११ १ +

सा ध प स स ग स म | ध नि रें सा ध नि ||
 ज त मा . . ने . मं | . ग ल गा . वो ||
 ५ + ९ ११ १ + ५

अंतरा

ग म ध स नि सा सा सा सा सा स सा सा | ध ध ध सा
 ० ० . ख . मू र त छ वि सु . न्द र | प र म का
 १ + ५ + ९ ११ १ +

(४९)

५ सा सा रै सा ५ ५ नि ध ५ प म प ५ ध प म प प
 . म वि स रा . . म धा . म दृ ग वि . शा . . ल
 ५ + ९ ११ १ + ५ + ९ ११
 सा सा सा ध ध प ५ ध नि सा ५ नि ध ५ प ध नि रै
 अ ध र प र वि . द्रु म वा . र वा . र डा . र
 १ + ५ + ९ ११ १ + ५

राग हमीर-एकताल (ख्याल)

करन चहूँ रघुपति गुण गाहा । लघुमति मोरि चरित अवगाहा ॥
 सूभल एको अंग उपाऊ । मनुमति रंक मनोरथ राऊ ॥

स्थायी

नि सा नि ध नि ध मु प ग म नि नि
 क र न च ११ र धु प ति ध ध ५ ध ध
 ९ ११ १ + गु ण
 नि ध नि ध मु प ध नि सा ध प ग म नि म्
 गा हा . . . ल धु म ति
 ५ + ९ ११ १ +
 ५ प ध मु प ५ ग म ५ रे ५ रे ग म ध मु प
 . मो . . . री . च रि त . अव
 ५ + ९ ११
 ध मु प ५ ग म प ५ ग म रे सा रे नि सा ५
 गा . . . हा . . .
 १ + ५ +

राग हमीर-तीनताल (मध्यलय)

गुरु विन कौन बतावे बाट, बड़ा विकट यमघाट ॥
 भ्रांति की पहाड़ी नदिया बिचमो, अहंकार की लाट ॥
 मद मत्सर का मेह बरसत, माया पवन बहै दाट ॥
 कहत कबीर सुनो भाई साधो, क्यों तरना यह घाट ॥

स्थायी

प॒ध॒ नि॒ सां॒ नि॒ ध॒ प॒ म् प॒ ध॒ प॒ ध॒ म् प॒ ग॒ म॒ । नि॒ ध॒ स॒ ध॒ प॒ ध॒
गु॒ रु॒ . . वि॒ न॒ कौ॒ . न॒ ब॒ ता॒ . . . वे॒ । बा॒ ट॒ गु॒ रु॒
५ + १३ १ ५

नि सां नि ध ग ग म ध म् प म रे | ग म ध म् प म || ग म रे सा
 . . वि न ब डा . वि क ट य म | धा . . . ट || गुरु बि न
 + १३ १ ५

अंतरा

पु सा सा सा सा सा | ध नि सा रे सा नि ध मु प मु प ऽ प ध
 भ्रांति की प हा डी | न दि या. बि च मो. . अ हं. का.
 + १३ १ ५ +

म० प० प० म० म० नि
० ० र की . ध ऽ ध ||
१३ १ ला . ट ||

राग हमीर-तीनताल (मध्यलय)

ढोट लंगरवा कैसे घर जाऊँ,
सुन पावे मोरी सास ननंदिया छांड दे मोहे ॥
हूँ चली पनघटवा ठाढ़ो, कौन बहाने प्यारे बल्मा !
छीन ली मोरी शीश गगरिया वरजोरी पी आवे सुंदरवा ॥

स्थायी

[illegible]

प॒ न॒ न॒ प॒ ध॒ प॒ ध॒ म॒ प॒ ग॒ म॒ | ध॒ ऽ नि॒ ध॒ नि॒ सा॒ रें॒ सा॒ नि॒ ध॒ ||
 सी॒ सा॒ . स॒ न॒ न॒ . दि॒ . या॒ . छा॒ . ड॒ दे॒ . . . मो॒ ह॒ . ||
 + १३ १ ५

अंतरा

प॒ ऽ सा॒ सा॒ सा॒ सा॒ ध॒ नि॒ ध॒ नि॒ सा॒ रें॒ ऽ सा॒ ऽ सा॒ | ध॒ नि॒ ध॒ नि॒
 हैं . ज॒ ली॒ प॒ न॒ घ॒ ट॒ वा . . . ठा॒ . ढो॒ | कौ॒ . न॒ न॒
 १ ५ + १३ १

सा॒ सा॒ ऽ सा॒ रें॒ नि॒ सा॒ ऽ ध॒ प॒ | म॒ ग॒ म॒ रें॒ सा॒ रें॒ सा॒ सा॒ ध॒ नि॒
 हा॒ ने॒ . प्या॒ . रें . . ब॒ ल्मा॒ | छी॒ . न॒ ल॒ ई॒ . गो॒ री॒ शी॒ .
 ५ + १३ १ ५ +

सा॒ रें॒ नि॒ सा॒ ध॒ प॒ | म॒ म॒ प॒ ध॒ नि॒ सा॒ रें॒ सा॒ नि॒ ध॒ म॒ प॒ ध॒ प॒ ध॒ म॒ प॒
 श॒ ग॒ ग॒ रि॒ या॒ . | व॒ र॒ जो॒ री॒ . . . पी॒ . . आव॑ सु॒ न्द॒ . र॒ .
 १३ १ ५ + १३

ग॒ म॒ | ध॒ ऽ नि॒ ध॒ नि॒ सा॒ रें॒ सा॒ नि॒ ध॒ ||
 वा॒ . | कै॒ . . से॒ . . . घ॒ र॒ . ||
 १ ५

राग खमाज

यह खमाज थाट का आश्रय राग है। इसमें दो निषाद लगते हैं। आरोह में शुद्ध और अवरोह में कोमल निषाद। आरोह में रिपम वर्ज्य है। इसलिये इसकी जाति षाडव-संपूर्ण है। इसके अवरोह में वैवत-स्वर का महत्व नहीं है। अवरोह में भी पंचम को वक्र करते हैं, जैसे:—‘नीध, मपध, मग’। ध-म की संगति है। वादी स्वर गंधार और संवादी निषाद है। पूर्वांगवादी राग है। राग रात के दूसरे प्रहर में गाया जाता है। लुद्र प्रकृति का राग है। इसमें ठुमरी आदि गीत गाये जाते हैं। अवरोह में दोनों निषादों का साथ साथ प्रयोग भी होता है।

आरोहः—सागमपधनिसा।

अवरोहः—सानिधपमगरेसा।

पकड़ः—गमपधनिध, मपध, मग।

आलाप

- (१) सा, नि सा, ग म ग, सा ग म ग, सा ग म प, ग म ग, प, म, ग, रे, सा।
- (२) सा ग, ग म प, ग म ग, प ध, ग म ग, म ध, प ध नि, ध प, प ध, ग म ग, सा ग म प, म ग रे सा।
- (३) नि सा ग म प, ग म प, ग म ध प, नि ध प, सा नि ध प, प नि ध प, ध, ग म ग, नि सा नि ध, म प ध, म ग, प म ग रे सा।

(४) ग म प, ग म ध, ग म प ध नि, सां, सां, रें नि सां नि ध,
म प नि ध, म प, ग म ग, सा ग म प, ग म ग, प नि
सां, नि ध, म प, ग म ग, म ग, प म, ध, ग म ग, म ग,
रे सा ।

(५) ग म ध नि सां, नि सां, प नि सां रें, नि सां नि ध, सां गं,
मं गं रें सां, नि नि सां रें, नि सां नि ध, सां नि नि ध,
म प ध, म ग, सा म, ग म, प ध नि सां, प सां नि ध,
ग म नि ध, प ध म ग, ग प, म ग रे सा ।

जलद तानें

(६) सा ग म ग रे सा, सा ग म प म ग रे सा, सा ग म प नि
ध प म ग रे सा, सा ग म प ध नि सां नि ध प म ग रे सा ।

(७) नि सा ग म प ग म ध प म ग रे सा, नि सा ग म प ग
म प ध नि सां नि ध प म ग रे सा, नि सा ग म प ग म
प नि सां रें सां नि ध प म ग रे सा ।

(८) सां नि ध प म ग रे सा, सां नि सां रें सां नि ध प म ग
रे सा, सां गं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा ।

(९) ग म प ग म प ध नि ध प म ग म प ध नि सां नि ध प
म ग रे सा, प नि सां प नि सां रें सां नि ध प म प नि
ध प म ग प म ग रे सा, सा ग म प ग म प ध नि सां नि
सां गं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा ।

(१०) प प म ग रे सा, ध ध प ध प म ग प म ग रे सा, नि नि
प नि सां रें सां नि ध प म ग रे सा, गं गं रें गं मं गं रें सां
नि ध प म ग रे सा, नि सां गं मं पं पं मं गं रें सां नि ध
प म ग रे सा ।

(५५)

राग खमाज-तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

सां नि ध सां नि ध म ग | म प ध म ग रे सा
+ १३ १ ५

सा सा ग म प ग म | नी ध सां नी ध प म ग ||
+ १३ १ ५

अंतरा

ग म ध नी सां नी सां | सां ग ग म ग रे सा
+ १३ १ ५

सां रे सां नी ध प म ग | म प म ग म ग रे सा
+ १३ १ ५

सा सा ग म प ग म | नी ध सां नी ध प म ग ||
+ १३ १ ५

राग खमाज-एक ताल

राग लक्षण

सोहत मधुर खमाज, सुध सुर युत दोऊ निषाद ।

समय द्वितीय प्रहर रात, पाडव संपूरन यात ॥

आरोहन ऋषभ छुटत, सब सुर अवरोह करत ।

गनी नृप मंत्री सम्मत, संगत सुर धमकी लसत ॥

स्थायी

प

सा गग गम पध गम गग | गम पप पधसां निध पम गग |
सो ह त मधुर खमा . . . ज | सुध सुर यु . त दोऊ निषा . द |
१ + ५ + ९ ११ १ + ५ + ९ ११

म नि ध नि प ध नि सा नि सा ५ सा | प नि सा रे नि सा नि ध
 स म य द्वि तीय प्र ह र रा ५ त | पा . . . ड व सं .
 १ + ५ + ९ ११ १ + ५
 म प ध म ग ग ||
 पू र न या . त ||
 + ९ ११

अंतरा

ग म नि ध नि सा नि सा सा सा | नि सा नि सा सा रे नि सा
 आ रो ह न ऋ ष भ छु ट त | स व सु र अ व रो .
 १ + ५ + ९ ११ १ + ५ +
 नि ध ध ध | ग नि ध नि प ध नि सा सा सा | ग रे सा नि
 ह क र त | ग नि नृ प मं . त्री सं म त | सं . ग त
 ९ ११ १ + ५ + ९ ११ १ +
 ध प ध म प ध म ग ||
 सु र ध म की ल स त ||
 ५ + ९ ११

राग खमाज-चारताल

राजत रघुवीर धीर भंजन भव भीर पीर
 हरन सकल सरयू तीर, निरखहुँ सखी सोहे ।
 अनुज मनुज निकर संग करन दनुज बलही भंग
 अंग अंग छवि अनंग अगणित मन मोहे ॥

स्थायी

नि ५ सा सा प नि सा रे सा नि ध प ध |
 रा . . ज त र धु वी . र धी . . र |
 १ + ५ + ९ ११

म ऽ प प नि ध म प म ग ऽ ग ॥
 भं . ज न भ व भी . र पी . र ॥
 १ + ५ + ९ ११

सा म ग म प ध नि सा नि सा ऽ सा ॥
 ह र न स क ल स र यू ती . र ॥
 १ + ५ + ९ ११

ग रे सा नि सा रे नि सा नि ध नि प ध ॥
 नि र ख हूँ स खी सो . हे . ॥
 ? + ५ + ९ ११

अंतरा

म ग म नि ध नि नि सा नि सा ऽ सा ॥
 अनु ज म नु ज नि क र सं . ग ॥
 १ + ५ + ९ ११

नि सा नि सा सा रे नि सा नि ध ऽ ध ॥
 क र न द नु ज ब ल हि भं ऽ ग ॥
 १ + ५ + ९ ११

म ग म प ऽ ध नि सा नि सा ऽ सा ॥
 अं . ग अं . ग छ बि अ नं . ग ॥
 १ + ५ + ९ ११

ग रे सा नि सा रे नि सा नि ध नि प ध ॥
 अ ग णित म न मो . हे . ॥
 १ + ५ + ९ ११

राग खमाज-भूपताल

जयति नव नागरी, सकल गुण सागरी

कृष्ण गुण आगरी दिनन भोरी ॥

जयति हरि भामिनी कृष्ण घन दामिनी

मत्त गज गामिनी नव किशोरी ॥

स्थायी

नि सा	नि सा रे	ध सा	नि ध प
ज य	ति न व	ना	ग री
१	३	+	८
ग म	प नि ध प	ग प	म ग स
स क	ल गु ण	सा	ग री
१	३	+	८
नि सा	सा ग म	प ध	नि सा स
क	ष्ण गु ण	आ	ग री
१	३	+	८
प नि	सा स रे	ध सा	नि ध प ध
दि न	न . .	भो . .	री . .
१	३	+	८

अन्तरा

ग म	म नि ध	नि सा	नि सा स
ज य	ति ह रि	भा . .	मि नी
१	३	+	८
नि सा	नि सा रे	नि सा	नि ध स
क	ष्ण घ न	दा .	मि नी
१	३	+	८

सां ५	गं गं मं	गं रे	सां नि ध
म .	त ग ज	गा .	मि नी .
१	३	+	द
प नि	नि सां रे	ध सां	नि ध प ध
न व	कि शो .	री .	द . . .
१	३	+	•

राग स्वमाज-तीनताल (मध्यलय)

ऐसो को उदार जग माहीं । विनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम
सरिस कोऊ नाही ॥४॥ जो गति जोग विराग जतन करि, नहि
पावत मुनि ग्यानी । सो गती देत गीध शबरी कहैं, प्रभु न बहुत
जिय जानी ॥१॥ जो संपति दशशीश अर्पि कर रावण शिव
पहैं लीन्ही । सो संपदा विभीषण कहैं अति, सकुच सहित प्रभु
दीन्ही ॥२॥ तुलसीदास सब भांति सकल सुख, जो चाहसि मन
मेरो । तो भजु राम काम सब पूरन, करहिं कृपानिधि तेरो ॥३॥

मश्रायी

प ध पधनिसां नि धप धम ग म पध | नि सांनि सां निधपध
 ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ००
 ऐ . सो . . . को . . उदा . र ज ग | मा ही . . ऐ . . .
 ५ + १३ १ ५
 पधनिसां नि नि नि ऽ सां नि सां ऽ | प निसां रें ध सां नि ध ध
 ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ००
 सो . . . वि नु से . वा . जो . | द्र वै . . दी . न प र
 + १३ १ ५
 ग सा ग म ग म प ध | नि सां नि सां ||
 रा . म स रि स को ऊ | ना ही . . ||
 + १३ १

अंतरा

ग म ध नि सां सां नि | सां नि रें नि सां नि ध ध नि ध प ग म
 जो . ग ति जो ग वि | रा ग ज त न क रि न हि पा . व त
 + १३ १ ५ + १३

प ध | ग म प ध नि सां s सां s सां गंग गं गंम | गंम रेंगं नि
 मुनि | ग्या नी . सो गति दे तगी | ध श ब री
 १ ५ + १३ १ ५

सां सां नि सां नि सां नि सां सां रें | नि सां नि ध ||
 क हैं प्र भु न व हु त जिय | जा . नी . ||
 + १३ १

राग खमाज—दादरा

जानकि जीवन दुःख हरन रघुवीर जानकी ॥धृ॥ कनक मुकुट
 त्रिकुटि विवट, तिलक रेख रेणु रुचिर । मकराकृति कुंडल छवि
 धनुष बाण की ॥

—सं० बाल प्रकाश

स्थायी

सां नि ध प म ग | ग म प प ध | सां नि ध ध नि |
 जा न की जी व न | दु ख ह र न | जा न की र धु |
 १ + १ + १ +

सां नि सां रें | सां नि सां नि ध प ध ||
 वी र जा न | की ||
 १ + १ +

(६१)

अंतरा

म	ग	म	नि	ध	नि	नि	सा	नि	सा	सा	सा	नि	सा	नि
क	न	क	मु	कु	ट	त्रि	कु	टि	वि	व	ट	ति	ल	क
१			+			१			+			१		
सा	रें		सा	नि	सा	नि	ध	ध	ध			नि	सा	रें
रे	ख		रे			गु	रु	चि	र			म	क	रा
+			१			+			१			+		
सा	रें	नि	सा			नि	सा	नि	सा	रें		सा	नि	सा
	ड	ल	छ	वि		ध	नु	ष	बा	ण		की		
+						१			+			१		

राग खमाज-तीनताल (मध्यलय)

क्यों मन जीवन सार बिसारा ॥घृ॥

विषय परायन होय जगत में, फिरे अंध मतवारा ॥१॥

जिस जग में तू भूल रहा है, दो दिन का है गुजारा ॥२॥

धन दारा सुत काम आवे, जिन पर कियो सहारा ॥३॥

जीवन पथ तू त्याग करे नहिं, जिससे हो निस्तारा ॥४॥

स्थायी

प	ध	नी	रें	नी	सा	नी	ध	प	ध	म	ग	ग	म	प	ध	नी	सा
क्यों	म			न	जी					व	न	सा		र	बि	सा	रा
५					+							१३					१

अंतरा

ग म ध नी सा नी सा सा | नी सा रे सा नी सा नी ध
 वि ष य प रा य न | हो य ज ग . त में .
 + १३ १ ५

सा ग ऽ ग ऽ म ग रे ग | नी सा नी सा ||
 फि रे . अं . ध . म त | वा रा . . ||
 + १३ १

राग देश

यह खमाज थाट से उत्पन्न ओडव-संपूर्ण राग है। इस राग में दोनों निषादों का प्रयोग होता है। आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद का उपयोग होता है। तार सप्तक में कभी कभी कोमल गंधार का विवादी के नाते से प्रयोग होता है, उदाहरणार्थ :—सां, रें गं रें सां। आरोह में गंधार और धैवत वर्जित हैं और अवरोह में सब स्वर लगते हैं। कभी कभी आरोह में गंधार और धैवत का अल्प प्रयोग होता है, इसलिए कुछ लोग इन स्वरों का अल्पत्व मानते हुए देश राग को संपूर्ण-संपूर्ण जाति का मानते हैं। इसमें वादी स्वर पंचम और संवादी ऋषभ है। कुछ लोग ऋषभ वादी और पंचम संवादी भी मानते हैं। अवरोह में ऋषभ वक्र होता है :—प ध प म ग रे, ग सा (ग निं सा)। ध-म की संगति इस राग में है। गाने का समय रात का दुसरा प्रहर है।

आरोह :—निं सा रे म प निं सां।

अवरोह :—सां निं ध प म ग रे, ग निं सा।

पकड़ :—ध, म, ग रे, ग निं सा।

आलाप

(१) सा, निं सा, निं सा रे म ग रे, रे म ग रे, म, ग रे, ग, निं सा।

- (२) नि सा रे म, ग रे, म प, म प ध, म, ग रे, रे प, म ग रे,
सा रे म, ग रे, नि सा रे, नि धं पं, नि सा ।
- (३) नि सा रे म प, म प नि ध प, नि ध प, रे म प नि ध प,
प ध म ग रे, रे ग रे प, म ग रे, रे म, ग रे, ग नि सा ।
- (४) सा रे म प नि ध प, म प नि सां नि ध प, म प नि ध प,
म प ध म ग रे, रे म प ध म ग रे, नि ध प, म प ध म
ग रे, प, म ग रे, म, ग रे, ग नि सा ।
- (५) म रे म प नि सां, प नि सां रें, नि ध प, म प सां, नि ध
प, म प नि ध प, ध, म ग रे, रे म प नि सां, प नि ध प,
ध, म प ध, म ग रे, रे प, म ग रे, रे ग सा रे म, ग रे
ग नि सा ।
- (६) म प नि, सां, नि सां, सां, नि सां रें, मं ग रें, नि सां रें मं
ग रें, गं नि सां, नि सां, नि सां रें, नि ध प, रे म प नि ध
प, प, म प ध, म ग रे, ग रे, प, म ग रे, रे रे म प नि ध
प, म प ध, म ग रे, ग नि सा ।
- (७) सा रे म प नि, सां, प नि सां रें, रें गं सां रें मं ग रें, रें पं,
रें मं, गं रें, मं, गं रें, गं, नि सां, सां, प नि सां रें, नि ध
प, नि, सां, नि सां रें, नि ध प, सां, नि ध प, म प नि,
ध प, ध म प ध, म ग रे, प, रे म, ग रे ग, नि सा ।

तानें

- (१) सा रे म ग रे सा, सा रे म प म ग रे सा, नि सा रे म प ध
प म ग रे सा, नि सा रे म प नि ध प म ग रे सा, नि सा
रे म प नि सां नि ध प म ग रे सा, नि सा रे म प नि सां
रें सां नि ध प म ग रे सा, नि सा रे म प नि सां रें मं गं

रें सां नि ध प म ग रे सा, नि सा रे म प नि सां रें मं पं
मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा ।

- (२) नि सा रे ग सा रे म ग रे सा, नि सा रे म रे म प म ग रे
सा, नि सा रे म प ध म प ध प म ग रे सा, नि सा रे म
प नि म प नि ध प म ग रे सा, नि सा रे म प नि म प नि
सां नि ध प म ग रे सा, नि सा रे म प नि म प नि सां रें
सां नि ध प म ग रे सा, नि सा रे म प नि म प नि सां रें
मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, नि सा रे म प नि म प
नि सां रें मं पं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा ।
- (३) सां नि ध प म ग रे सा, सां रें सां नि ध प म ग रे सा,
सां रें मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, सां रें मं पं मं गं रें
सां नि ध प म ग रे सा, पं—मं गं रें सां नि ध प म ग रे
सा, मं—गं रें सां नि ध प म ग रे सा, रें—सां नि ध प म
ग रे सा, सां—नि ध प म ग रे सा ।
- (४) नि सा रे म ग रे सा रे म प नि ध म प नि सां नि ध प म
ग रे सा, रे म प नि ध प म प नि सां रें सां नि सां रें मं
गं रें सां नि ध प म ग रे सा, म प नि सां नि ध प म प
नि सां रें नि सां रें मं पं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा ।
- (५) म म ग रे सा, प प म प म ग रे सा, नि नि ध नि ध प
म ग रे सा, सां सां नि सां नि ध प म ग रे सा, रें रें सां रें
सां नि ध प म ग रे सा, मं मं गं रें सां नि ध प म ग रे
सा, पं पं मं पं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा ।
- (६) रे म म रे म म रे म म रे सा, म प प म प प म प प म ग
रे सा, प नि नि प नि नि प नि नि ध प म ग रे सा, नि सां
सां नि सां सां नि सां सां नि ध प म ग रे सा, सां रें रें सां

रें रें सां रें रें सां नि ध प म ग रे सा, रें मं मं रें मं मं रें मं
मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा, मं पं पं मं पं पं मं पं पं मं
गं रें सां नि ध प म ग रे सा ।

- (७) नि सा रे म प नि सां नि ध प म ग रे सा, नि सा रे म प
रे म प नि सां रें सां नि ध प म ग रे सा, सां रें मं गं रें
सां नि ध प म ग रे सा, नि सा रे म ग रे सा रे म प नि
ध प म प नि सां रें नि सां रें मं पं मं गं रें सां नि ध प म
ग रे सा, म म रे म ग रे सा, प प म प प म प प म ग रे
सा, नि नि प नि ध प म ग रे सा, सां सां नि सां सां
नि सां सां नि ध प म ग रे सा, रें रें सां रें सां नि ध प
म ग रे सा, मं मं रें मं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा,
नि सा रे म प रे म प नि सां म प नि सां रें नि सां रें
मं पं मं गं रें सां नि ध प म ग रे सा ।

राग देश-तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

रे	म	५	म	प	नि	५	नि	सां	५	रें	सां	नि	ध	प
+					१३			१			५			
म	प	नि	ध	प	म	ग	रे	प	म	ग	रे	ग	नि	सां सां
+					१३			१			५			॥

अंतरा

म	म	म	प	प	नि	नि	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां		
+					१३		१			५					
नि	सां	रें	मं	गं	रें	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प	म	ग	रे
+					१३		१				५				

नि ध नि प ध म प | सा नि ध प म ग रे सा ||
 + १३ १ ५

राग देश—तेवरा ताल

राग लक्षण

गुनी देस गावत अति मधुर, दूसर प्रहर नित रात को ।
 अरु सकल सुध सुर मृदुल नी युत, सोरटी सम रूप को ॥
 सुर वादी पंचम रिषभ सहचर, अल्प ध-ग आरोह को ।
 अरु तनिक मृदु गन्धार सोहे, देत चित आनन्द को ॥

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

रे

म ग | सा रे ग म ग नि सा सा सा |
 गु नी | दे . . . स गा . व त |
 ६ १ ४ ६

म रे म म प प नि सा | नि सा रे नि नि
 अ ति म धु र दू . | स र प्र ह र
 १ ४ ६ १ ४

ध म | प ध नि ध प ऽ म प | नि सा नि
 नि त | रा . . त को . अ रु | स क ल
 ६ १ ४ ६ १

सा सा सा रे | सा नि सा नि ध ऽ प प |
 सु ध सु र | मृ . दु ल नी . यु त |
 ४ ६ १ ४ ६

म रे म प नि ध प ध म रे ऽ ॥
 सो . र टी . स म रु . प को ४

अन्तरा

म प नि ऽ नि सा ऽ सा सा नि सा नि
 सु र वा . दि पं . च म रि ष भ
 ६ १ ४ ६ १

सा सा सा सा नि सा नि सा सा सा ऽ
 स ह च र अ . ल्प ध ग आ .
 ४ ६ १ ४ ६

नि सा रे सा रे ऽ नि सा रे म ग रे नि सा
 रो . . ह को . अ रु त नि क मू दु
 १ ४ ६ १ ४ ८

नि सा ऽ प नि सा रे रे नि ऽ ध प रे म रे
 ग . धा . . . र सो . हे . दे . त
 ६ १ ४ ६ १

म प नि ध प ध म ग रे ऽ
 चि त आ . न . न्द को .
 ६ १ ४

राग देश-भूपताल

प्रभो तुम विन कवन मोरी नैया करे पार ।

पड़ी आन मँझधार, डोल रही ॥

बोझी विषय भार, केवट मतवार ।

आवो करो पार, किरपा घनी ॥

मेरी सुनो पीर, देखो मुझे धीर ।

है नीर गंभीर, पार करो ॥

स्थायी

प नि सां रे नि | ध प ध ग म प ध म ग रे |
 प्र भो . . . तु म वि न क व न मो . री |
 ८ १ ३ + ८

नि सा ग रे ऽ ग म ग रे ग नि सा सा | नि सा रे म रे
 नै . या . . . क रे . . पा . र | प डी आ . न
 १ ३ + ८ १ ३

म प नि सां सां | प रे सां रे नि सां नि धु प म प ||
 मँझ धा . र | डो . ल . र ही ||
 + ८ १ ३ +

अंतरा

म प नि सां नि सां सां नि सां सां | नि सां सां ऽ रे नि
 बो . झी . वि ष य भा . र | के . व . ट म
 १ ३ + ८ १ ३ +

सा नि ध प | प रे रे ऽ म ग रे ग नि सा सा | प नि सा ऽ
 त वा . र | आ . वो . करो . . पा . र | किर पा .
 ८ १ ३ + ८ १ ३
 रे सा नि ध प म प ऽ ||
 घ नी
 +

राग देश-तीनताल (मध्यलय)

नेक चाल चलिये हे मनुवा । घड़ि घड़ि पल पल हरि से डरिये ॥
 आप आपना स्वतंत्रता से । कर विचार उसको अनुसरिये ।
 किंतु देख कर निज दोषों को । दूर क्यों न करिये ॥

स्थायी

रे म रे म प प सा नि | सा निसारें नि नि ध प म म प प सा नि ध प |
 ने . क चा . ल चलि | ये . . . म नु वा . घड़ि घड़ि पल पल |
 + १३ १ ५ + १३

रे
 प ध म ग रे ग नि सा ||
 हरि से . डरि ये . ||
 १ ५

अन्तरा

म म प ऽ प नि | सा सा ऽ सा निसा सा नि नि नि सा ऽ सा सा सा |
 आप आ . प ना | स्व तं . त्र ता . से कर वि चा . र उ स |
 + १३ १ ५ + १३
 प निसारें सारें नि नि ध प म रे म प ध नि ध प प | प ध म ग रे ग नि सा
 ० ० ० ० को . . . अनु सरि ये . कि . तु दे . . . ख कर | निज दो . षों . को
 १ ५ + १३ १ ५

रेम रेम s प निसा | पनिसारें सान्धिप सान्धिप मगरेसा ||
 दू. रक्यों. न करि | ये ||
 + १३ १ ५

राग देश तीन ताल—(मध्यलय)

श्यामा तेरी बन्सरी नेक बजाऊँ ॥

जो तुम तान कहो मुरली में, सोही सोही गाय सुनाऊँ ॥

स्थायी

म रे म प पनि सारें निधप मगरेग निसा | रेगमरे ||
 श्या मा ते री बं . . . सरी. ने . . . क व | जा . . ऊँ ||
 ५ + १३ १

अंतरा

म प नि नि सा सा सा | रें सा नि ध म प निसारें निनिनिनि
 जो . तु म तान क | हो . . . मुर ली . . मे सोहीसोही
 + १३ १ ५ +
 सा सा सा | नि सा रें सा नि ध प ||
 गा य सु | ना . . . ऊँ . . . ||
 १३ १

राग देश—तीनताल (मध्यलय)

तराना

तनत तन देरेना तानत तन देरेना नादिर् दिर् दानि तदानि दीम्
 तन देरेना तन देरेना दानि उदनित तन तदरे दानि दीम् तदेर्ना ॥
 नादिर् दिर् दिर् तुंदिर दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर्
 दिर्, नि सा रे म ग रे नि सा रे सा नि ध प म ग रे धि तिरिकिट
 धिकिट क्त् धि तरान् धा धिकत् तिट धा धा धि तिरिकिट धिकिट
 क्त् धि तरान् धा धिकत् तिट धा धा धि तिरिकिट धिकिट क्त् धि
 तरान् धा धिकत् तिट धा ॥

स्थायी

म रे रे स प | नि सा ऽ सा ऽ प नि सा रे
 त न त त न | दे रे . ना . ता .
 १३ १ ५

रे सा नि ध म म ग रे | रे नि ध नि प ध म प
 न त त न दे रे . ना | ना दिर् दिर् दा नि त दा नी
 + १३ १ ५

प ध नि ध प म ग रे | प म ग रे ग नि सा सा
 दी . म त न दे रे ना | त न दे रे ना दा . नि
 + १३ १ ५

प नि सा रे म रे म प | प नि म प प नि सा रे रे सा नि
 उ द नि त त न त द | रे दा . नि दी . . म त दे .
 + १३ १ ५

ध प म ग रे ||
 . . नी . . ||

+

अन्तरा

म म म म प प नि नि | सा सा सा सा सा सा सा
 ना दिर् दिर् दिर् तुं दिर् दिर् दिर् | दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर् दिर्
 + १३ १ ५

सा नि सा रे म ग रे नि सा | रे सा नि ध प म ग रे रे रे रे
 दिर् नि सा रे म ग रे नि सा | रे सा नि ध प म ग रे धि ति र
 + १३ १ ५ +

३३३ ३३३३ ३ ३३ ५ ३३३ ३ ३३ ३ न नि निनिनिनि
 किटधि किटकत धि तरा . नधाधि कत् तिट धाधा धि तिरि किट
 १३ ? ५

नि निनिनिनिनिनिनिऽनिनिनि सा सासा सारि नि निनिनिनि
 धि किट क्त धितरा . न्धा धि कत् तिट धाधा धि तिरि किट
 + १३ ?

नि निनिनिनिनि ध ध ऽ ध प प म म ग रे
 धि किट क्त धि तरा . न्धाधि कत् तिट धा
 ५ +

राग तिलङ्ग

यह खमाज थाट का औडव-औडव जाति का राग है। इसमें दोनों निषाद लगते हैं। आरोह में शुद्ध और अवरोह में कोमल निषाद लगता है। आरोहावरोह में ऋषभ और धैवत वर्जित है। तारसप्तक में कभी कभी ऋषभ का प्रयोग अल्प मात्रा में होता है, जैसे :—‘गम पनी सां रें सां’। वादी स्वर गंधार और संवादी निषाद है। इस राग में अधिकतर ठुमरी, गीत, भजन आदि गाए जाते हैं। कभी-कभी दोनों निषादों का प्रयोग साथ साथ किया जाता है, जैसे :—‘ग म प नि नि प म’। गाने का समय रात का दुसरा प्रहर है।

आरोह :—निं सा ग म प नि सां ।

अवरोह :—सां नि पम ग सा ।

पकड़ :—गम पन् पम ग ।

आलाप

- (१) सा, निं सा, निं सा ग, ग सा, सा ग म ग, सा ।
- (२) सा ग, सा ग म ग, ग म प, म ग, प, म ग, सा ग म प, म ग, सा ।
- (३) निं सा ग म प, ग म प नि, प, प, म ग, सा ग म प नि प, म ग, प नि पम ग, नि, प नि पम, ग म ग, ग म, ग म प, म, ग, सा ।

- (४) निं सा ग म प नि, प, ग म प नि, सां नि, प, नि प सां, नि प, सां नि प, नि प, ग म, ग प, म नि, प सां, नि प, नि नि प म ग म प नि सां, नि प, म प ग म, ग म प, म, ग सा ।
- (५) ग म प नि, प सां, सां, नि प, प नि सां, सां, रें नि सां, नि प, प नि रें सां नि प, ग म प नि सां, प नि सां, नि प, म प नि प म प, ग म ग, सा ग म प नि सां, नि प, म ग म ग, सा ।
- (६) ग म प नि, नि सां, प नि सां रें, सां, रें नि सां, नि प, प नि सां गं, सां, नि सां, नि सां रें सां, नि प, सां, नि प, ग म प नि प, प म ग, म ग, सा ।
- (७) निं सा ग म प नि म प, नि सां, नि, प म ग म प नि सां, प नि सां गं, गं मं, गं, सां, सां गं मं पं, मं, गं सां, नि सां गं, सां, नि प, प नि सां रें नि सां, नि प, ग म प नि, नि, नि, प नि सां, नि प, नि, प म ग म ग, म ग, सा ग म प, म ग, सा ।

ताने

- (१) निं सा ग म ग सा, निं सा ग म प म ग सा, निं सा ग म प नि प म ग सा, निं सा ग म प नि सां नि प म ग सा, निं सा ग म प नि सां रें सां नि प म ग सा, निं सा ग म प नि सां गं सां नि प म ग सा, निं सा ग म प नि सां गं मं गं सां नि प म ग सा, निं सा ग म प नि सां गं मं पं मं गं सां नि प म ग सा ।
- (२) निं सा ग म ग म प म ग सा, निं सा ग म ग म प नि प म ग सा, निं सा ग म प नि ग म प नि सां नि प म ग सा, निं सा ग म प नि ग म प नि सां रें सां नि प म ग सा, नि

सा ग म प नि ग म प नि सां गं सां नि प म ग सा, नि सा
ग म प नि ग म प नि सां गं मं गं सां नि प म ग सा, नि
सा ग म प नि ग म प नि सां गं मं पं मं गं सां नि प म ग
सा ।

(३) सां नि प म ग सा, सां रें सां नि प म ग सा, सां गं सां नि
प म ग सा, सां गं मं गं सां नि प म ग सा, सां गं मं पं मं
गं सां नि प म ग सा, पं—मं गं सां नि प म ग सा, मं—
गं सां नि प म ग सा, गं—सां नि प म ग सा, सां—नि प
म ग सा ।

(४) नि सा ग म प म ग म प नि प म ग म प नि सां नि प म
ग सा, ग म प म ग म प नि प म ग म प नि सां रें सां
नि प म ग सा, प नि सां नि प नि सां गं सां नि प नि
सां गं मं गं सां नि प म ग सा, नि सा ग म प नि ग म
प नि सां गं नि सां गं मं पं मं गं सां नि प म ग सा ।

(५) म म ग म ग सा, प प म प म ग सा, नि नि प नि प म
ग सा, सां सां नि सां नि प म ग सा, रें रें सां रें सां नि प
म ग सा, गं गं सां गं सां नि प म ग सा, मं मं गं मं गं
सां नि प म ग सा, पं पं मं पं मं गं सां नि प म ग सा ।

(६) ग म म ग म म ग म म ग सा, म प प म प प म प प
म ग सा, प नि नि प नि नि प नि नि प म ग सा,
नि सां सां नि सां सां नि सां सां नि प म ग सा, सां रें रें
सां रें रें सां रें रें सां नि प म ग सा, सां गं गं सां गं गं
सां गं गं सां नि प म ग सा, गं मं मं गं मं मं गं मं मं
गं सां नि प म ग सा, मं पं पं मं पं पं मं पं पं मं गं सां
नि प म ग सा ।

(७) नि सा ग म प नि सां नि प म ग सा, नि सा ग म प
 ग म प नि सां रें सां नि प म ग सा, सां गं सां नि प म
 ग सा, नि सा ग म ग सा ग म प नि प म प नि सां गं
 सां नि सां गं मं पं मं गं सां नि प म ग सा; म म ग म
 ग सा प प म प प म प प म ग सा, नि नि प नि प म ग
 सा, सां सां नि सां सां नि सां सां नि प म ग सा, गं गं
 सां गं सां नि प म ग सा, मं मं गं मं मं गं मं मं गं सां
 नि प म ग सा, नि सा ग म प ग म प नि सां प नि सां
 गं मं सां गं मं पं मं गं सां नि प म ग सा ।

राग तिलंग-तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

गम	पनि	पनि	प	ग	s	म		ग	गम	गसा	s	सा	निसा	गम			
+		१३						१	५			+					
पनि	म	प		नि	सां	s	प	नि	प	मप	ग	म	s	प	नि	प	सांनि
१३				१			५		+				१३				
रें	सां	s	सां	नि	प												
१			५														

अंतरा

गम	पप	निप	निप		नि	सां	निसां	s	सां	नि	सां			
+		१३			१		५							
गंमं	गं	सां	निसां	गंमं		पं	गं	s	मं	गं	सां	निसां	निरें	सांनि
+		१३			१		५			+				
पसां	निप		सां	नि	s	सां	नि	प						
१३			१			५								

राग तिलंग-एकताल

राग लक्षण

सव करत तिलंग गान, सम्मत निशि द्वितीय याम ।
 सुध सुर युत बुध प्रमान, ओडव रिध हीन मान ॥
 ग नि नृप मंत्री समान, निप संगत हरत भान ।
 प्रति लोमे मृदुनी जान, सा ग म प नि प लसत तान ॥
 अवरोहन रिपभ तार, मधुर परस लसत सान ।
 मूर्छना अमान तान, सारे सानि पम प नि पम गम ॥

स्थायी

प
 प सा सा नि प म ग म प नि प म ग म सा ग म नि प
 स व क र त ति ल . . . ग गा . न सम्मत नि शि
 १ + ५ + ९ ११ १ + ५
 प नि प नि प म ग म ग म प नि प नि सा नि सा सा रे नि
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 द्वि. ती. य या . म सु ध सु र . यु त बु ध प्र मा .
 + ९ ११ १ + ५ + ९
 सा सा प नि सा रे नि सा नि प ग म प नि प म ग म
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 . न औ . . . ड व रि ध ही . . . न मा . न
 ११ १ + ५ + ९ ११

अन्तरा १

नि
 ग म प नि प नि सा सा सा रे नि सा सा नि प सा नि प
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 ग नि नृ प . मं . त्री समा . . न नी प सं ग त
 १ + ५ + ९ ११ १ + ५

प नि प म ग म | ग म प नि प नि सा रें सा नि नि सा सा |
 ह र त भा . न | प्रति लो . . में . मृ दु नि जा . न |
 + ९ ११ १ + ५ + ९ ११

म
 सा ग म प नि प नि प म ग म म ||
 सा ग म प नि प ल स त ता . न ||
 १ + ५ + ९ ११

अन्तरा २

ग म प नि प नि सा नि सा नि सा s सा | प नि सा रें सा नि प
 अ व रो . . ह न रि ष भ ता . र | म धु र प र स ल
 १ + ५ + ९ , ११ १ + ५ +

नि प नि प म ग म | ग सा ग म म प नि प नि सा सा | सा रें
 . स . त सा . न | मू र्छ ना . मा . न ता . न | सा रे
 ९ ११ १ + ५ + ९ ११ १

सा नि प म प नि प म ग म ||
 सा नि प म प नि प म ग म ||
 + ५ + ९ ११

राग तिलंग-धमार ताल

आये जगत के मन हरन ।

जाके चन्द्र मुख पर तेज सोहे, और उर बन माल ।

मही पालन कालि कंदन, दहन खल दल घोर कानन ।

शेष फणि पर करने तांडव, गरब सुरपति हरन ॥

स्थायी

ग म प नि प | नि सा सा नि प नि प म
 आ . ये . ज ग त के . म न
 ११ १ ६

ग ग ग सा सा नि सा सा ग म नि प नि सा
 प म ग ग सा सा च . न्द्र मु ख प र ते .
 + ११ १ ६ +

प म प ग म प नि प नि सा रे सा नि
 सा नि प ग म औ . र उ र ब न मा
 ११ १ ६ +

प म
 ल

अतरा

म ग म प नि प प नि सा सा नि सा सा
 न ही . पा ल न का . लि कं . द
 १ ६ + ११

सा प नि नि सा सा नि सा सा रे सा नि
 न द ह न ख ल द ल धी . र का
 १ ६ + ११

प ग म ग सा ग म ग सा नि नि प ग
 न न शे . प फ णी प र क र न ता
 १ ६ + ११

(८१)

म म म | प नि प नि सां रे सां नि प म ||
 एव व | ग र व सु र प ति ह र न ||
 १ ६ +

राग तिलंग-तीनताल (मध्यलय)

तुमही मंजुल रसना । तुमही मूर्तिमंत संगीत साधना ॥

अलौकिक माधुरी । सब सुख सुजन की हो तुमही ।

तान ताल आलाप मूर्छना ॥

स्थायी

ग म पनिमप पनिसारैसान्नि पनि सान्नि पगम | ग ऽ ग म ग सा
 तु म ही... मं... जु... लरस | ना. तु म ही .
 ५ + १३ १ ५

ग सा गम पनिनि पमप | पनि सां सान्निपनि सारैसान्नि पनिप
 मू . तिंमं . त . सं.. | गी. . त . सा . . . ध . ना..
 + १३ १ ५

मगम पनिसान्नि पनि सां नि प ग म | ग ऽ ||
 ... मं... जु . . ल र स | ना . ||
 + १३ १

अंतरा

नि नि ऽ नि नि पनि सां नि | प ऽ मपनिप मगम पसान्नि सां
 अ लौ . कि क मा . . धु | री . स . ब . सु . ख सु ज न की
 + १३ १ ५ +

प पनि सान्नि | सां ऽ प नि प म ग म ऽ ग सा ग मप निनिपम
 . हो . . तु | म्ही ता . न ता . ल . आ .
 १३ १ ५ + १३

प॒ | प॒नि सारैं सान्नि॒पनि सारैंसान्नि॒ प॒निप॒म ग॒मप॒नि सान्नि॒पनि॒सान्नि॒
 . | ला . . . प . मू . . . छे . ना . . . मं . . . जु . . .
 १ ५ + १३

प॒ ग॒ म॒ | ग॒ ५
 ल॒ र॒ स॒ | ना .
 १

राग तिलंग-तीनताल (मध्यलय)

कान्ह मुरलि वाले नंद के लाल,
 बाँसरी बजाई मन हर लीनो जात ॥
 टेरे सुनादे मोहनि मूरत,
 कदर पिया की अरज ले मान ॥

— राग बोध (देवधर)

स्थायी

सा॒ ५ नि॒ रैं सा॒ नि॒ प॒ ग॒ म॒ | ग॒ ५ ग॒ म॒ प॒ ग॒ म॒ ग॒
 का . न्ह मु . र लि वा . | ले . नं द के ला . ल
 + १३ १ ५

सा॒ सा॒ ग॒ म॒ प॒ प॒ नि॒ सा॒ | ग॒ सा॒ सा॒ नि॒ सा॒ नि॒ म॒ प॒
 बाँ सु रि व जाई म न | ह र ली . नो जा . त .
 + १३ १ ५

प
सां गं गं मं गं ऽ सां ऽ | प नि सां सां रें नि सां नि म प
क द र पि या . की . | अ र ज लें . . . मा . न
१३ १ ५

स्थायी

सा सा | प नि सा रे सा नि प प | ग म प नि ऽ प |
 ग . . . त की . न्हो . अब मो सो . गो
 १ + १ +

प० नि० सा० रे० सा० नि० प० म० | ग० म० प० नि० प० म० ग० सा० ||
कु० . . . ल० र० ह्यो . | . . . न० जा० य० ||
१ + १ +

(८४)

अंतरा

म ग म प नि नि सा स सा नि सा सा
गो कु ल री त छा ड दी न्हो
१ + १ +

नि नि सा स सा स प नि सा रे सा नि प प
म शु रा की रा ह ली न्हो
१ + १ +

म स म ग सा सा प नि सा रे सा नि प प
धा य धा य गा य गा य
१ + १ +

ग म प नि स प प नि सा रे सा नि प म
अ व मो सो गो कु ल र ह्यो
१ + १ +

ग म प नि प म ग सा
० ० ० ० न जा य
१ +

राग-तिलक क्रामोद

यह खमाज थाट का राग है। इस राग में दो निषाद तथा अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में गंधार धैवत वर्जित है। इसलिये इसकी जाति ओडव-संपूर्ण मानते हैं। इसमें वादी स्वर षड्ज और संवादी स्वर पंचम है। कुछ लोग पंचम षड्ज संवाद मानते हैं। यह राग रात के दूसरे प्रहर में गाया जाता है।

आरोह—सा रे ग, सा, रेमपध मप, सा।

अवरोह—सापधमग, सारेग, सानीं, पंनीं सा रे ग सा

पकड़—सा रेप, मग, सारेग, सानीं, पंनीं सारेग, सा।

यह राग गाते हुवे देस, तिलंग और खमाज न होने देने का पूरा ध्यान रखना चाहिये। इस राग में प्रायः कोमल निषाद न लेकर केवल शुद्ध निषाद से ही स्वर प्रसार अधिक किया जाता है। शुद्ध निषाद का उपयोग केवल आरोह में तार सप्तक में जाते समय 'नी सां रें गं' इस प्रकार किया जाता है। कोमल निषाद का उपयोग अवरोह में वक्ररूप से करने का प्रचार है—'सां पनीं धप धमग'। जलद तान लेते समय उसे 'सां नीं धप' इस प्रकार से भी कभी-कभी लेते हैं। अवरोह में रिषभ कम है। 'सा-प' और 'पंसा' ऐसे स्वर संवाद आरोहावरोह में मीढ़ से आते हैं। इस राग की गति तीनों सप्तकों में बराबर सी है। इसमें ख्याल गीत नहीं होता, विशेषतया ठुमरी टप्पा आदि शृंगारिक

गायन का प्राधान्य रहता है। परन्तु बहुत लोकप्रिय राग है। राग का चलन विशेष वक्ररूप से ही है। इससे राग का वैचित्र्य प्रकट होकर वह श्रुतिरंजक होता है।

आलाप

- (१) सा, नि सा, पं नि सा, पं नि सा रे ग, सा रे ग, सा, सा रे म ग, सा रे ग सा सा नि, पं नि सा रे ग, सा ।
- (२) सा रे ग, सा, रे प, म ग, सा रे ग, सा, सा रे म प, रे म प, प म ग, सा रे ग सा, नि पं, नि सा ।
- (३) सा रे म प, रे म प, प ध म ग, रे प म ग, सा रे म ग, रे म रे प, रे म प ध म ग सा रे प, म ग, सा रे ग, सा नि, पं नि सा रे ग, सा ।
- (४) सा रे म प ध म प, म प ध, म ग, रे म प, म ग रे ग रे प म ग, म प नि सां, प ध म ग, नि सां, प ध म ग, ग रे प म, म ग, सा रे ग सा, नि पं, नि सा ।
- (५) सा रे म प ध, म प सां, सां, नि सां, प नि सां, म प नि सां, प ध म प सां, सां प, प ध म ग, सा रे म प सां, प ध म ग, रे प म ग, रे म प ध म ग, सा रे ग सा ।
- (६) म प नि सां, सां नि सां, प नि सां, प नि सां रें नि सां, सां रें गं सां, प नि सां रें गं सां, सां रें नि सां, प ध म प सां प ध म, म ग, सा रे प, म, म ग, रे ग, सा रे ग, सा ।
- (७) प ध म प सां, प नि सां रें गं, सां, रें मं गं, सां रें गं, सां, रें पं मं गं, सां, रें गं, सां, म प सां, रे म प, सां, सा रे म प सां, प ध, म, सा रे प म, ग, सा रे ग सा, सा नि, पं नि सा रे ग, सा ।

तानें

- (१) सा रे ग सा, सा रे म प म ग रे ग सा, सा रे म प ध प म
ग रे ग सा, सा रे म प सा प ध म ग रे ग सा, सा रे म प
नि सा रें सा प ध प म ग रे ग सा, सा रे म प नि सा रें ग
रें सा प ध प म ग रे ग सा, सा रे म प नि सा रें ग सा रें
म ग रें सा प ध प म ग रे ग सा, सा रे म प नि सा रें ग
रें प म ग रें सा प ध प म ग रे ग सा ।
- (२) नि सा रे ग सा रे म ग रे सा, नि सा रे ग सा रे म प म ग
रे सा, निसारेग सारेमप धपमगरेगसा, निसारेग सारेमप साप
धमगरेगसा, निसारेगसारेमपनिसा रेंसापधपमगरेगसा, नि
सारेग सारेमपनिसारेंगरेसा पधपमगरेगसा, निसारेग सारेमप
निसारेंग सारें मंग रेंसा पधपम गरेगसा, निसारेग सारेमप
निसा रेंग रेंप मंग रेंसा पध पमगरेगसा ।
- (३) सा नि पधपम गरेगसा, सारेंसानि पधपमगरेगसा, सारेंगरे
सानि पधपमगरेगसा, सारेंमंगरेंसानिपधपमगरेगसा, सारें-
मंपमंगरें सानि पधपमगरेगसा, पं-मंगरेंसानिपधपमगरेगसा,
मं-गरेंसानिपधपमगरेगसा, गं-रेंसानिपधपमगरेगसा, रें-
सानिपधपमगरेगसा, सां-पधपमगरेगसा ।
- (४) निसारेग रेसा रेमपध पम पनिसानि पधपम गसारेगसा,
सारेमपमग रेमपधपम पनिसारेंसानिपधपमगसा रेगसा,
रेमपधपम पनिसारेंसानि सारेंगरे सानि पधपम गसा रेगसा,
मप निसा निप निसा रेंग रेंसा रेंम गरें सानि पध पम
गसा रेगसा, पनिसारें सानि सारेंमंग रेंसा रेंमपमंगरेंसानि
पध पम गसा रेगसा ।

- (५) गग सारेगसा, मम गरेगसा, पपमगसारेगसा, धधपमगसारेगसा, सांसापधपमगसारेगसा, रेंरेंसानिपधपमगसारेगसा, गंगरेंसानिपधपमगसारेगसा, मंमंगरेंसानिपधपमगसारेगसा, पंपमंगरेंसापधपमगसारेगसा ।
- (६) रेगग रेगग रेगग रेंसा, मपप मपप मपप मग सारेगसा, पधध पधध पधध पमगसारेगसा, निसांसां निसांसां निसांसां पधपमगसारेगसा, सारेंरें सारेंरें सारेंरें सानि पधपमगसारेगसा, रेंगंग रेंगंग रेंगंग रेंसानि पधपमगसारेगसा, मंपंप मंपंप मंपंप मंगरेंसानिपधपमगसारेगसा ।
- (७) सारेमपसापधपमगरेगसा, निसारेगसारेमपनिसारेंसापधपमगसारेगसा, सारेंगरे सानि पधपमगरेगसा, मपनिसानिपनिसारेंगरेसारेंगरेपमंगरेंसानि पधपमगसारेगसा, गग सारेगसा, पपमपप मपप मगसारेगसा, धधपमगसारेगसा, सांसां निसांसां निसांसां पधपमगसारेगसा, रेंरें सानिपधपमगसारेगसा, गंगरेंगंगरेंगंग रेंसानि पधपमगसारेगसा, मंमंगरेंसानि पधपमगसारेगसा, पंप मंपंप मंपंप मंगरेंसानिपधपमगसारेगसा ।

तिलक कामोद—तीनताल (मध्यलय)

सरगम

स्थायी

पं पं निं सा	रे ग निं सा	ग रे प म ग रे सा निं ।
१	५	+
सा रे म प	ध म ऽ प	सा प ध म ग रे सा निं ।
१	५	+

अन्तरा

प प स ध म प नि सा प स नि सा रे ग सा स ।
१ ५ + १३

सा नि स सा प ध म प सा प ध म ग रे सा नि ।
१ ५ + १३

राग तिलक कामोद-तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

तिलक कामोद बुध जन गावत, सोरठ अंग समय निस संमत ॥
आरोहन ध-ग हीन कहावत, स-प वादी संवादी सोहत
न्यास नि वक्र रीखभ सुर उतरत ॥

स्थायी

रे प म ग स सा स नि । पं पं नि सा रे ग नि सा
तिलक का . मो : द । बु ध ज न गा . व त
+ १३ १ ५

रे म प ध म प सा सा । प ध म ग सा रे ग नि सा ॥
सो . र ठ अं . ग स । म य नि स सं . . म त ॥
+ १३ १ ५

अन्तरा

म स म स प प नि नि । सा स सा सा नि सा सा सा
आ . रो . . ह न ध ग । ही . न क हा . व त
+ १३ १ ५

प नि सा रे सारे ग नि सा	प ध म ग सारे ग नि सा
स प वा दी . सं .	वा दी . सो . ह त
+ १३	१ ५
रे म प सा नि सा प प	प ध म ग सारे ग नि सा
न्या . स नि व क र रि	ख म सु र उ . त र त
+ १३	१ ५

राग तिलक कामोद-चारताल

धृपद

स्थायी

नवल रंग नवल फूल, नवल शोभा यमुना कूल ।
 नवल सघन बेली द्रुम, प्रफुलित चहूँ ओर ॥
 ललित नई गुल्म लता, चटकि चटकि खिलत कली ।
 विकसे तरु पात नये, नयो नयो वौर ॥

सा	ध						
सा प	प प	ध म	ग सा	रे ग	ग	सा सा	
न व	ल रं	ग	न व	ल .	फू	ल	
१	+	५	+	९		११	
							रे
नि पं	नि नि	सा सा	रे म	प ध म	ग	सा	
न व	ल शो	भा	य मु	ना .	कू	ल	
१	+	५	+	९		११	
							प
म रे	म प	नि नि	सा स	प ध		म प	
न व	ल स	ध न	वे .	ली .		म	
१	+	५	+	९		११	

सा सा	ध प	ध म	ग सारे	ग ग	सा सा	
प्र फु	लि	त	च हुँ	ओ	र	
१	+	५	+	९	११	

अंतरा

म रे	म प	नि ऽ	सा ऽ	नि सा	सा ऽ	
ल लि	त न	ई .	गु .	ल्ल ल	ता .	
१	+	५	+	९	११	
प नि	सा रे	म ग	सा रे	ग ग	सा ऽ	
च ट	कि च	ट कि	खि ल	त क	ली .	
१	+	५	+	९	११	
सा रे	सा ऽ	प ध	म ऽ	ग रे ग	सा ऽ	
वि क	से .	त रु	पा .	त . न	ये .	
१	+	५	+	९	११	

रे म	प सा	प ऽ	प ध	म ग	सा सा	
न यो	न	यो .	बौ .	.	र	
१	+	५	+	९	११	

राग तिलक कामोद-भूपताल

तीरथ को सब करे देव पूजा करे
 वासना ना मरे कैसे के भव तरे ॥
 काया धुवे पाऊ कवहूँ नहि मन पाऊ
 मनरंग की आस नित रहे चरणमें ॥

स्थायी

सा नि ती र १	सा सा प थ को . ३	ध प स व +	प ध म s क रे . द
म s दे . १	रे म ग सा . व पू . ३	रे s जा . +	रे ग सा s क रे . द
सा s वा . १	रे म s स ना . ३	प s ना . +	प ध प s म रे . द
प s कै . १	पुनि सारिं ग सा से . . . के ३	सा प भ व +	प ध म प त रे . द

अन्तरा

म s का . १	प नि नि या . धु ३	सा s वे . +	सा s सा पा . क द
प नि क व १	सा रे रे न हि ३	रे सारिं ग म न . . +	रे ग सा सा पा . क द

सा प	सा प प	प ध	म ग सा
म न	रं . ग	की .	आ . स
१	३	+	८
			प
सा रे	म प नि	सा प	ध म प
नि त	र हे .	च र	ण मे .
१	३	+	८

राग तिलक कामोद—तीनताल (मध्यलय)

कोयलिया बोले अंबुवा की डालरिया
मोहक सुरसों हुलसावत जिया ॥
भूम भूम कर नाचन लागे,
गान सुनत बन बन के पतवा ॥

स्थायी

ग ग सा सा	रें ग सारे	म प	सा प ऽ ध	म ग सा सा
को य लि या	बो . ले . अम्ब	वा . .	की डा ल री या	
+	१३	१	५	
पं नि सा सा	रे ग नि सा	रें म प ध	म ग सा सा	
मो . ह क	सु र सों .	हु ल सा .	व त जि या	
+	१३	१	५	

अंतरा

म रे म प	ऽ प नि नि	सा ऽ सा सा	रें ग सा ऽ
भू . म भू	म क र	ना . च न	ला . गे .
+	१३	१	५

प नि सां रे नि सां प प | सां प ऽ प ध म ग सा ||
 गा . न सु न त व न | ब न . के . प त वा ||
 + १३ १ ५

राग तिलक कामोद-तीनताल (मध्यलय)

नीर भरन कैसे जाऊं सखी अब डगर चलत मोसे करत रार
 अब ॥ ऐसो चंचल चपल हठ नट खट मानत न काहुकी
 बात विनति करत मैं गई रे हार अब ॥

स्थायी

रे ग रे प म ग सा रे | नि पं नि सा रे ग नि सा रे म प ध
 नी. र भ र न कै से | जा. ऊं स खी - अब ड ग र च
 + १३ १ ५ +

म प सां सां | प ध म म ग रे ग नि सा ||
 ल त मो से | करत रा . . र अब ||
 १३ १ ५

अन्तरा

म म म म प प नि नि
 ऐ सो चं च ल च प ल
 १ ५

सां सां नि नि सां सां नि सां | रे रे सां रे ग नि सां सां
 ह ठ न ट ख ट मा न | त न का हू की बा . त
 + १३ १ ५
 प नि सां रे नि सां प ऽ | प ध म म ग रे ग नि सा ||
 वि न ति क र त मैं - | गई रे हा - - र अब ||
 + १३ १ ५

राग तिलक कामोद-एकताल(द्रुत)

वेग वेग जात. ग्वालन सखिन संग
दधि बेचन ॥ श्याम सुन्दर आडोहि
आवत, शिरकी मटकिछीन लेत, चुनरी
सारी भीग जात, सब देख लाज लेत ॥

स्थायी

नि	s	पं	नि	सा	सा	रेम	प	ध	प	ग	रे	सा
वे	.	ग	वे	.	ग	जा.	.	.	त	ग्वा	ल	न
१		+		५		+			९		११	

रे	म	प	सां	s	सां	प	ध	प	ग	रे	सा	सा
स	खि	न	सं	.	ग	द	धि	बे	.	च	न	
१		+		५		+		९		११		

अन्तरा

म	s	म	प	नि	नि	नि	सां	नि	सां	सां	सां
श्या	.	म	सु	न्द	र	आ	डो	हि	आ	व	त
१		+		५		+		९		११	

प	नि	सां	रे	गं	सां	गं	रे	गं	प	मं	गं	सां	सां
शि	र	की	म	ट	की	छी	.	.	न	.	ले	.	त
१		+		५		+			९			११	

सा	सा	प	सा	प	प	प	ध	म	ग	सा	सा
चु	न	री	सा	.	री	भी	.	ग	जा	.	त
१		+		५		+		९		११	

रे	म	प	सा	सारे	निसा	प	ध	म	ग	सा	सा
स	व	दे	.	खे	...	ला	.	ज	ले	.	त
१		+		५		+		९		११	

राग-काफी

यह काफी थाट का आश्रय राग है। इसमें गंधार और निषाद कोमल लगते हैं। बाकी के सब स्वर शुद्ध लगते हैं। यह राग संपूर्ण जाति का है। कभी कभी शुद्ध गंधार और शुद्ध निषाद का विवादी के नाते प्रयोग होता है। कोमल धैवत का अल्प प्रयोग भी होता है। 'पमगुरे' इस स्वर समुदाय का आलाप के अंत में प्रयोग होता है। सा, प, और रे यह न्यास के स्वर हैं। वादी पंचम और संवादी ऋषभ है। कुछ लोग षड्ज संवादी मानते हैं। इस राग में अधिकतर ठुमरी, टप्पा, होरी आदि गाये जाते हैं। गाने का समय दूसरा प्रहर है, पर कुछ लोग इसे सार्वकालिक मानते हैं।

आरोह :—सारेगम पधनीसा।

अवरोह :—सान्धिप मगुरेसा।

पकड़ :—सा, रेगमप, पमगुरे, गुरेसा।

आलाप

(१) सा, रे ग रे, रे म ग रे, रे प म प ग रे, ग रे, नि सा।

(२) सा रे ग म प, प म ग रे, रे ग म प, ध प, म प म ग रे, ग रे सा रे, सा, नि धं नि सा।

(३) सा, ग रे, ग म प, म प ध प, म ग रे, नि ध प, ध प, म प, म ग रे, रे प म प म ग रे, सा रे, म ग रे, सा नि धं नि सा।

(४) सा रे ग् म प ध नि सा, नि सा रें सा, नि ध नि सा,
ध नि सा रें ग् रें, सा नि ध नि सा, नि ध प, म प नि प,
ग् रे, म प म ग् रे, प म ग् रे, ग् रे, सा नि धं नि सा ।

(५) म, प ध नि सा, सा नि ध नि सा, सा रें सा, नि ध नि
सा, सा रें ग् रें, ग म ग् रें, ग् रें सा, रें प म प ग् रें,
म ग् रें सा, रें सा, नि सा, नि ध प, प म ग म, नि प ग् रे,
रे ग् म प ध नि, ध ध् प म ग ग् रे, ग म नी प ग् रे, प ग्
रे, सा, नि धं नि सा ।

तानें

(६) सा रे ग् रे सा, सा रे ग् म प म ग् रे सा, रे ग् म प ध नि
ध प म ग् रे सा, सा रे म प ध नि सा नि ध प म ग् रे सा ।

(७) सा रे ग् रे सा रे ग् म प म ग् रे सा, प म ग् रे सा रे ग्
म प ध नि ध प म ग् रे सा, म प ध नि ध प म प ध नि
सा नि ध प म ग् रे सा, प ध नि सा ध नि सा रें ग् रें
सा नि ध प म ग् रे सा ।

(८) सा नि ध नि सा नि ध प म ग् रे सा, ग् रें सा रें ग् रें
सा नि ध प म ग् रे सा, म ग् रें ग् म ग् रें सा नि
ध प म ग् रे सा, प म ग् रें सा रें ग् म प म ग्
रें सा नि ध प म ग् रे सा ।

(९) रे ग् म प म ग् रे ग् म प ध नि ध प ध नि सा रें ग् रें
सा नि ध प म ग् रे सा, ध नि सा रें सा नि ध नि सा
रें ग् रें सा नि ध नि सा रें म ग् रें सा नि ध प म
ग् रे सा, सा रे ग् म प रे ग् म प ध म प ध नि सा ध
नि सा रें ग् सा रें ग् म प म ग् रें सा नि ध प म ग्
रे सा ।

(१०) प प म प प म प प म ग् रे सा, ध ध प ध ध प ध ध प
म ग् रे सा, रें रें सा रें रें सा रें रें सा नि ध प म ग् रे सा,
मं मं ग् मं मं ग् मं मं ग् रें सा नि ध प म ग् रे सा, सा
रे म प ध नि सा रें ग् मं प मं ग् रें सा नि ध प म ग्
रे सा ।

राग काफ़ी-तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

मपसांs नीधनीप s म ग् s रे सा रे s | रे s रेग् रेग् म ग्
१ ५ + १३ १ ५

रेसारेसा नीं s सा s | रेग्मप ग्मपध मपधनीपधनीसां |
+ १३ १ ५ + १३

धनी सारेंनीs सारें ग्s रेंसां नीधनीप ||
१ ५ + १३

अंतरा

ममपध सांs नीसां धनीसारें ग्s मंग् | रेंसांपमं ग् रेंमंग्
१ ५ + १३ १ ५

रेंसांनीध नीपs ध ||
+ १३

राग काफ़ी-तीन ताल (मध्यलय)

राग लक्षण

कैसी काफ़ी बनाई कान्हा मोसे तान आलाप सुनाई ।
 आरोहन में अवरोहन अरु संपूरन सुरगाई ।
 ग-नी सुर द्वय को कोमल करके पंचम वादी बनाई ।
 उठी मैं तुरतही धाई सुध बिसराई ॥

—पं० खरे शास्त्री

स्थायी

म प ग रे	रे ग म म	प ऽ प ऽ	नी ध म प
कै ऽ सी ऽ	का ऽ फी ब	ना ऽ ई ऽ	का न्हा मोसे
+	१३	१	५
प ध नी सा नी ध प म नी प	ग ऽ रे ऽ	रे ग म प	
ता . . . न आला. प सु	ना . ई .	० ० ० ०	
+	१३	१	५
म ग रे सा			
० ० ० ०			
. . . .			

अन्तरा

रे ऽ रे ऽ	रे रे सा रे ग	रे ग रे सा	रे नी सा सा
आ. रो .	हन मै . .	अव रो .	हन अ रु
+	१३	१	५
सा रे नी ऽ ध म प ध	नी ऽ सा ऽ	सा ऽ ऽ ऽ	
सं . पू . र न सुर	गा . . .	ई . . .	
+	१३	१	५

(१०१)

ध ध ध ध ध ध नी प ध | नी रें सां रें नी ध प ५
 गनी सु र द्र य को . . . | को . म ल क र के .
 + १३ १ ५
प नी नी सां सां रें नी सां नी ध | प ध प ध नी ध प ग रे
 पं . च म वा . . . दि ब | ना . ई . . उ ठी मै .
 + १३ १ ५
रे ग म प ग रे ग रे ५ | रे प म प ग रे नी सा ||
 तु र त ही धा . . ई . | सु ध विस रा . ई . ||
 + १३ १ ५

राग काफी—तीनताल (मध्यलय)

मनुवा राम नाम रस पीजै, त्यज कुसंग सतसंग बैठ नित ।
 हरी चरचा सुन लीजै ॥ध्रु०॥ काम क्रोध मदं लोभ मोह को,
 चित से बहाय दीजे । मीरा के प्रसु गिरिधर नागर, ताहि के
 रंग में भीजै ॥१॥

स्थायी

म म प ध नी सां
म नु वा . . .
 ५

नी ध प ग रे ग सा रे | प ५ प ५ ध म प ५
 रा . म ना . म र स | पी . जै . म नु वा .
 + १३ १ ५
रे ग रे ग सा रे नी सा | रे ग म प म ध म प
 त ज कु सं . ग स त | सं . ग बै . ठ नित
 + १३ १ ५

म नी ध नी प ध नी सा | नी सा रे सा नी ध म म
ह री च र चा सु न | ली . . . जै . म नु
+ १३ १ ५

प ध नी सा ||
वा . . .

अन्तरा

म ऽ प नी सा नी सा सा | रे गु रे सा रे नी सा ऽ
का . म क्रो . ध म द | ला . भ मो . ह को .
+ १३ १ ५

नी नी नी ऽ नी सा ऽ सा | नी सा रे सा नी ऽ ध ऽ प ऽ
चि त से . व हा . य | दी . . . जै
+ १३ १ ५

रे गु रे गु सा रे नी सा | रे गु म प म ध म प
मी . रा . के . प्र भु | गिरि ध र ना . ग र
+ १३ १ ५

म नी ध नी प ध नी सा | नी सा रे सा नी ध म म
ता . हि के रं . ग में | भी . . . जै . म नु
+ १३ १ ५

प ध नी सा ||
वा . . .

राग-काफी—तीनताल(मध्यलय)

टेर टेर रसना थकि हारी । विनय करे नितही तिहारी ॥
मन मंदिर मे नाथ विराजो । मिटे बिथा जिय की अति भारी ॥

स्थायी

म	प	ध	प	ग	रे	ग	म	म		प	प	म	पध	नि	ध	प		धधधध
०	०																	
टे	.	.	र	टे	.	र	र	स		ना	थ	कि	हा.	.	री	.		विनयक
+				१३									१		५			+

पध	सान्नि	धप		रे	म	पध	पमपग	रे	
००	००						००		
रे.	.	नित		ही	.	तिहा.	री	.	
१३				१			५		

अंतरा

ममपध	सा	ध	सा		सारें	ग	रें	सा	नि	ध	सा	सा	सा	s	रें	नि	ध	प	
					००														
मनमं.	दि	र	मे		ना.	थ	वि	रा	.	जो	मि	टे	.	बिथा	जिय	.			
+		१३			१			५				+			१३				

रेम	पध	निधप	मपधप	ग	रे	
००	००	००	००००			
की.	...	अति.	भा.	...	री	
१			५			

राग काफी—तीनताल (मध्यलय)

आज कैसी ब्रिज में धूम मचाई । पिचकारी रंग उडत है सारी ॥
बिंदरावन की सुंदर शोभा । चकित भये सब नारी ॥
राग-बोध (देवघर)

(१०४)

स्थायी

म म म म म ध प ग् ग् रे ग् सा रे म म | प प नी प ध
आ . ज कै सी त्रि ज मे धू . . म म | चा ई पि च .
५ + १३ १ ५

प
सा रे नी सा ऽ नी ध गम रे म पध म प | ग् रे ||
का . . . री . रंग उ ड त . है . | सा री ||
+ १३ १

अंतरा

प
म म पध सा नी सा | ध सा रे ग् रे सा नी सा नी ध प ध ध ध ध
बिंद रा . व न की | सुं . . . द र शो . . भा . चकितभ
+ १३ १ ५ +

ध ध म
नी धप | ग् ऽ रे ||
ये सब | ना . री ||
१३ १

राग काफी-ताल दीपचंदी

कैसे रहूँ घर आज बजीबन सरस मुरली ॥

ए मुरली तो निकसी बजी है कृष्ण बजावे सुधरिया ।

होवे व्याकुल , त्रिज वनिता सब ।

उठ चली सब हरि की डगरिया ॥

—राग बोध (देवधर)

(१०५)

स्थायी

सारे रेग मग रेग s म म | प s प s सारे रेग मग रेग s
कैसेर हूँ घर | आ. ज. कैसेर हूँ
+ ११ १ ४ + ११

मम | प प म पधनीसा s नीधम ग रे s s रेपमप | ग रे
घर | आज व जी व . न सरसमु रली
१ ४ + ११ १

रे ग म प धनीसा नी धम ग रे सा s ||
.....

४

अंतरा

रे s रेग रे रेग मग रेग s s सारे सा | प पध धसा
ए . मुरली तो नीकसी | व जी . . .
१ ४ + ११ १

सारे सारेग s नीसारे नीधम पध | पधनीसा s नी सा s
हूँ कृष्णव जा . वेसु | घ री या .
४ + ११ १ ४

धध धनीसा नीधनी s धपध | नीनी सा रे सा नीधनी s धप
होवे व्या कुल . | त्रिज व नि ता सब
+ ११ १ ४

नीनीनी सा नी सा नी प मप ग रे रेग मप धनीसा नीधमग रे सा s ||
उ ठ च ली . . स ब हरिकीडग री . . . या .
+ ११ १ ४

राग बागेश्री

यह काफी थाट का राग है। यह कानडे का प्रकार है। इसमें गंधार और निषाद कोमल लगते हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं। आरोह में रे और प वर्जित मानते हैं। इसलिए जाति ओडव संपूर्ण है। कुछ लोग इसे षाडव-संपूर्ण राग मानते हैं। पंचम का अल्प प्रयोग है। अधिकतर पंचम का प्रयोग अवरोह में तान के समय किया जाता है। मध्यम धैवत और मध्यम-निषाद की संगति है। अवरोह हमेशा 'म ग् रे सा' इस प्रकार होगा, नहीं तो बहार राग की छाया आ जाती है। वादी स्वर मध्यम और संवादी षड्ज। गाने का समय रात का दुसरा प्रहर है।

आरोह :—निं सा ग् मध निं सां ।

अवरोह :—सां निं धम, पध, म ग् रे सा ।

पकड :—मधं, निंध, म, ग् रे सा ।

आलाप

- (१) सा, निं धं, सा, धं निं, धं सा, रे, सा, धं निं सा म, ग् रे, म, ग् रे सा ।
- (२) धं निं सा म, ग् रे, म, म ध, म, ग् म, ध म, म प ध, म, सा म ग्, म ध म, ध म, ग् रे सा, निं धं निं सा ।
- (३) निं सा म, ग्, म ध म, म ध निं ध म, निं ध, म, म ग्, ध म ग्, निं ध, म ग्, सा म ग्, म ग्, रे सा, निं धं निं सा ।

(४) सा नि धं, मं धं नि सा, रे सा, धं नि सा म, म ग्, ग् म ध, म ध नि सां, ध नि सां नि ध, सां नि ध, म ध नि ध, म ग्, नि सां नि ध म ग्, म नि, ध, म ग्, म प ध, म ग्, म ग् रे सा ।

(५) ग् म ध, नि ध, म ध नि ध, सां, नि ध, म ध नि सां, रें सां, रें नि सां, नि ध, ध नि ध सां, नि ध, म, सां नि ध, म, ध नि, ध म, म प ध, म ग्, म नि ध सां नि ध, म ग्, म ग् रे सा ।

(६) ग् म ध नि सां, नि ध सां, सां नि रें सां, रें नि सां, नि ध, म ध नि सां ध नि सां, ग्, रें सां, नि सां रें, सां, नि ध, ध प ध नि, ध म, म प, म प ध, म ग्, रे सा ।

(७) म ग्, म ध नि सां, सां नि ध नि सां, ध नि रें, सां, ध नि सां ग्, रें सां, सां मं, ग्, रें सां, मं ग्, रें सां, नि सां रें सां, नि सां नि ध, रें सां, नि सां नि ध, सां नि ध, म ग्, नि ध, म ग्, ध, म ग् म प ध, म ग्, रे, ग्, रे सा ।

तानें

(१) नि सा ग् रे सा, नि सा ग् म ग् रे सा, नि सा ग् म ध ध म ग् रे सा, नि सा ग् म ध नि ध म ग् रे सा, नि सा ग् म ध नि सां नि ध प म ग् रे सा, नि सा ग् म ध नि सां रें सां नि ध प म ग् रे सा, नि सा ग् म ध नि सां ग् रें सां नि ध प म ग् रे सा, नि सा ग् म ध नि सां ग् मं ग् रें सां नि ध प म ग् रे सा ।

(२) नि सा म ग् म ग् रे सा, नि सा म ग् म ध म ग् रे सा, नि सा म ग् म ध नि ध म ग् रे सा, नि सा म ग् म ध नि सां नि ध प म ग् रे सा, नि सा म ग् म ध नि सां रें सां

नि ध प म ग् रे सा, नि सा म ग् म ध नि सा रें ग् रें सा
 नि ध प म ग् रे सा, नि सा म ग् म ध नि सा मं ग् रें सा
 नि ध प म ग् रे सा ।

(३) सा नि ध प म ग् रे सा, सा रें सा नि ध प म ग् रे सा,
 सा रें ग् रें सा नि ध प म ग् रे सा, सा ग् मं ग् रें सा नि
 ध प म ग् रे सा, मं-ग् रें सा नि ध प म ग् रे सा, ग्-रें
 सा नि ध प म ग् रे सा, रें-सा नि ध प म ग् रे सा, सा-
 नि ध प म ग् रे सा ।

(४) नि सा म ग् म ध नि ध म ग् म ध नि सा नि ध प म ग्
 रे सा, ग् म ध म ग् म ध नि सा नि ध म ग् म ध नि सा
 रें सा नि ध प म ग् रे सा, म ध नि ध म ध नि सा नि ध
 म ध नि सा रें सा ध नि सा रें ग् रें सा नि ध प म ग्
 रे सा, ध नि सा नि ध नि सा रें सा नि ध नि सा मं
 ग् रें सा नि ध प म ग् रे सा ।

(५) म म ग् म ग् रे सा, ध ध म ध म ग् रे सा, नि नि ध नि
 ध प म ग् रे सा, सा सा नि सा नि ध प म ग् रे सा, रें रें
 सा रें सा नि ध प म ग् रे सा, मं मं ग् मं ग् रें सा नि ध
 प म ग् रे सा ।

(६) ग् म म ग् म म ग् म म ग् रे सा, म ध ध म ध ध म ध
 ध म ग् रे सा, ध नि नि ध नि नि ध नि नि ध प म ग् रे
 सा, नि सा सा नि सा सा नि सा सा नि ध प म ग् रे सा,
 सा रें रें सा रें रें सा रें रें सा नि ध प म ग् रे सा, ग् मं मं
 ग् मं मं ग् मं मं ग् रें सा नि ध प म ग् रे सा ।

(७) नि सा ग् म ध नि सा नि ध प म ग् रे सा, नि सा ग् म ध
 ग् म ध नि सा रें सा नि ध प म ग् रे सा, सा ग् रें सा नि

ध प म ग् रे सा, नि सा ग् म ध म ग् म ध नि सा रें सा
 नि ध नि सा ग् मं ग् रें सा नि ध प म ग् रे सा, म म ग्
 म ग् रे सा, ध ध म ध ध म ध ध म ग् रे सा, सा सा नि
 सा सा नि सा सा नि ध प म ग् रे सा, रें रें सा रें सा नि ध
 प म ग् रे सा, मं मं ग् मं मं ग् मं मं ग् रें सा नि ध प म
 ग् रे सा, नि सा ग् म ध ग् म ध नि सा ध नि सा ग् मं
 ग् रें सा नि ध प म ग् रे सा ।

राग बागेश्री-तीनताल (मध्यलय)

म ग् रे सा नि सा ध नि सा म ग् म ध म ध नि सा
 + १३ १ ५ +
 ध नि सा रें सा नि ध म ग् रे सा ||
 १३ १ ५

अंतरा

ग म ध नि सा सा सा नि सा रें सा नि सा नि ध मं ग् रें सा रें सा नि ध
 + १३ १ ५ + १३
 सा नि ध म ग् रे सा ||
 १ ५

राग बागेश्री-भूपताल

राग लक्षण

धन्य बागेशरी, कहत गुनि वैखरी ।
 समय मध रात मत, करुण रस निर्मरी ॥
 मेल मृदु गनि जनित, तीव्र सुर रिध वसत ।
 अल्प पंचम लसत, सम्पूरन सुरपुरी ॥

अंश मध्यम वसत, स्वर प्रथम संवदत ।

नि-सा-म सुर अनुवदत म ध नि ध म ग म युती ॥

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

म गु रे सा नि धं नि सा सा ऽ | नि सा म
ध . न्य वा . गे . स री . क ह त
१ ३ + ८ १ ३

गु रे रे गु रे सा ऽ | सा सा ध ध ध
गु नि वै . ख री . स म य म ध
+ ८ १ ३

सा नि ऽ ऽ नि ध ध | म नि ध सा नि ध म प म प ध
रा . . . त म त क रु . ण र स नि . . .
+ ८ १ ३ +

म
गु रे सा ||
रि .

अन्तरा (१)

म ऽ म नि ध ऽ नि सा सा सा सा सा |
मे . ल मृ . दु ग नि ज नि त
१ ३ + ८

सा नि ऽ सा रे रे सा नि रे सा नि ध ध सा
ती . . . व सु र रि ध व स त अ
१ ३ + ८ १

सां मं गं रे सां नि सां नि ध ध | सां नि ध
 ल्प ३ पं ० च म ल स त | सं १ पू ३
 + द

म म म प ऽ म प ध म रे सा ||
 र न सु ० र पु ० पु री . ||
 + द

अंतरा (२)

म ऽ म नि ध नि सां सां नि सां सां |
 अं . श म ध्य म व स त |
 १ ३ + द
 नि सां रे रे सां नि सां रे सां नि ध ध |
 स्व र प्र थ म सं . व द त |
 १ ३ + द
 नि सां मं गं रे नि सां नि सां रे सां नि ध ध |
 नि स म सु र अ नु . व द त |
 १ ३ + ८
 म ध नि ध म गं म गं रे सा ||
 म ध नि ध म ग म यु ति . ||
 १ ३ + ८

राग वागेश्री-चारताल

धन धन धन मात गंग, चाहत मुनिजन प्रसंग ।
 प्रगटी रघुनाथ चरन, करन सुख बिहारी ॥
 दीन्ही विधि बूंद डार, और अनंग शीश धार ।
 आई मृत मध्य लोक, संतन को प्यारी ॥

स्थायी

नि ध म ग रे सा धं नि सा सा ऽ सा
 ध न ध न ध न मा त गं ग
 १ + ५ + ९ ११
 नि सा ग म ध ध ध नि ध म ऽ म
 चा ह त मु नि ज न प्र सं ग
 १ + ५ + ९ ११
 ग म ध नि ध नि सा ऽ सा रे सा नि
 प्र ग टी र धु ना थ च र न
 १ + ५ + ९ ११
 सा नि ध म ग रे सा धं नि सा ग म ध
 क र न सु ख वि हा री
 १ + ५ + ९ ११

अंतरा

ग म ध नि ध नि सा ऽ सा नि सा सा
 दी न्ही वि धि बूं द डा र
 १ + ५ + ९ ११
 नि सा रे सा नि सा नि ध म ग म म
 अ रि अ नं ग शी श धा र
 १ + ५ + ९ ११
 सा म ग रे सा सा रे सा नि सा नि ध म
 आ ० ० ई मृ त म ध्य लो क
 १ + ५ + ९ ११
 ग म ग रे सा ऽ धं नि सा ग म ध
 स न्त न को प्या री
 १ + ५ + ९ ११

(११३)

राग बागेश्री-भूमराताल (ख्याल)

देर सुनो बृज राज दुलारे ।

दीन मलीन हीन शुभ गुण सों, आय परयो हूँ द्वार तिहारे ॥

काम क्रोध अती कपट लोभ मद, सोई माने निज प्रीतम प्यारे ॥

अमत रह्यो इन संग विषयन में, तो पद कमलन मैं उर धारे ॥

स्थायी

सा नि ध प ध | सा नि ध प ध म ग स रे सा
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
दे . र . सु नो . जि . ज रा . . ज दु
१ ४

रे स स सा स धं नि सा सा | म स स म ध स ध
ला . . रे . दी . न म ली . . न ही . न
+ ११ १ ४

ध ध ध ध प ध नि स स ध म ग म ध नि
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
शु भ गु ण सों आ . य प
+ ११

सा स स सा नि रे सा नि ध स ध ध प
रथो . . ४ . . द्वा . र . ति हा .
१ +

ध नि ध प ध ||
० ० ० ० ०
११

अन्तरा

ग० म० ध० नि० सा० नि० ध० नि० सा० ऽ ऽ नि० सा०
 का० म० क्रो० ध० अ० ती० . . क० प०
 ११ १
 रे० सा० नि० नि० सा० रे० सा० नि० ध० ध० ध० ध० म०
 ट० लो० भ० . . म० द० सो० ई० मा० ने०
 + ११
 ग० म० ध० ध० ध० प० ध० नि० ध० म० ग० म०
 नि० ज० प्री० त० म० प्या० रे० . . अ० म०
 १ ४ +
 ध० नि० सा० नि० सा० नि० सा० रे० सा० नि० सा०
 त० र० ह्यो० . . इ० न० सं० ग० वि० ष०
 ११ १
 नि० सा० रे० सा० नि० ध० सा० म० गु० रे० सा० नि० सा०
 य० न० में० तो० . . प० द० क० म०
 ४
 नि० सा० रे० सा० नि० ध० ध० ध० ध० प० ध० नि० ध० प० ध०
 ल० न० में० उ० र० धा० रे० . . ११
 +

राग-चागेश्री-तीनताल (मध्यलय)

बेला चमेली हार गूँथ लाई, मन मोहन के कारण सखिया,
जाई जुई मन भाई ॥

कमल केलि कामोदी चंपा, गंध सुहाई, मोतियन मौलसिरी
औ सेवति अनुपम मालति अति सरसाई ॥

स्थायी

सा ऽ निध पध | सा ऽ निधपध धमऽम पमपधप |
 वे . ला . च | मे ली . हा . रा . थ |
 १३ १ ५ + १३

गु ऽ रे ऽ गु सा ऽ नि सा नि सा रेसा | नि सारे सा नि धं धनि
 ला ई . म न मो . . . | ह . न . के . का .
 १ ५ + १३ १ ५

सा म म भ म मपध प गु म | मधनि सा नि सारेसा नि धपम ग रे
 र न सखिया जा . . . ई जु | ई . म न भा . . . ई
 + १३ १ ५ +

सा नि सा ||

अन्तरा

नि सा रे सा नि धपध | सा ऽ निध पधध मग म गु रेसा |
 क म ल के . . . लि | का . . मो . . दी . . चं . पा . |
 १३ १ ५ + १३

नि सारेसा नि सारेसा नि धं धनि साम ममम | मपधप गु म
 गं ध सु हा . . . ई . मोति यन मौलस | री . . . औ .
 १ ५ + १३ १

धनि धनि सा सा सा सा धनि सा गु रे सा | नि धपध धनि सा
 से व ति अनुपम मा . . . ल ति | अतिसर सा . .
 ५ + १३ १ ५

धनि रेंसा नि धपम गुरे ॥
 ०००० ०००० ०० ॥
 ३ +

राग वागेश्री-तीनताल (मध्यलय)

जमुना तट बंशी बजाई, या मनमोहन गिरधारी ने ॥
 मधुर मधुर आलाप अलापत, भक्तन के मन हर लेई ॥
 —व्यासकृति

स्थायी

म म सा म म
 धप नी साधनी धप ग ग रेंसा नि सा ग मध ग ममधनि
 जमु ना . . . तट बं सीब जा ई . . . या मनमो.
 + १३ १ ५ +

सा सासासासा नि सारें सानि सानि ध ॥
 ह न गि रि धा . . री . . ने . ॥
 १३ १ ५

अंतरा

मममम धनि धनि सासासा रेंनि सासा धनि साम
 मधुरम धुर आ ला प अ ला प त म क्तन
 + १३ १ ५ +

ग रेंसानि धध पधनि ध नि सा ॥
 के . मन हर ले . . ई . . ॥
 १३ १ ५

राग बागेश्री-तीनताल (मध्यलघु)

तराना

तनन देरेना तदानी दीम् तदीम् तन देरेना देरेना तदीम् दीम्
 दीम् ॥ देरेना देरेना दीम् नितान देरेना, तानोम् देरेना तदरे दानि
 तन तदानि तद्रेदानि धि धि रुक् धेत् ता धि दिधिकिट तक
 थुंकतात कत गिधि तिटगिधि दिता तक् कडधान दिग् गदिगन
 धा, तक् कडधान दिग् गदिगन धा, तक् कडधान दिग्
 गदिगन धा ॥

स्थायी

रेसा नि धपध नि ऽ नि नि ध सा नि ध म ग रे मग |
 तन न देरे ना त दा नि दी मू त |
 १३ १ ५ + १३

रेसा ऽसासा साधधध ध धपध नि ऽ नि ध सा ऽ नि ध ||
 दी मू त न दे रेनादे रे ना त दी मू दी मू दी मू ||
 १ ५ + १३ १ ५ +

अंतरा

मममम नि नि नि ध नि सा ऽ सा नि सा सा नि सासा
 दे रेनादे रे ना दी मू नि ता न दे रे ना ता नोम् दे
 + १३ १ ५ + १३

सासासा रेसा नि ध पधनि नि धमग म ग रे सासा धध
 रे ना त द रे दा नित न तदा नि त द्रे दानि धि धि
 १ ५ + १३ १

धधध धध धध धधधधध धधध धधधध धधधध धनि
 ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ०० ००
 रुक्धेत् तार्धिदिधिकिटतकथुं कतात कतगिधि तिटगिधि दिता
 ५ + १३ १

ध नि सा सासासा सासासासा मं ग रे रे सा s सासासासा सासा
त कड धा . नदिग् ग दि ग न धा . त कड धा . नदिग् ग दि ग न
५ + १३ १

ग रे रे सा s सानि धनि पधनि s ||
धा त कड धा . नदिग् ग दि गिन धा . ||
५ +

राग सारंग (बिंद्रावनी सारंग)

यह काफी थाट का राग है। इस राग में दोनों निषाद लगते हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध। आरोहावरोह में गंधार और धैवत वर्जित हैं। जाति ओडव-ओडव। आरोह में शुद्ध निषाद और अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है। वादी स्वर ऋषभ और संवादी पंचम है। म-रे और प-रे की स्वर संगतीयाँ हैं। विश्रांति स्थान सा, रे और प हैं। गाने का समय दोपहर का है।

आरोहः—नि सा रे म प निसा

अवरोहः—सां नि प म रे सा।

पकडः—निसारे, मरे, पमनिप, मरे, नि सा

आलाप

- (१) सा, नि सा, नि सा रे, रे, म रे, सा रे म रे, नि सा।
- (२) सा, नि सा रे, रे, सा रे म, रे, रे म प, म रे, रे म, रे सा, नि पं, मं पं नि, सा।
- (३) नि सा रे म, रे, रे म पं, प, म रे, म प नि प, म रे रे म प नि प, म रे, नि प म रे, प, म रे, म रे, सा रे, नि सा।
- (४) नि सा रे म प, प म नि प, प म रे, रे म प नि, म प म नि प, म रे, रे, सा रे म, रे म प, म प नि प म रे, नि सा रे म प, म रे, म रे, नि सा।
- (५) नि सा रे म प नि प, नि प, म प सा, नि प म प नि सा, नि प, सा, नि प, नि प म रे, रे म प नि प म प नि सा,

नि, प, म प, म नि, प, नि, प नि, प म रे, म रे, प म, नि,
प, सां, नि, प, म रे, रे म प, म रे निं सा ।

(६) म प नि, सां, सां नि, म प नि सां, सां, नि सां रें, रें,
नि सां, सां रें नि सां, नि, प, म प नि सां रें, सां रें, नि सां,
नि, प, म प नि सां रें नि सां, नि, प, म प सां, नि, प,
प, म नि, प म रे, निं सा रे म प नि, प म प नि सां,
नि, प म रे, प, म रे, निं सा ।

(७) म प नि, सां, सां, नि सां रें, रें, सां, सां रें मं, रें, पं, मं रें,
नि सां, सां रें नि सां, नि, प, म प नि सां रें नि सां रें नि
सां, नि, प, सां, नि, प, नि, नि, प म रे, सा रे म प नि, म
प नि सां रें मं, रें पं, मं रें, सां, नि, प, म रे, निं सा ।

तानें

(१) निं सा रे म रे सा, निं सा रे म प म रे सा, निं सा रे म
प नि, प म रे सा, निं सा रे म प नि सां नि, प म रे सा,
निं सा रे म प नि सां रें सां नि, प म रे सा, निं सा रे म प
नि सां रें मं रें सां नि, प म रे सा, निं सा रे म प नि सां रें
मं पं मं रें सां नि, प म रे सा ।

(२) निं सा रे म रे म प म रे सा, निं सा रे म रे म प नि, प म
रे सा, निं सा रे म प नि, म प नि सां नि, प म रे सा, निं सा
रे म प नि, म प नि सां रें सां नि, प म रे सा, निं सा रे
म प नि, म प नि सां रें मं रें सां नि, प म रे सा, निं सा रे
म प नि, म प नि सां रें मं पं मं रें सां नि, प म रे सा ।

(३) सां नि, प म रे सा, सां रें सां नि, प म रे सा, सां रें मं रें
सां नि, प म रे सा, सां रें मं पं मं रें सां नि, प म रे सा,

पं-मं रें सां नि् प म रे सा, मं-रें सां नि् प म रे सा, रें-सां
नि् प म रे सा, सां-नि् प म रे सा ।

(४) निं सा रे म रे सा रे म प नि् प म प नि सां नि् प म रे सा,
रे म प नि् प म प नि सां रें सां नि सां रें मं रें सां नि् प
म रे सा, म प नि सां नि् प नि सां रें मं रें सां रें मं पं मं
रें सां नि् प म रे सा ।

(५) म म रे म रे सा, प प म प म रे सा, नि् नि् प नि् प म
रे सा, सां सां नि सां नि् प म रे सा, रें रें सां रें सां नि् प म
रें सा, मं मं रें मं रें सां नि् प म रे सा, पं पं मं पं मं रें
सां नि् प म रे सा ।

(६) रे म म रे म म रे म म रे सा, म प प म प प म प प म रे
सा, प नि् नि् प नि् नि् प नि् नि् प म रे सा, नि सां सां नि
सां सां नि सां सां नि् प म रे सा, सां रें रें सां रें रें सां रें रें
सां नि् प म रे सा, रें मं मं रें मं मं रें मं मं रें सां नि् प म रे
सा, मं पं पं मं पं पं मं पं पं मं रें सां नि् प म रे सा ।

(७) निं सा रे म प नि सां नि प म रे सा, निं सा रे म प नि सां
रें सां नि् प म रे सा, सां रें मं रें सां नि् प म रे सा, निं सा
रे म रे सा रे म प नि् प म प नि सां रें सां नि सां रें मं पं मं रें
सां नि् प म रे सा, म म रे म रे सा, प प म प प म प प म
रे सा, नि् नि् प नि् प म रे सा, सां सां नि सां सां नि सां
सां नि् प म रे सा, रें रें सां रें सां नि् प म रे सा, मं मं रें
मं मं रें मं मं रें सां नि् प म रे सा, निं सा रे म प रे म प नि
सां म प नि सां रें नि सां रें मं पं मं रें सां नि् प म रे सा ।

राग सारंग—तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

रे म प नी प म रे सा | रे सा s रे सा नि नि नि सा s
 + सा नि सा | रे म प नी प म प नि नि नि नि सा सा सा |
 नि सा रे सा नि नि प म प सा नि सा s सा प नि
 प नि s नि प म रे सा ||
 १ ५ + १३

अंतरा

म म s म प प नि प | नि सा s सा नि सा सा नि नि
 + नि नि सा नि सा | रे म रे सा नि नि प म प सा नि सा
 सा प नि | प नि नि प म रे सा |
 १३ १ ५ +

राग सारंग-एक ताल (द्रुतलय)

राग लक्षण

धन धन धुन सारंग, औडव रूप वरजित ध-ग ।
 गावत हरि वृन्दावन, संग मुरली अति सुहाग ॥
 आरोहन सुध नी लसत, सोही मृदु अवरोही रहत ।
 प-रि सुर संवाद करत, नीपमरे संगत सोहत ॥
 पं० खरे शास्त्री,

(१२३)

स्थायी

म रे प म नि प रे म प म रे ऽ सा नि सा सा रे म रे सा
ध न ध न धु न सा . . . रं . ग औ ड व रु . प .
१ + ५ + ९ ११ १ + ५

सा
नि सा रे सा नि पं नि सा रे म प नि प नि प म रे सा सा
व र जि त ध ग गा . व त ह रि वृ . . . न्दा व न
+ ९ ११ १ + ५ + ९ ११
सा सा प नि प रे म प म रे ऽ सा ||
सं ग मु र ली अ ति सु . हा . ग ||
१ + ५ + ९ ११

अंतरा

म प नि नि नि नि सा नि सा सा सा नि सा रे म रे सा
आ रो . ह न सु ध नी ल स त सो ही मृ दु अ व
१ + ५ + ९ ११ १ + ५
नि सा रे सा नि प प प रे सा रे नि सा नि सा रे सा प
रो . . ही र ह त प रि सु र सं . वा . . द क
+ ९ ११ १ + ५ + ९
नि प नि प म रे रे म प नि प म रे ऽ सा सा ||
र त नी प म रे सं . ग त सो . ह त ||
११ १ + ५ + ९ ११

राग सारंग-धमार ताल

माया मोहनी मन हरनी ।

चपल चाल विशाल लोचन, सबल सारङ्ग धरन । माया०
काम बाण विलोकि मारे, योगिया वश करन ॥ माया०

स्थायी

रे म प नि प | सा s नि प s नि प म रे रे सा ||
 मा . या . . | मो . ह नी . म न . ह र नी ||
 ११ १ ६ +

अंतरा

म म म प s प प नि s प म प प प | म म म रे म प
 च प ल चा . ल वि शा . ल लो . च न | स ब ल सा . रे
 १ ६ + ११ १ ६
 नि प म रे रे सा रे म प s | म s प नि s नि नि सा s
 . ग . ध र न मा . या . | का . म बा . ण वि लो .
 + ११ १ ६ +
 सा नि सा सा s | म s रे सा s नि प म रे रे सा ||
 कि मा . रे . | यो . गि या . व श . कर न ||
 ११ १ ६ +

राग सारंग-वि० तीन ताल (ख्याल)

बौरे जिन अल्ला कोऊ न जानिये करना था सो कर चुका
 और जी चाहे सो करे ॥ अन्तरा ॥ अदारङ्ग साची कहत है अत
 कामन की करीम रीफे मर काहू की मन का मति कर सोही
 देत भरे ॥

स्थायी

म प सा नि s s प म रे नि सा | रे म s s प नि प s
 बौ . रे . . जि . न अ . | ला . . . को . . .
 १३ १ ५

(१२५)

नि

नि नि सा ऽ ऽ नि प रे ऽ रे रे | सा ऽ सा सा रे ऽ ऽ प
ऊ ना . . . जा नि ये . कर | ना . . . था सो . . . क
+ १३ ? ५

म प रे ऽ नि सा ऽ ऽ म म प ऽ | नि सा ऽ नि सा रे
र चु का . . . और जी . | चा . . . हे .
+ १३ १

म ऽ रे सा ऽ सा नि सा नि म प ऽ ||
सो . . . क . रे . . .
५ +

अंतरा

नि सा ऽ नि ऽ प प रे रे सा रे सा म रे म प म प
अ दा . रं . ग सा ची क ह त है अ त का म न की
१३ १ ५

सा नि ऽ नि नि म प नि नि सा रे सा | प म प म रे रे
क री . म री . मे म र का हू की | म न का . म ति
+ १३ १

नि सा ऽ नि सा रे म रे सा सा सा नि ऽ म प ||
क र . सो ही दे . . . त भ रे . . .
५ +

राग सारंग-भूपताल

मधु मद न मन करो प्रभु से तुम ।
 साँची कहिये कौन निभावे ॥
 जब कोकिला कूँक उठी चहुँ ओर ।
 शीतल मंद समीर भावे ॥

स्थायी

नि	नि	सां	सां	सां	नि	प	म	प	५	म	रे	५
म	धु	म	द	न	म	न	.	क	.	.	रो	.
१		३			+			८				
रे	म	रे	म	प	नि	म	प	५	५	रे	५	सा
प्र	भु	से	.	.	.	.	.	.	.	तु	.	म
१		३								+		८
म	५	म	५	म	प	५	नि	प	५		म	प
सा	.	ची	.	क	ही	.	ये	.	.		कौ	.
१		३			+		८				१	
नि	सां	रें	सां	५	नि	प	नि	सां				
न	.	नि	भा	.	वे	.	.	.				
३		+			८							

अंतरा

म	म	प	नि	प	नि	सां	५	नि	सां	सां	नि	सां	सां	५	रे	सां
ज	ब	को	.	.	कि	ला	.	कू	.	क	ऊ	.	ठी	.	च	हुँ
१		३			+			८			१		३			
५	प	नि	प	रे	५	रे	५	प	रे	५	नि	सां	सां	म	प	नि
ओ	.	र	शी	.	त	.	ल	मं	.	.	द	स	.	मी	.	
८			१		३		+		८			१		३		

रे सा ५ नि प नि सा ॥
 र भा . . वे . . ॥
 + ८

राग सारंग-तीनताल (मध्यलय)

बनहि बन श्याम चरावत गैया ।

सुभग अंग सुखमा को सागर, कर विच लकुट धरैया ।

पीत वसन दमकत दामिनि सम, मुरली अधर बजैया ।

धावत इत उत दाउ के संग, खेल करत लरकैया ॥

स्थायी

मरेम पन्निमप सा नि पम रे नि सा | रे सा ५ सा नि नि नि नि नि
 बनहि व . न . श्या म च . रा व त | गैया . . सु भ ग अ
 ५ + १३ १ ५ +

सा सा नि सा | रेम पन्निमप रे नि सा मपनिनि नि सा सा सा |
 . ग सु ख | मा . को . . सा ग र करविच ल कु ट ध |
 १३ १ ५ + १३

सारें सानिप ॥
 १

अन्तरा

ममम पप नि नि | सा सा सा नि सा सा सानिनिनि सा सा सा सा |
 पीत व सन द म | क त दा मिनि स म मु रली अध र व |
 + १३ १ ५ + १३

सारैँनिसां ऽ पन्नि मप मप निसां रेमरेसां | निसां निसारैसां
 ० ० ० ० ~ या . . . धा. व त इतउ त दा उ के . . .
 १ ५ + १३ १ ५
 नि प ऽ रे सारैँ निसां निप | पन्नि सान्निप ||
 ० ० ० ०
 सं ग . खे ल क र त ल र कै . . . था ||
 + १३ १

राग भीमपलासी

यह काफी थाट का धनाश्री अंग का राग है। इसमें गंधार और निषाद कोमल लगते हैं। आरोह मे रे और ध वर्जित हैं। अवरोह संपूर्ण है। इसलिये जाति ओडव-संपूर्ण है। इस राग में मध्यम स्वर मुक्त है। आरोह में 'नीं सा म' यह प्रयोग अधिक होता है। सा, म, प यह विश्रांति स्थान हैं। इसका वादी मध्यम और संवादी षड्ज है। गाने का समय दिन का चौथा प्रहर है।

आरोह :—निं सा ग् म प निं सां ।

अवरोह :—सां निं ध प म ग् रे सा ।

पकड़ :—ग् म प, ग् म, ग् रे सा ।

आलाप

- (१) सा, निं, सा, पं निं, सा, निं, सा ग्, रे, सा, सा निं, धं पं, मं पं निं, पं निं, सा, ।
- (२) निं, सा, पं निं, सा, निं, सा ग्, रे सा, निं, सा म, म ग्, सा म ग्, ग्, रे सा, निं, सा, निं धं पं, मं पं निं, पं निं, सा ।
- (३) निं, सा म, म ग्, सा ग् म प, प, म प, ग् म, ग् म ग् प, प म, निं, सा ग् म प म, प म ग् म, ग् म प, ग् म, निं, सा ग् म प ग् म, सा ग् म, ग्, रे सा ।
- (४) निं, सा ग् म प, ग् म ग् प, प, म प ग् म, ग् म प निं, ध प, ध प म प ग् म, निं, सा ग् म प, ग् म प निं, ध प, म प ग् म, सा ग् म प, ग्, रे सा ।

- (५) ग् म प नि, नि, ध प, म प नि, ध प, प नि, ध, म प
नि, ध प, म प नि, सां नि, ध प, प नि, ध प ग् म ग् प
म नि, प सां, नि, ध प, सां नि, ध प, नि, ध प, ध प म प,
ग् म, नि, सा ग् म प, ग् मं, ग्, रे सा, नि, धं पं, पं नि, सा ।
(६) ग् म प नि, नि, नि, नि, प नि, सां, सां नि, प नि, सां,
नि, सां ग्, रें सां, रें सां, नि, सां नि, प नि, सां, नि,
ध प, म प सां, नि, ध प, म प नि, ध प, ध प, म प ग् म,
ग् म प नि, सां, नि, ध प, म प ग् म, ग् म प, ग्, रे
सा, नि, नि, नि, पं नि, सा ।

- (७) प प, ग् म प नि, सां, सां नि, प नि, सां ग्, रें सां, ग्,
रें सां, नि, सां मं, ग्, रें सां, नि, सां ग् मं पं, ग् मं, ग्, रें सां
मं ग्, रें सां, ग्, रें सां, रें सां, नि, प नि, सां, नि, ध प,
म प ग् म, प सां, प नि, ध प, प, म प ध प, ग् म,
नि, सा म, ग् प, म नि, प सां, नि, सां ग्, सां रें, नि, सां,
प नि, ध प, म प, ग्, सां ग् म प, ग्, रे सा, नि, पं नि, सा ।

ताने

- (१) नि, सा ग्, रे सा, नि, सा ग् म ग्, रे सा, नि, सा ग् म प म
ग्, रे सा, नि, सा ग् म प नि, ध प म ग्, रे सा, नि, सा ग् म
प नि, सां नि, ध प म ग्, रे सा, नि, सा ग् म प नि, सां रें सां
नि, ध प म ग्, रे सा, नि, सा ग् म प नि, सां ग्, रें सां नि, ध
प म ग्, रे सा, नि, सा ग् म प नि, सां ग् मं ग्, रें सां नि, ध
प म ग्, रे सा, नि, सा ग् म प नि, सां ग् मं पं मं ग्, रें सां
नि, ध प म ग्, रे सा ।

- (२) नि, सा ग् म प ग् म प म ग्, रे सा, नि, सा ग् म प ग् म
प नि, ध प म ग्, रे सा, नि, सा ग् म प ग् म प नि, सां नि,

- ध प म ग् रे सा, नि् सा ग् म प ग् म प नि् सा रें सा नि्
 ध प म ग् रे सा, नि् सा ग् म प ग् म प नि् सा ग् रें सा
 नि् ध प म ग् रे सा, नि् सा ग् म प ग् म प नि् सा ग्
 मं ग् रें सा नि् ध प म ग् रे सा, नि् सा ग् म प ग् म प
 नि् सा ग् मं पं मं ग् रें सा नि् ध प म ग् रे सा ।
- (३) सा नि् ध प म ग् रे सा, सा रें सा नि् ध प म ग् रे सा, सा
 ग् रें सा नि् ध प म ग् रे सा, सा ग् मं ग् रें सा नि् ध प म
 ग् रे सा, सा ग् मं पं मं ग् रें सा नि् ध प म ग् रे सा, पं-
 मं ग् रें सा नि् ध प म ग् रे सा, मं-ग् रें सा नि् ध प म
 ग् रे सा, ग्-रें सा नि् ध प म ग् रे सा, रें-सा नि् ध प म
 ग् रे सा, सा-नि् ध प म ग् रे सा ।
- (४) नि् सा ग् म प म ग् म प नि् ध प म प ग् म प नि् सा
 नि् ध प म प ग् म ग् रे सा, ग् म प म ग् म प नि् ध प
 म प ग् म प नि् सा नि् ध प म ग् रे सा, प नि् सा नि् प
 नि् सा रें सा नि् प नि् सा मं ग् रें सा नि् ध प म ग् रे
 सा, नि् सा रें सा नि् सा ग् रें सा नि् सा ग् मं पं मं ग् रें
 सा नि् ध प म ग् रे सा
- (५) म म ग् म ग् रे सा, प प म प म ग् रे सा, नि् नि् प नि्
 ध प म ग् रे सा, सा सा नि् सा नि् ध प म ग् रे सा, रें रें
 सा रें सा नि् ध प म ग् रे सा, ग् ग् सा ग् रें सा नि् ध प
 म ग् रे सा, मं मं ग् मं ग् रें सा नि् ध प म ग् रे सा, पं पं
 मं पं मं ग् रें सा नि् ध प म ग् रे सा ।
- (६) ग् म म ग् म म ग् म म ग् रे सा, म प प म प प म प प
 म ग् रे सा, प नि् नि् प नि् नि् प नि् नि् ध प म ग् रे
 सा, नि् सा सा नि् सा सा नि् सा सा नि् ध प म ग् रे

सा, सा रे रे सा रे रे सा रे रे सा नि ध प म ग् रे सा,
 सा ग् ग् सा ग् ग् सा ग् ग् रे सा नि ध प म ग् रे सा,
 ग् मं मं ग् मं मं ग् मं मं ग् रे सा नि ध प म ग् रे सा,
 मं पं पं मं पं पं मं पं पं मं ग् रे सा नि ध प म ग् रे सा ।

(७) नि सा ग् म प नि सा नि ध प म ग् रे सा, नि सा ग् म प
 ग् म प नि सा रे सा नि ध प म ग् रे सा, सा ग् रे सा नि
 ध प म ग् रे सा, नि सा ग् म प म ग् म प नि सा नि प
 नि सा ग् मं ग् सा ग् मं पं मं ग् रे सा नि ध प म ग् रे
 सा, म म ग् म ग् रे सा, प प म प प म प प म ग् रे सा,
 नि नि प नि ध प म ग् रे सा, सा सा नि सा सा नि सा
 सा नि ध प म ग् रे सा, ग् ग् सा ग् रे सा नि ध प म ग्
 रे सा, मं मं ग् मं मं ग् मं मं ग् रे सा नि ध प म ग् रे
 सा, नि सा ग् म प ग् म प नि सा प नि सा ग् मं सा ग्
 मं पं मं ग् रे सा नि ध प म ग् रे सा ।

राग भीमपलासी—तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

नि ध प ग् ५ रे सा रे | नि सा ग् म ग् म प नि प नि
 + १३ १ ५ + १३
 सा रे | नि सा नि ध प म ग् म ||
 १ ५

अंतरा

ग् म प ग् म प ग् म | प नि ५ प ५ नि सा नि सा मं ग्
 + १३ १ ५ ५

रें सां नि सां | रें सां नि ध प म ग् म ||
 १३ १ ५

राग भीमपलासी-तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

गावत बुध जन सव विधि सुन्दर, रागिनी भीमपलासी को ॥
 आरोहन में रि-ध सुर वरजित, सम्पूरन प्रतिलोम कहावत ।
 मृदु ग-नि मध्यम अंश सुहावत, अपर अन्ह शुभ सूचक को ॥
 पं० खरे शास्त्री

स्थायी

ग मप नि धप ग् ग् रेसा | निनि सामग्रे सासा निसा मम
 गा . . वत बु ध जन | स व विधिसुं . द र रा गि नीभी
 + १३ १ ५ + १३
 मप | ग्रेसा ग मप सां || नि धप ग् ग् रेसा |
 मप लासी. को . . | गा वत बु ध जन |
 १ ५ + १३

अंतरा

प प पन्निमप ग् म | प प नि नि सां सां सांसां निनि सांसां
 आरोह. न. में . | रि ध सु र व र जित सं पू र न
 + १३ १ ५ + १३.
 सांसां | पन्नि सारें सारें निसा नि धप पप पम ग् म मम |
 अ ति | लो . . म क हा . व . त मृदु गनि म. ध्यम |
 १ ५ + १३

ग॒म नि॒प ग॒ रेसा नि॒नि सा म s म मप | ग॒ममम ग॒म
 अ॒ं श सु हा वत अ प र अ न्ह शुभ | सू चक को
 १ ५ + १३ १ ५

प सा || नि॒ धप ग॒ग रेसा
 गा वत बु ध जन
 + १३

राग भीमपलासी—चारताल

निरख मदन मूरत श्याम,
 सुन्दर के छवि देखे, मोपे वरनी न जाय ॥
 मोर मुकुट कमल नयन, भौहें धनुष केसर तिलक ।
 अलक भाल कुंडल छवि, गले सोहे मुक्त माल छवि छाये ॥

स्थायी

नि॒ सा म ग॒ रे सा | नि॒ सा ग॒ म प प प
 नि॒ र ख म द न | मू र त श्या म सु
 + ९ ११ १ + ५ +

s प म प ग॒ म | ग॒ म प नि॒ सा s प म प
 न्द र के | छ वि दे खे मो
 ९ ११ १ + ५ +

ग॒ म म प | ग॒ s म ग॒ रे सा ||
 पे व र | नी न जा य ||
 ९ ११ १ + ५

अन्तरा

प॒ ऽ प॒ प॒ ग॒ म॒ प॒ सा॒ सा॒ सा॒
मो॒ र॒ मु॒ कु॒ ट॒ क॒ म॒ ल॒ न॒ य॒ न॒
१ + ५ + ९ ११

सा॒ ऽ सा॒ नि॒ सा॒ म॒ ग॒ रे॒ सा॒ नि॒ ध॒ प॒
भौ॒ हे॒ ध॒ नु॒ ष॒ के॒ स॒ र॒ ति॒ ल॒ क॒
१ + ५ + ९ ११

प॒ प॒ प॒ ग॒ म॒ म॒ प॒ ग॒ म॒ ग॒ रे॒ सा॒
अ॒ ल॒ क॒ भा॒ ल॒ कु॒ ड॒ ल॒ छ॒ वि॒
१ + ५ + ९ ११

प॒ प॒ ऽ ग॒ म॒ म॒ प॒ सा॒ सा॒ सा॒ सा॒ सा॒
ग॒ ले॒ सो॒ हे॒ मु॒ क्त॒ मा॒ ल॒
१ + ५ + ९ ११

प॒ ग॒ म॒ ग॒ रे॒ सा॒
छ॒ वि॒ छा॒ ये॒
१ + ५

राग भीमपलासी—भूपताल

राम भज राम भज, राम भज रे मना ।

होय जनम सुफल जाय, यम यातना ॥

भव ताप बिनसाय, सब पाप बिलगाय ।

सुख सब मिलहि आय, सहे क्यों वेदना ॥

स्थायी

प म प ग सा ग म ग रे सा | नि नि पं नि सा नि सा
 रा . म भ ज रा . म भ ज | रा . म भ ज रे .
 १ ३ + द १ ३ +
ग रे सा ऽ | प ऽ प नि ध प ध प म ग | म म नि
 . म ना . हा . य ज न म सु फ ल जा . य य
 द १ ३ + द १ ३
सा ग रे सा नि सा ग म प ग म ||
 म या . त ना ||
 + द

अन्तरा

प प ग म म प नि नि सा सा | नि नि सा ऽ रें नि सा
 भ व ता . प वि न सा . थ | स व पा . प वि ल
 १ ३ + द १ ३ +
नि ध प | प प रें सा रें नि सा नि ध प | नि ध प म प
 गा . य | सु ख स व मि ल हिं आ . य | स हे . क्यों .
 द १ ३ + द १ ३
ग म म नि सा ग म ||
 वे . द ना ||
 + द

राग भीमपलासी—(ख्याल) वि० एकताल

अब तो बड़ी बेर भई टेरत हूँ, तुमको मेरे रब साईयाँ ।
 भँवर जाल में आन फँसे भवसागरते पार करो मेरे साईयाँ ॥

(१३७)

स्थायी

सा रे नि सा नि सा म | म ग ग प ध म प
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 अब तो व डी वे र
 ९ ११ १ + ५ +

म ग म ग रे सा नि सा रे रे सा
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 भ ई ते र त
 ९ ११ १ + ५ +

रे नि सा नि सा रे नि धं प नि नि सा नि
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 तु म को मे रे
 ९ ११ १ + ५ +

सा म म ग ग प ध म प
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 र ब सा
 ९ ११ १ +

म ग म ग रे सा
 ० ० ० ० ० ०
 याँ
 ५ +

अंतरा

म म प सा सा सा सा रे नि सा रे रे सा
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 भं व र जा ल मे आ न
 ९ ११ १ + ५
 नि नि सा नि ध प प प म ग म ग रे सा
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 फ से भ व सा ग र ते
 + ९ ११ १ + ५

रे नि सा सा म म ५ गु ५ म गु ५ | गु प ५
 पा . . र क रो . . मे . . रे . .
 + ९ ११ १
 ध म ५ ध प नि ध म प ग म गु रे सा ||
 सा इ . या . ||
 + ५ +

राग भीमपल्लासी—तीनताल (मध्यलय)

ठाढ़ी प्रेम नदी के तीरा ।

सुध बुध भूलि विकल मोहन को, गुन गन गावत मीरा ॥

पुनि पुनि चौकि चौकि मग हेरत, पल न धरत उर धीरा ।

सपना बनी मिलन अभिलाषा, नींद विरह की पीरा ॥

—पं० बालकृष्ण राव

स्वरकार :— स० द० आपटे

स्थायी

म सा
 गु म गु म प गु म प नि ध प गु रे सा | नि सा सा ५ नि सा ५
 ठा ढी . . प्रे . . . मन दीके . | ती . रा
 ५ + १३ १ ५

म म म
 नि नि सा सा गु रे सा | नि सा गु म प प गु म गु म प नि प नि सां रे
 सु ध बु ध भू लि वि | क ल मो . ह न को . गु न ग न गा .
 + १३ १ ५ + १३

नि सा | प नि सा नि ध प ||
 व त | मी . . . रा . ||
 १

अंतरा

पप पप मप ग् म | पपनि नि सा सा सा नि नि सा म ग रे सा सा |
 पुनि पुनि चौ कि चौ | किमग हे र त प ल न ध र त उ र |
 + १३ १ ५ + १३

सा सा
 प नि सारे नि ध प नि नि सा म म स प | ग् म पप नि नि
 धी . . . रा . . . स प ना वनी मि | ल न अभि ला .
 १ ५ + १३ १ ५

सा प नि सारे सारे नि सा प नि | म प ग् म ||
 षा नी . . . द वि र ह की | पी . रा. ||
 + १३ १

राग भीमपलासी-तीनताल (मध्यलय)

सबसे ऊँची प्रेम सगाई ।

दुर्योधन को मेवा त्यागो , साग विदुर घर पाई ॥
 जूठे फल शबरी के खाये , बहु विधि प्रेम लगाई ।
 प्रेम के वश नृप सेवा कीन्हीं , आप बने हरिनाई ॥
 राजसु यज्ञ युधिष्ठिर कीन्हों , तामे जूठ उठाई ।
 प्रेम के वश अर्जुन रथ हाक्यों , भूल गये ठकुराई ॥
 ऐसी प्रीत बढ़ी वृन्दावन , गोपिन नाच नचाई ।
 सूर क्रूर इस लायक नहीं , कहँ लगि करौ बड़ाई ॥

स्थायी

ग् म प सा नि ध प म प ग् रे नि सा | ग् रे सा ऽ ऽ प नि सा
 स व से . ऊँ . ची . . प्रे . म स | गा . ई . . दु र्यो ध
 ५ + १३ १ ५ + १३

सा सा | नि सा गु रे सा नि ध प प प प ध | म प गु म ||
 न को | में . वा त्या गो सा ग वि डुर धर | पा . ई . ||
 १ ५ + १३ १

अंतरा

प प म प गु म | प नि प नि सा सा नि नि नि नि प नि सा गु
 जू ठे फल श ब | री के खा . . ये ब हु वि धि प्रे . . .
 + १३ १ ५ + १३

रे सा | नि सा नि ध प प प प म प गु म | गु म प नि म प गु
 म ल | गा . ई . . प्रेम के व श नृ प | से . वा . . . की
 १ ५ + १३ १ ५

रे सा नि ध प म प गु म | प सा नि ध प म ||
 . न्ही आ प व ने . ह रि | ना . ई . . . ||
 + १३ १

राग भीमपलासी—तीनताल (मध्यलय)

तराणा

तन तुंद्रे ना तन ना तारे तदरे दानी तदारे दानी तदानी ॥
 दिर दिर तन दिर दिर तन तदरे तदरे दानी तन तदारे दानी
 नितारे दानी तारे दानी तदरे तदरे दानी ॥

स्थायी

नि सा गु म | प ५ ५ नि प गु म गु म प |
 त न तुं द्रे | ना . . त न ना . ता रे त ||
 १३ १ ५ + १३

(१४१)

म गु रे सा सा म गु रे सा रे नि सा ॥
 द रे दा नी त दा रे दा नि त दा नी ॥
 १ ५ +

अंतरा

प प प प म प गु म प नि नि नि सा सा सा सा |
 दिर् दिर् त न दिर् दिर् त न त द रे त द रे दा नी |
 १ ५ + १३

नि सा म गु रे सा नि सा रे नि सा नि ध प प |
 त न त दा रे दा नी नि ता रे दा नी ता |
 १ ५ + १३

प गु म म गु म गु प म गु रे सा ॥
 रे दा नी त द रे त द रे दा नी ॥
 १ ५ +

राग पीलू

यह काफी थाट का संकीर्ण प्रकृति का राग है। गंधार, धैवत और निषाद के दोनों रूपों का प्रयोग होता है। कोमल ऋषभ का प्रयोग भी होता है और कुशल गायक तीव्र मध्यम भी कुशलता से लगाते हैं। राग का चलन अधिकतर मंद्र और मध्य सप्तक में है। जाति संपूर्ण मानी जाती है। कुछ लोग जाति ओडव संपूर्ण मानते हैं। रे और ध आरोह में वक्र हैं। पंचम और गंधार कोमल की संगती है। वादी स्वर गंधार और संवादी निषाद है। इस राग में ठुमरी, टप्पा, भजन और अन्य गीत गाये जाते हैं। गाने का समय दिन का तिसरा प्रहर है। परन्तु संकीर्ण राग होने से समय अनिश्चित रहता है।

आरोह :—निं सा ग मप निं सां ।

अवरोह :—सांनि ध्प, निं धपमग, रे सा ।

पकड़ :—निं सा ग, रेसा, पं, धं, निंसा ।

आलाप

(१) सा, निं सा, निं सा ग, रे सा, ग, रे ग, रे सा, निं, सा निं धं, पं, पं धं, निं सा, ग, रे सा ।

(२) निं सा ग, ग, म ग, रे सा, निं सा रे, सा निं धं, पं, पं निं, सा ग, ग, रे म ग, रे सा, ग म प, ग, रे सा ।

(३) ग, रे सा, सा ग, ग म, ग, रे सा, निं सा ग म प, ग, रे सा

ग म ध् प, ग्, रे ग्, रे सा, प ग्, रे सा, ग्, रे सा, रे, नि सा,
ध्, नि सा नि ध्, मं पं नि, सा, नि सा ग्, रे सा ।

(४) सा नि, ध्, नि सा नि, ध्, पं, पं ध्, नि, मं पं ध्, नि, ध्,
नि सा, सा रे, सा नि, सा ग्, ग म ग्, प म ग्, नि सा, ग
म प ग्, प म प, ग्, ग्, रे ग्, रे, नि, सा रे, सा नि ध्, पं,
पं नि सा ग्, नि सा ।

(५) नि सा ग म प, ग म ध् प, प ध् म प, ग म ग प, ध् म प नि
नि ध् प, प ध नि, ध प, नि, ध प, म प ध, प, ग म, सा
ग म प, ध् प, ग म ग, सा नि, ध प, ग म ग, सा ग, म प
ग्, रे सा ।

(६) नि सा ग म प नि, ध् प, ध् प ध् नि, ध् प, नि ध् प, ध् म, प
नि सा, रें सा, सा, नि, ध प, ध नि, सा, नि, ध प, ध प, ग
म ग, सा ग म प ध् प, सा प, ग्, ग्, रे म ग्, रे सा नि,
ध्, पं, ध्, नि, सा ।

(७) ग म प नि, सा, ग्, रें सा, सा ग्, रें ग्, रें, सा, सा नि, ध्
प, प नि सा रें सा, नि सा नि, ध् प, ग म प ध नि, ध् प,
नि, ध ध् प, प नि, प ग्, सा ग म प नि, प ग्, म ग्, रे
सा नि, सा रे, सा नि, ध्, पं, मं पं नि, सा ग्, रे सा ।

ताने

(१) नि सा ग्, रे नि सा, नि सा ग म ग्, रे नि सा, नि सा ग
म प म ग्, रे नि सा, नि सा ग म प ध् प म ग्, रे सा,
नि सा ग म प नि ध् प म ग्, रे सा, नि सा ग म प नि
सा नि ध् प म ग्, रे सा, नि सा ग म प नि सा रें, सा नि ध्
प म ग्, रे सा, नि सा ग म प नि सा रें ग्, रें सा नि ध् प म
ग्, रे सा ।

- (२) सा नि सा, सा नि धं नि सा, सा नि धं पं धं नि सा,
 सा नि धं पं मं पं धं नि सा, धं नि सा नि धं पं मं पं
 धं नि सा, सा रे सा नि धं पं मं पं धं नि सा, धं नि सा
 रे सा नि धं पं मं पं धं नि सा, धं पं धं नि सा रे ग्
 रे सा नि सा रे सा नि धं पं मं पं धं नि सा ।
- (३) सा नि ध् प म ग् रे सा, सा नि सा रे सा नि ध् प
 म ग् रे सा, सा रे ग् रे सा नि ध् प म ग् रे सा,
 ग्-रे सा नि ध् प म ग् रे सा, रे-सा नि ध् प म ग्
 रे सा, सा-नि ध् प म ग् रे सा, नि-ध् प म ग् रे सा,
 ध्-प म ग् रे सा, प-म ग् रे सा ।
- (४) नि सा ग म सा ग म प म ग् रे सा, नि सा ग म प
 ग म ध् प म ग् रे सा, नि सा ग म प ग म प ध नि
 ध प म ग् रे सा, नि सा ग म प ग म प नि ध् प
 म ग् रे सा, नि सा ग म प ग म प नि सा रे सा नि
 ध् प म ग् रे सा, नि सा ग म प ग म प नि सा ग् रे
 सा नि ध् प म ग् रे सा ।
- (५) नि सा ग म प म ग म प ध नि ध् प म ग म प नि
 सा नि ध् प म ग् रे सा, ग म प ध् प म ग म प
 ध नि ध् प म ग म प नि सा रे सा नि ध् प म ग्
 रे सा, प नि सा नि ध् प म प नि सा रे सा नि सा
 ग् रे सा नि ध् प म ग् रे सा ।
- (६) ग् ग् रे ग् रे सा, म म ग् म ग् रे सा, प प म प म
 ग् रे सा, ध् ध् प ध् प म ग् रे सा, नि नि ध् नि
 ध् प म ग् रे सा, सा सा नि सा नि ध् प म ग् रे

(१४५)

सा, रें रें सां रें सां नि ध् प म ग् रे सा, गं गं रें गं,
रें सां नि ध् प म ग् रे सा।

(७) निं सा ग म प नि सां नि ध् प म ग् रे सा, सां नि
सां रें सां नि ध् प म ग् रे सा, सा नि ध् पं मं पं
ध् निं सा, सां रें गं रें सां नि ध् प म ग् रे सा
निं सा, निं सा ग म प ग म प नि सां रें गं रें सां नि
ध् प म ग् रे सा, निं सा ग म प म ग म प ध नि ध्
प म ग म प नि सां रें गं रें सां नि ध् प म ग् रे
सा, गं गं रें गं रें सां नि ध् प म ग् रे सा, मं पं
निं सा ग् रे निं सा ग म प म ग म प ध नि ध् प
म प नि सां रें सां रें गं रें सां नि ध् प म ग् रे सा।

राग पीळू-तीनताल (मध्यलय)

स्थायी

पं नि निं सा ऽ निं पं ध् | निं सा ग् रे सा नि सा ग् रे ग् ऽ रे सा रे |
+ १३ १ ५ + १३
निं सा रे सा निं ध् पं ||
१ ५

अंतरा

निं सा ग म प ध् प | म ग म प ग् रे निं सा सा ग् रे म ग् रे सा रे |
+ १३ १ ५ + १३
निं सा रे सा निं ध् पं ||
१ ५
१०

(१४६)

राग पीळू-तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

पीळू राग सकल नित गावत । सब सुर तीवर मृदुल लगावत ॥
चढ़त हि तीवर सुर सब होवत । मृदुल सुरन सोहत जब उतरत ॥
ग-नि वादी सम्वादी सम्मत । रूप मनोहर संकीरन अत ॥
पं० खरे शास्त्री

स्थायी

पं० पं० सा सासा | गू रे सानि सारे गू गू रे रेपमप गूरेसारे |
पी. लू. रा ग स | क ल नित गा. . व त सबसुर ती. वर |
+ १३ १ ५ + १३

नि नि सारे सानि धं पं ||
मृ दु लल गा. व त ||
१ ५

अंतरा

नि सा ग म प प प | ग म पधमप गू रे नि सा सा गू रे म
च ढ त हि ती वर | सुर स. ब. हो. व त मृ दु ल सु
+ १३ १ ५ +

गूरे सारे | निनि सारे सानि धं पं ||
रन सो. | ह त जब उत र त ||
१३ १ ५

राग पीछू-तीनताल (मध्यलय)

रघुविर तुमको मेरी लाज ।

सदा सदा मै शरण तिहारो, तुम बड़े गरीब निवाज ॥

पतित उधारन विरद तिहारो, श्रवण न सुनी अवाज ॥

हौं तो पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज ॥

अघ खंडन दुःख भंजन जनके, यही तिहारो काज ॥

तुलसी दास पर किरपा करिये, भक्ति दान देहु आज ॥

स्थायी

नि सा रे ग सा रे प प म ध प ग रे ग रे सा नि ।
 र धु वि र तु म को मे री
 ५ + १३

सा सा सा धं पं धं नि सा सा ग रे ग सा रे ग
 ला ज सदा सदा मै शरण ति हा
 १ ५ + १३ १

रे सा नि सा ग ग ग ग सा ग म प ध म प
 री तु म बड़े गरी व नि
 ५ + १३

ग म ग रे सा नि
 वा ज
 १

अंतरा

नि सा ग म प ध प ग म प ध म प ग म ग रे
 प तित उ धारन विरद ति हा
 १३ १ ५

सा ऽ सा ॥
ला . ज ॥
१

ॐ रे रे ग म ऽ ग ग म प ऽ ग प म ग रे ग ऽ
० ० उ उ ० ० ० उ उ ० — उ उ उ उ उ उ उ ०
. . या
+

(१४९)

अंतरा

$\underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{नि}} \quad \underline{\text{सा}} \quad \underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{म}} \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{प}} \quad | \quad \underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{म}} \quad \underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{नि}} \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{ग}}$
 $\circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad | \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ$
 $\cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad | \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot$
 $+$ $\text{तु} \quad \text{म} \quad \cdot \quad \text{ही} \quad \cdot \quad \text{ठा} \quad \cdot \quad \text{कुर}$ $\text{तु} \quad \text{म} \quad \cdot \quad \text{पर} \quad \text{मे}$
 १३ १ ५
 $\text{रे ग् रे सा} \quad \underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{म}} \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{ध}} \quad \underline{\text{सा}} \quad \underline{\text{नि}} \quad \underline{\text{ऽ}}$
 $\circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ$
 $\cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot$
 $+$ $\text{श्व र} \quad \text{तु म} \quad \cdot \quad \text{ही} \quad \cdot \quad \text{रा} \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot$
 १३
 $\underline{\text{ध}} \quad \underline{\text{प}} \quad | \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{म}} \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{सा}} \quad \underline{\text{सा}} \quad \underline{\text{नि}} \quad \underline{\text{सा}} \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{म}} \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{ध}} \quad \underline{\text{म}} \quad \underline{\text{प}}$
 $\circ \quad \circ \quad | \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ$
 $\cdot \quad \cdot \quad | \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot$
 $\text{म र} \quad \text{मै} \quad \cdot \quad \text{या} \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \text{क}$ $\text{नै} \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot$
 १ ५

$\underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{म}} \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{रे}} \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{सा}} \quad ||$
 $\cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad ||$
 $+$

राग पीलू-दादरा ताल

डग मग हाले मोरी नैया रे कन्हैया बिना ।

गहरी नदिया नाव पुरानी, खेवन हार मतवारो । रे कन्हैया ।

स्थायी

$\underline{\text{नि}} \quad \underline{\text{सा}} \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{म}} \quad | \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{ऽ}} \quad \underline{\text{नि}} \quad \underline{\text{प}} \quad | \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{प}} \quad \underline{\text{म}} \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{म}} \quad \underline{\text{प}}$
 $\circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad | \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad | \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ$
 $\cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad | \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad | \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot$
 $+$ $\text{ड} \quad \text{ग} \quad \text{म} \quad \text{ग} \quad | \quad \text{हा} \quad \cdot \quad \text{ले} \quad \cdot \quad \text{मो री} \quad | \quad \text{नै} \quad \cdot \quad \cdot \quad \text{या} \quad \text{रे} \quad \cdot \quad \cdot$
 १ $+$ १ $+$

$\underline{\text{ध}} \quad \underline{\text{प}} \quad | \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{रे}} \quad \underline{\text{ग}} \quad \underline{\text{सा}} \quad \underline{\text{रे}} \quad \underline{\text{नि}} \quad | \quad \underline{\text{सा}} \quad \underline{\text{ऽ}} \quad ||$
 $\circ \quad \circ \quad | \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad \circ \quad | \quad \circ \quad \circ \quad ||$
 $\cdot \quad \cdot \quad | \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad \cdot \quad | \quad \cdot \quad \cdot \quad ||$
 $\text{क} \quad \text{नै} \quad \cdot \quad \cdot \quad \text{या} \quad \cdot \quad \text{बि} \quad | \quad \text{ना} \quad \cdot \quad ||$
 १ $+$ ५

अंतरा

नि सा ग म | प प s प s s | ग s म ग म प ध् प |
 ग ह री . | न दि . या . . | ना . . व . . . पु |
 + १ + १ +

ग रे ग रे सा s | नि नि नि नि ध सा नि | ध नि s
 रा . . नी . . | खे व न हा . . | . . .
 १ + १ + १

प s नि प | ग प म ग रे ग ग म प ध् प | ग रे ग सा
 र . म त | वा . रो . . . रै . . . क | नै . . या
 + १ + १ +

सा
 रे नि | सा s ||
 . बि | ना . ||
 १

राग आसावरी

यह आसावरी थाट का आश्रय राग है। गंधार, धैवत और निषाद कोमल लगते हैं। बाकि के सब स्वर शुद्ध। आरोह में गंधार और निषाद वर्ज्य हैं। इसलिए जाति ओडव-संपूर्ण है। गान समय दिन का दुसरा प्रहर है। वादी स्वर धैवत और संवादी गंधार। उत्तरांग वादी राग होने से उत्तरांग में स्पष्ट होता है। विश्रांति स्थान सा, ग, प और ध हैं। प-ग और ध-ग की संगती है। अवरोह में 'रे' नी 'ध' इस प्रकार षड्ज को छोड़ देते हैं। कभी कभी तानों में आरोह में निषाद का प्रयोग होता है। जौनपुरी इससे मिलता जुलता राग है।

आरोह :—सा, रे म प, ध, सा।

अवरोह :—सा, नि ध, प, मप, ग, रे सा।

पकड़ :—मपध् मप, ग, रेसा।

आलाप

- (१) सा, सा रे, सा, सा रे ग, रे, सा, सा रे म, रे म प, प ग, रे, सा, धं, धं, सा।
- (२) सा रे म, रे म प, ध्, ध्, ध् प, ध् म, म प ध् म प, ग, सा रे प ग, सा रे, सा, धं, धं, सा।
- (३) सा रे म प ध्, ध्, प, ध् म, म प, नि ध्, प, ध् म, म प ध्, सा, नि ध् प, ध् म, रे म प नि, ध्, प, ध् म, म प ध् म प, ग, ग, रे सा।

(४) सा रे म प ध्, ध्, ध्, सा, रें सा, सा रें, सा रें ग्, रें, सा, रें नि, ध प, म प सा, नि ध् प, म प नि, ध् प, ध् म, म प म प, म प ध् म प, ग्, रे, सा ।

(५) म प ध्, ध्, ध् सा, नि सा, सा रें, सा, सा रें, प, ग्, रें, सा, रें नि ध् प, म प ध्, ध्, नि, ध्, प, ध् म, रे म प ध् म प, ग्, सा रे प ग्, रे, सा ।

तानें

(६) सा रे म ग् रे सा, सा रे म प म ग् रे सा, सा रे म प ध् प म ग् रे सा, सा रे म प नि ध् प म ग् रे सा, सा रे म प ध् सा नि ध् प म ग् रे सा ।

(७) सा नि ध् प म ग् रे सा, रें सा नि ध् प म ग् रे सा, ग् रें सा नि ध् प म ग् रे सा, सा रे म प ध् सा रें ग् रें सा नि ध् प म ग् रे सा ।

(८) म प नि नि ध् प म प ध् प म ग् रे सा, नि सा रें रें सा नि ध् प म प नि नि ध् प म प ध् प म ग् रे सा, सा रे म प नि नि ध् प म प ध् सा रें रें सा नि ध् प म प ध् सा रें म ग् रें सा नि ध् प म ग् रे सा ।

(९) नि नि ध् नि नि ध् प म ग् रे सा, रें रें सा रें सा नि ध् प म ग् रे सा, म म ग् म म ग् रें सा नि ध् प म ग् रे सा, प प म प प म ग् रें सा नि ध् प म ग् रे सा ।

(१०) सा रे म प ध् प म प नि नि ध् प म प ध् सा सा नि ध् प म प ध् सा रें रें सा नि ध् प म प ध् सा रें म ग् रें सा नि ध् प म ग् रे सा ।

(१५३)

राग आसावरी-तेवरा ताल

स्थायी

म प सा ध् ध् प प | म प ध् ग ग रे सा |
 १ ४ ६ १ ४ ६
ध् ध् ध् सा सा रे सा | ग ग ग रे रे सा सा |
 १ ४ ६ १ ४ ६
सा रे म प प ध् ध् | ध् ग रे सा नी ध् प ||
 १ ४ ६ १ ४ ६

अंतरा

म म म प प ध् ध् | सा सा सा नी सा सा सा | ध् ग रे
 १ ४ ६ १ ४ ६ १
सा सा नी सा | नी सा रे नी ध् प प | म प नी ध् प
 ४ ६ १ ४ ६ १ ४
म प | म प ध् ग ग रे सा ||
 ६ १ ४ ६

राग आसावरी-तीन ताल (मध्यलय)

राग लक्षण

कहत गुनी राग आसावरी, द्वितीय प्रहर दिन बुध जन संमत ।
 मेल मधुर अति मृदुल गंध-नी युत, सुन्दर विलसत री ॥
 पूर्ण थाट रचना मन भावत, ध-ग वादी संवादी संमत ।
 आरोहण में ग-नी सुर वरजित, प-ग-ध त्रय रस राग बढ़ावतरी ॥
 पं० खरे शास्त्री

(१५४)

स्थायी

नी म सा म म
म प सा ध प | ग रे सा रे म प ऽ सा
क ह त गु नी | रा . ग आ . सा . व
१३ १ ५

नी नी नी
ध प ध म प सा ध प | प सा नी सा ध ध प प
री . . क ह त गु नी | द्विती य प्र ह र दि न
+ १३ १ ५

म सा नी
ग ग ग ग रे ऽ सा सा ध ऽ धं धं सा सा रे सा
बु ध ज न सं . म त मे . ल म धु र अ ति
+ १३ १ ५

नी नी
रे रे म म प प ध ध | ध ग रे सा नी सा सा रे नी सा
मृ दु ल ग ध नी यु त | सु . न्द र वि ल स . त .
+ १३ १ ५

नी नी म सा म म
ध प ध म प सा ध प | ग रे सा रे म प ऽ सा ||
री . . क ह त गु नी | रा . ग आ . सा . व ||
+ १३ १ ५

अन्तरा

नी
म ऽ प ध ऽ ध ध ध | सा ऽ सा सा रे नी सा सा
पू . र्ण था ट र च | ना . म न भा . व त
+ १३ १ ५

रेम ०० म १	रेमपधु न...	मप ग् सारे ०० ही .. ३	म ग् के म +	सा रे सा s न मे . द
सा s दी . १	रे म s जिये . ३	म प s दा . +	नी प ध् ध् न गु रु द	
नी ध् s सा s रें सा . हे . व १ ३	सारेंगु रेंसा ०० मा... +	नी म नीसारेंसा ध् प लीं . द		

अन्तरा

म <u>s</u> सि. १	नी प ध् <u>s</u> चि ये . ३	नी सो <u>s</u> वे . +	सा रेंनी सा ०० ल त. न द
नी ध् <u>s</u> भा . १	सा <u>s</u> रें ग . मे ३	सारेंगु <u>s</u> ०० रे... +	सा रें सा <u>s</u> को . . द
नी नी अ मृ १	नी नी नी त फ ल ३	नी सा नी ०० ल गे . +	सा नी म ध् म ह र द

(१५७)

म प	नी	ध् सा रे	सारेंगु रेंसा	नीसारेंसा	नी म
ह र	डा . .				ध् प
१	३	+	८		री .

राग आसावरी-वि० ख्याल-भूमरा ताल

ख्याल

नेवरिया भांभरी, आन परी मँभधार ॥
ना कोऊ पीर मिले ना कोऊ संग न साथी
नाम लिखे कर पार ॥

स्थायी

म सा	म ध्
ध् म पसा ध् प ग् रे मम	प स प म सप ध् स
०० ०० ०० ०० ००	०० ०० ०० ००
ने व रि . या . भां . भ	री . आ . न प .
११	४

नी सा	नी सा
ध् सा s s s सो परे	रे sसा s रेंसा नीसा नीसा
०० ०० ०० ००	०० ०० ०० ००
री . . . मँभ	धा
+	१ ४

नी	नी
रेंसा नी सा ध् पध् नी ध् म	ध् म
०० ०० ०० ००	०० ००
... . र . . . ने व	
+	

अन्तरा

नी नी
 स म ध ध ध सा सा सा सा | सा स स ध सा रे सा रे स
 ना कोऊ पी . . . र मि | ले . . ना कोऊ सं . . .
 + ११ १ ४

सा नी नी
 रे सा रे रे सा नी सा नी सा रे रे सा नी सा | ध स प स म स प ध स
 ग न सा थो . . ना म ली .
 + ११ १ ४

नी नी
 ध सा स स सा प रे | रे स सा स रे रे सा नी सा नी सा
 ये . . . कर पा
 + ११ १ ४

नी
 रे रे सा नी सा ध प ध नी ध म ||
 स . . . र . . . ने व ||
 +

राग-आसावरी तीनताल (मध्यलय)

भोर भई मिलन भइलवा, मोरे मा पीतम ढिंगवा,
 रास मंदिरवा बाजे मंजिरवा ॥ आवो गावो नाचो सब
 सखियां सहेली, सदारंग गले लाग रहिलवा ॥

स्थायी

प म प सा ध ध प म | प ध म प ग स स स रे सा
 भो र् भ ई मि ल न भ | ई ल वा . . मो रे
 + १३ १ ५

रे स म स नी प म
 प स ध स नी स ध प म प ग स
 मा . . . पी : त म ङि ग वा .
 + १३ १ ५

स रे रे सा रे रे सा स सा सा स सा सा नी सा ध प
 . रा स् मं दि र वा . बा जे . मं दि . र वा .
 + १३ १ ५

अन्तरा

म म म म प प ध ध ध ध सा सा नी सा सा स
 आवो गा वो ना चो स ब स खि यां स हे . ली .
 + १३ १ ५

प ग स ग स ग रे सा नी सा रे ग रे सा नी सा ध प
 स दा . रं . ग ग ले ला . . . ग र हि ल वा .
 + १३ १ ५

राग आसावरी-तराना-तीनताल (मध्यलय)

ना दिर दिर दा नित दानि दीम तननन देरेना तन देरेना
 तन देरेना दानि उदन दीम ततन नित्रोम् तोम ततन देरेना ॥
 दीम दीम तोम तोम तननन देरेना नादिर दिर दिर तुंदिर दिरदिर
 दिर दिर तन देरेना तन देरेना तन देरेना तन देरेना ॥

स्थायी

प सा नी सा नी ध म प नी स ध प ग ग सा रे
 नादिर दिर दा नि त दा नी दीम् . त न न न दे .
 + १३ १ ५

म ऽ प ऽ ऽ ऽ ध् म | प नी ध् ऽ प ऽ ध् प
 रे . ना . . त न | दे रे ना . . त न
 + १३ १ ५

म प ग् ऽ रे ऽ सा ऽ | सा सा सा रे म म प प
 दे रे ना . दा . नी . | उ द न दीम् . त त न
 + १३ १ ५

मप ध् ऽ सा ऽ सा सा रे | सा रे ग् रे सा नी ध् प म |
 नि.त्रोम् . तोम् . त त न | दे . . रे . ना . . . |
 + १३ १ ५

अन्तरा

म ऽ म ऽ प ऽ ध् ऽ | ध् ध् सा सा रे नी सा सा ऽ
 दीम् . दीम् . तोम् . तोम् . | त न न न दे रे ना .
 + १३ १ ५

ध् ध् ध् ध् सा सा सा रे | रे ग् रे सा नी सा ध् प
 ना दिर्दिर्दितुं दिर्दिर्दिर् | दिर्दिर् त न दे रे ना .
 + १३ १ ५

प म म ग् ग् रे रे सा | सा रे म ग् ग् रे रे सा
 त . न . दे . रे . | ना . त . न . दे .
 + १३ १ ५

सा नी नी सा सा रे रे सा | सा नी नी ध् ध् प ध् म ||
 रे . ना . त . न . | दे . रे . ना . . . ||
 + १३ १ ५

राग भैरव

यह भैरव थाट का आश्रय राग है। इसमें ऋषभ और धैवत कोमल लगते हैं। वाकि सब स्वर शुद्ध लगते हैं। जाति संपूर्ण-संपूर्ण। आरोह में ऋषभ और अवरोह में निषाद का प्रयोग अल्प है। वादी धैवत और संवादी ऋषभ। धैवत और ऋषभ आंदोलित होने से राग प्रकट होता है और रंजकता बढ़ती है।

ग
म रे की मीड का प्रयोग भी आवश्यक है। राग का चलन मंद्र सप्तक में अधिक है। कालिंगाडा इससे मिलता जुलता राग है। गाने का समय प्रातःकाल का प्रथम प्रहर है।

आरोहः—सा रे ग म प ध् नी सा।

अवरोहः—सा नी ध् प म ग रे सा।

ग
पकडः—ग म ध् ध् प, ग म रे रे सा।

आलाप

नि नि ग
(१) सा, धं, धं, सा, धं, नि सा रे, सा ग, ग म रे,
रे सा

ग ग
(२) सा ग, ग म, रे, रे, ग म प, म, ग म रे, रे, ग म प,
प, म, म, ग म रे, रे, रे, सा, धं सा।

(३) नि सा ग म प, प, ग म प, ग म ध्, ध्, प, प म, ग म ग रे, रे, ग म प, म ग म, रे, ध्, प ध्, म प, ग म, रे, रे, ग, प म, ग म रे, रे सा ।

(४) ग म ध्, ध्, प, ग म ध्, सा, नि ध्, प, ध् प, म प, ध् प, म प, म, ग म प म ग रे, रे, ग म प, म ग म, ग रे, रे, सा ।

(५) सा रे ग म ध्, नि सा, ध् नि सा रे, सा, नि सा रे, मं, मं ग रे, रे, सा, नि सा, सा नि ध्, ध् प, ग म ध्, नि सा, नि ध्, प, ग म ध्, प, म प म, ग म रे, सा रे ग म ध् नि सा, सा, नि ध्, प म, ग म, ग रे, रे, सा, नि सा ।

तानें

(६) सा रे सा, सा रे ग रे सा, सा रे ग म ग रे सा, सा रे ग म प म ग रे सा, सा रे ग म प ध् प म ग रे सा, सा रे ग म प ध् नि सा नि ध् प म ग रे सा ।

(७) ग म प म ग रे सा, ग म प ध् प म ग म प म ग रे सा ग म प ध् नि ध् प म ग म प ध् प म ग म प म ग रे सा ग म प ध् नि सा नि ध् प म ग म प ध् नि ध् प म ग म प ध् प म ग म प म ग रे सा ।

(८) सा नि ध् प म ग रे सा, सा नि ध् नि सा रे, सा नि ध् नि सा नि ध् प म ग रे सा, गं रे, सां रे, सां नि ध् नि सा नि ध् नि ध् प म ग रे सा, मं गं रे, गं मं गं रे, गं रे, सां नि ध् प म ग रे सा ।

(९) सा रे ग म प ध् ध् प म ग रे सा, सा रे ग म प ध्
 नि नि ध् प म ग रे सा, सा रे ग म प ध् नि सां रे रे
 सां नि ध् प म ग रे सा, सा रे ग म प ध् नि सां सां
 रे गं गं रे सां नि ध् प म ग रे सा, सा रे ग म प ध्
 सां सां रे गं मं पं पं मं गं रे सां नि ध् प म
 ग रे सा ।

(१०) प प म प प म ग रे सा, ध् ध् प ध् ध् प म ग रे सा,
 नि नि ध् नि नि ध् प म ग रे सा, रे रे सां रे रे सां
 नि ध् प म ग रे सा, गं गं रे गं गं रे सां नि ध् प
 म ग रे सा, पं पं मं पं पं मं गं रे सां नि ध् प म
 ग रे सा, सा रे ग म प, ग म प ध् नि, प ध् नि सां रे
 सां रे गं मं पं पं मं गं रे सां नि ध् प म ग रे सा ।

राग भैरव—ऋपताल

ध् ध् प म प ग म रे रे सा | ध् ध् नीं सा सा ग म
 १ ३ + ८ १ ३ +
 रे रे सा | नीं सा ग म प ग म ध् नी सा | सां नी ध्
 ८ १ ३ + ८ १ ३
 प म ग म रे रे सा ||
 + ८

अंतरा

ग म ध् ध् नी सा सां रे रे सा | ध् ध् नी सां रे गं
 १ ३ + ८ १ ३ +

म रे रे सा | सा नी ध प म ग म ध नी सा | सा नी
 ८ १ ३ + ८ १

ध प म ग म रे रे सा ||
 ३ + ८

राग भैरव-तेवरा ताल

राग लक्षण

प्रथम भैरव राग गावत, रि ध मृदुल युत सप्त सुरसों ।
 प्रात सुसमय गुनिहि सम्मत, रूप रस अनुहार जो ॥
 वादी धैवत ऋषभ सहचर, अल्प नी अवरोह में ।
 अरु छिपत संतत नवल सुन्दर रुचिर री आरोह में ॥

पं० खरे शास्त्री

स्थायी

नी नी

ध ध प म प म ग | म प म रे ५ सा सा |
 प्रथम भै र व रा ग गा व त
 १ ४ ६ १ ४ ६

धं धं नी सा सा रे सा | म प म रे रे सा ५ |
 रि ध मृ दु ल यु त स प्त सुर सो .
 १ ४ ६ १ ४ ६

नी सा सा ग म म म | प प प ध ध प प |
 प्रा त सु स म य गु नी ही सं म त
 १ ४ ६ १ ४ ६

ध् नी सा रे सा नी सा नी ध् प ध् म ॥
 १ ४ ६ १ ४ ६

अन्तरा

म S म ध् S ध् ध् रे रे सा नी सा सा सा
 वा दी धै व त रि ष भ स ह च र
 १ ४ ६ १ ४ ६

नी ध् S ध् नी S सा रे सा नी सा नी ध् S ध् ध्
 अ ल्प नी अ व रो ह मे अ रु
 १ ४ ६ १ ४ ६

रे रे सा नी सा सा सा रे सा न ध् S प प
 छि प त सं त त न व ल सं द र
 १ ४ ६ १ ४ ६

ग म ग रे S ग म प म ग रे सा रे ग म प ॥
 रु चि र री आ रो ह मे
 १ ४ ६ १ ४ ६

राग भैरव-चारताल

प्रथम आद नाद ब्रह्म जो जासो भयो है सब ही विस्तार ।
 शब्द पवन अग्नि पानि धरत्री माया माई सृष्टी रची करतार ॥

स्थायी

म
ग म म प प |
प्र . थ म . |
९ ११

नी नी म प म ग ग रे ग प म | म ऽ ग रे ऽ सा
ध् ध् प म प म ग ग रे ग प म | म ऽ ग रे ऽ सा
आ . . . द . ना . . . द | त्रं . . . म्ह
१ + ५ + ९ ११ १ + ५

नी नी नी
सा रे ऽ सा सा ध् ध् सा ऽ ऽ सा सा ऽ रे ग म प ऽ |
जो . जा . सो | भ यो . . . है . सब ही . . |
+ ९ ११ १ + ५ + ९ ११

नी
म ऽ म रे ऽ सा सा ||
वी . . स्ता . र . ||
१ + ५ +

अंतरा

म ध् ऽ नी सा सा सा ऽ सा नी सा सा | सा ध् ध् सा
शब्द . प व न अ . गिन पा . नी | ध र . त्री
१ + ५ + ९ ११ १ +
नी नी नी नी नी नी
ऽ रे ऽ सा सा ध् ध् प | म ऽ प ऽ ध् ध् ध् सा
मा . या . मा . इ | सु . छी . र . ची
५ + ९ ११ १ + ५ +

नी नी प म नी
९ ११ १ + ५ +
९ ११ १ + ५ +

राग भैरव-तिलवाड़ा (वि० ख्याल)

बालमुवा मोरे सैंया सदा रंगीले ॥

हूँ तो तुम विन तरस गई लो दरशन वेग बतावो लेहूँ बलैया ॥

स्थायी

ग म म प प | ध् ९ ९ ९ म ९ ९ ९
 वा ल मु . | वा
 १३ १ ५

ग
 ध् ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ | म ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९ ९
 मी रे सैं
 + १३ १ ५

नी
 सा ९ ९ ९ ९ ग म ध् ९ ९ | सा ९ सा ९ ध् ९ ९ ९
 या . . . स दा रं | गी . . . ले . . .
 + १३ १ ५

म
 प ९ ९ ९ ||
 +

अंतरा

म स म स ध ध ध ध
 हूं . तो . तु म बि न
 १ ५

ध ध सा सा नी सा सा स ध ध ध ध नी सा सा सा
 त र स ग ई . ली . दे र श न वे . ग व
 + १३ १ ५

म
 ध नी सा रे ध स स स प प म स स प म म रे स स
 ता . . . बो . . . ले . हूं . . व लै . . .
 + १३ १ ५

नी
 सा स सा ||
 या . . ||
 + .

राग भैरव-एकताल (द्रुतलय)

जागिये रघुनाथ कुँवर, पन्धरी वन बोले ॥
 चंद्र किरन सीतल भई, चकई पिय मिलन गई ।
 त्रिविध मन्द चलत पवन, पल्लव द्रुम डोले ॥
 प्रात भानु प्रगट भयो, रजनी को तिमिर गयो ।
 शृंग करत गुंज गान, कमलन दल खोले ॥
 ब्रह्मादिक धरत ध्यान, सुर-नर-मुनि करत गान ।
 जागन की बेर भई, नयन पलक खोले ॥
 तुलसिदास अति अनंद निरखि के मुखारविंद ।
 दीनन को देत दान, भूषन बहु मोले ॥

(१६९)

(गायत्री) स्थायी

मपगम ०००० जा १	ग रे रे गि ये +	सा सा र धु ५	रे ५ ना +	रे रे थ कुं ९	सा सा व र ११
-------------------------	--------------------------	--------------------	-----------------	---------------------	--------------------

सा रे पं १	ग म छी +	प प वन ५	ग म रे बो ० ० +	ग म ले ९	ग म प ० ० ११
------------------	----------------	----------------	-----------------------	----------------	--------------------

अन्तरा

म ५ चं १	नी म ध द्र कि +	ध ध र न ५	नी सा सी +	सा सा त ल ९	सा सा भ ई ११
----------------	--------------------------	-----------------	------------------	-------------------	--------------------

नी ध ध च क १	नी सा ई +	रे सा पि य ५	नी सा मि ल +	रे सा नी न ० ० ग ९	ध प ई ११
-----------------------	-----------------	--------------------	--------------------	--------------------------	----------------

प ध त्रिवि १	नी रे ध मं +	सा सा द ५	नी सा च ल +	नी ध त प ९	प प वन ११
--------------------	--------------------	-----------------	-------------------	------------------	-----------------

म ध प १	प ध ल व +	म प हु म ५	ग म रे डो ० ० +	ग म ले ९	ग म प ० ० ११
---------------	-----------------	------------------	-----------------------	----------------	--------------------

राग भैरव-तीन ताल (मध्यलय)

जागो मोहन प्यारे, साँवली सुरत मोरे मनहि भावै ।
 सुन्दर श्याम हमारे ॥ ध्रु० ॥ प्रात समय उठ भानु उदय भये,
 ग्वाल वाल सब भूपति आये तुम्हरे दरस के काज ठाढ़े ।
 उठि उठि नन्द किशोरे ॥

स्थायी

नी									
ग म ध स	प स ध म	म प ध प म प	म स ग स						
जा. गो.	मो. ह न	प्या.	रे						
+	१३	१	५						

ग म ग रे	ग म प प	म ग म ग	रे स सा स
साँव ली सु	र त मो रे	म न ही .	भा . वै .
+	१३	१	५

सा रे ग म प स प ध	प ध नी सा नी सा ध प ध प म
सं . द र श्या . म ह	मा रे
+	१३ १ ५

अन्तरा

म स म म प प ध ध	प ध सा नी सा सा सा सा
प्रा . त स म य उ ठ	भा . नु उ द य म ये
+	१३ १ ५

ध स ध नी सा सा सा सा	नी सा रे सा नी सा रे सा ध प
ग्वा . ल वा . ल स व	भू . प ती आ . . . ये .
+	१३ १ ५

प ध् प म ग म ग म प | म ग म ग रे सा
 तुम्ह रे द र स के . . | का . . ज ठा . डे .
 + १३ १ ५

सा रे ग म प प ध् | प ध् नीसा नीसा ध् प ध् प म ||
 उ ठि उ ठि नं . द कि | शो . . . रे . . . ||
 + १३ १ ५

राग कालिंगडा

यह राग भैरव थाट का है। इसमें रे और ध कोमल लगते हैं। जाति संपूर्ण है। इस में ऋषभ और धैवत पर आंदोलन नहीं होता है क्योंकि ऐसा करने पर इसे भैरव से बचाना कठिन हो जाता है। इसमें आलाप विलंबित भाव से नहीं किए जाते। आरोहावरोह स्वरूप वक्र रक्खा जाता है। आलाप की समाप्ति पर गंधार पर न्यास करते हैं। “पध् पध् मप ध् प मग, रे सा”, “ध् निसारें निसा निसारें, सानिध् प” इन स्वर समुदायों में राग प्रकट होता है। परज इसके बहुत ही निकट का राग है। इन दोनों रागों का मिश्रण करने का प्रचार है। कालिंगड़े में कोमल निषाद और तीव्र मध्यम का विवादी प्रयोग देखा जाता है। इसका वादी स्वर पंचम और संवादी षड्ज है। कुछ लोग धैवत-गंधार संवाद मानते हैं। गाने का समय रात्रि का अंतिम प्रहर है।

आरोह :—सारे गमप, गमपध् निसां ।

अवरोह :—सानिध् प, मपध् पमग, मगरे सा ।

पकड :—पध् मपगमप, ध् प ।

आलाप

(१) सारे ग, मगप, ध् मप, पध् मप, गमग, गम ग, रे सा ।

(२) सारे, गमप, गमपध्प, ध्पध्मप, मपध्पमग, रे, म गप, मपमध्प, मपमपध्पमग, रे, मगप मध्प ध्मप, मपध्प मग, रे, गमग, रे, सा ।

(३) ध्पध्मप, मपध्पमग, गमपध्प, पध्नीध्प, पध्नितां निध्प, ध्पध्मप, मप मपध्पमग, रे, मगपमध्पध्मप मपध्पमग, रे, गमग, रे, सा, गमपध्प ।

(४) पध्पध्नितां, रे, सारै, नितां, निध्प, ध्नितां, रे, सांनिध्प, मप-ध्प, रे, मगप, मध्पध्मप, पध्नितां, रे, नितां, सांनिध्प, मपध्पमग, रे, गमग, रे, सा, गमपध्प ।

(५) पध्पध्नितां, गमपध्नितां, ध्निरे, सां, रे, सारै, नितां, सारे, गं, मंगं, गंमंगपमंगं, रे, सां, ध्नितां, रे, सां, सांनिध्प पध्मप, मपध्पमग, गमपध्मप, गमगप, मगरे, गरे, गमपध्प ।

ताने

(१) सारे, गरे, सा, सारे, गमपप मगरे, सा, सारे, गमपप ध्पमपध्प म ग रे, सा, सारे, गमपध्नि ध्पमपध्पमगरे, सा, सारे-गम पध्नितां निध्पप ध्निध्प मपध्पमगरे, सा, गमपध्प ।

(२) सारे, गमग, गमपध्पमग, गमपध् निध्पमपध्पमग, गमपध् नितां निध्पप मपध्पमग, गमपध् मप ध्पप ध्प मग गमप गम पमग रे, सा ।

(३) पध् नितां रे, सारै, नितां, गमपध् नितां, रे, गरे, सां, सारै, सांनि-ध्प गम पध्नि तां गं मं गरे, सांनिध्प, पध्नितां निध्पप, मपध्प म ग, गमपध्मप ध्पमग रे, सा, गमपध् पध्मप ।

(४) ध्पमप गमपग मगरे, सा, निध्पप ध्पमप गमपग मगरे, सा,

सारें सांनिध् पप मपध् पप ध् पमग, गमपग मगरे सा, सारें
गमं पंगमंगरें सां निध् पप मपध् प गम गपपमगरे सा ।

(५) ध् प मपध् प गप मग रे गरे सा, निनिध् प मध् पप गपमग रे
ग रे सा, सारें सांनि ध् सांनिध् पनिध् प मध् पम गपमग रे ग
रे सा, गं गं रें सां, सारें सांनि ध् सांनिध् पनिध् पप मपध् प म
ग रे सा ।

राग कालिंगडा-तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

स्थायी

पध् मप गम प | ध् पध् म ऽपमग गपमग रे सा सारे | गमपध्
+ १३ १ ५ + १३ १

नि सा निध् ||

५

अंतरा

पध् पध् नि नि सां | सां रें ग रें सां नि सां धुरें सां निध् प |
+ १३ १ ५ + १३

सां नि ध् पम गम ||

१ ५

राग- कालिंगडा-तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

मन भावत राग कलिंग सुनी, तुरिय यामसु जो है सुखकर-
गावत कोई नित दिन रजनी ॥ उज्ज्वल पंचम रि-ध मृदु सोहत,
ध-ग वादी संवादी संमत, संपूरन रूप गात गुनी ॥ खरे शास्त्री

(१७५)

स्थायी

प प ध् प म ग ग म प ध् | ध् s ध् ध् प s ग
म न भा व त रा ग क लि ग सु नी तु
+ १३ १ ५ +
ग ग रे ग म प s | ग प म ग रे रे सा सा सा रे
रि य या म सु जौ है सु ख क र गा
१३ १ ५ +
ग म प ध् प ध् | नि सा नि ध् प s ||
व त को ई नि त दि न र ज नी ||
१३ १ ५

अंतरा

ध् प ध् नी सा सा सा | नी रे सा रे नी s सा सा
उ ज्व ल प च म रि ध मृ दु सो ह त
१३ १ ५
प ध् प ध् नी सा सा | नी रे सा रे नी s सा सा
ध ग वा दी सं वा दी सं म त
+ १३ १ ५
ध् ध् प ध् प ध् | प ध् नी सा नी ध् प ||
सं पू र न रु प गा त गु नी ||
+ १३ १ ५

राग कालिंगडा-एकताल (मध्य)

गावत सखी मधुर गान, उठि सुंदर कुंवर कान्ह, भइ प्रभात
मन भावन, जावहु वन लै गैयन ॥ तुम विन नहीं चरत धेनु,
जब बाजत मधुर बेनु, हरखत तृण खात हरित, प्रीत हृदय
बहुत मान ॥

—व्यास कृति

स्थायी

सा नी ध प ध म प ग म पप | मध पध मप ग पम गरे सासा |
 गा व त स खी म धुर गा न | उठि सं . दर कु व . र का . न्ह |
 १ + ५ + ९ ११ १ + ५ + ९ ११
 सासा मम गम पध मपध प मगम | ग म पध नीसा सारै |
 भइ प्रभा . त मन भा . . . व . न | जा . बहू व न लै . |
 १ + ५ + ९ ११ १ + ५ +
 सा नी ध नी ध प मगम ||
 . . . गै . . . य . न ||
 ९ ११

अंतरा

पध पध नीसा सारै सारै नीसा | नीनी सारै नीसा नीसा |
 तुम विन न हि चर त धे . नु | ज व वा . ज त म धु |
 १ + ५ + ९ ११ १ + ५ +
 नीधपप | मध पध मप गम गरे सासा | गम पध नीसा सारै |
 र वे नु | हर खत वृण खा . तह रि त | ग्री . त हृ द य मा . |
 ९ ११ १ + ५ + ९ ११ १ + ५ +
 सा नी ध नी ध प मगम ||
 . . . नी ||
 ९ ११

राग कालिंगड़ा-भूपताल

काहे सजत अंग, नाही मोहन संग, कैसो केसर रंग, डफ
 भांज मृदंग ॥ जमुना गवाँलन, गये छाँड़ गौवन, अब कौन
 मधुवन, येरी रास खेलन ॥

—व्यास कृति

(१७७)

स्थायी

सा नी सा ध् प ध् म प ग म प | म ध् प ध् प
का . हे . स ज त अ . ग ना . ही . सो
१ ३ + ८ १ ३

म प म ग रे सा सा | सा रे ग म प ध् प प |
ह . न . सं . ग कै . सो के सर रं ग |
+ ८ १ ३ + ८

प ध् नी सा रे सा रे सा नी ध् प म प ध् ||
ड फ भां . ज मि . र . दं . ग . ||
१ ३ + ८

अन्तरा

प ध् प ध् नी सा सा | सा रे सा रे सा नी सा
ज मु ना ग वाँ ल न | ग ये छाँ ड गौ . .
१ ३ + ८ १ ३ +

ध् प म प ध् प ग म म प ध् प ध् सा रे
व . न | अ व कौ . न म धु बं न ये .
८ १ ३ + ८ १

सा नी ध् प म प ध् सा नी ध् प म ग रे
सी . रा . स . खे . ल .
३ + ८

सा नी सा ||
न .

राग कालिंगडा-तीनताल (मध्यलय)

अरे मन मान काहे करे । सुमरि सुमरि हरिनाम ॥

जेहि सुमिरन से पाप नसत है । पावन परम ललाम ॥

श्री विनय चंद्र कृत

(वि० ना० पटवर्धन कृत राग-विज्ञान)

स्थायी

म
प म प ध् प ग म | प प ध् प म प ध् प म ग स
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
अ रे म न | मान का . है क रे .
१३ १ ५ +

प
ग म ग रे | सा सा ग म ग म प ध् नी रे सा नी ध्
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
सु मिर सु | मि र ह रि ना म
१३ १ ५ +

प म ग रे सा ||
० ० ० ० ० ||

अंतरा

नि

म म म म प प ध् सा सा सा नी रे सा | सा रे म ग
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
जे हि सु मि र न से पा प न स त है | पा
१ ५ + १३ १
रे सा नी रे सा नी ध् प ग प म ग रे सा ||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
व न प . र . म ल ला म
५ +

(१७९)

राग-कालिंगडा-तीनताल (मध्यलय)

भूरख छांड वृथा अभिमान । औसर बीत चल्यो है तेरो ।
दो दिन को मेहमान ॥ भूप अनेक भये पृथ्वी पर रूप
तेज बलवान । कौन बच्यो या काल व्याल ते
मिट गये नाम निशान ॥

नारायण स्वामी कृत
(वि० ना० पटवर्धन कृत राग-विज्ञान)

स्थायी

१ ध् प म ग सपप | ध् पध् म प म ग १ गम रे ग म प प |
मू र ख छां डवृ | था अभिमा . . न औसर बी . त च |
+ १३ १ ५ + १३

प ग म ग म प म रे सा १ सारे गम प गम | गमपध् नीसा
लो . है . . . ते रो दो . दिन को मेह | मा
१ ५ + १३ १

५ नी ध् पम ग ||
० ० न ||
५

अन्तरा

म म म प ध् ध् नी सा सा नी रे सा सा ध् ध् नी सा सा
भू प अ ने क म ये पृ थ वी . पर रूप ते . ज
+ १३ १ ५ + १३

नि

सां सां | रें सां नी सां रें सां ध॒प ' ध॒पध॒ म॒पगम॒ | ग॒म॒ प॒म॒ ग॒
 व ल | वा न . कोनव च्यो . या . का . लव्या
 १ ५ + १३ १

म॒ ग॒ रे॒ सां सा॒ रे॒ ग॒ म॒ प॒ प॒प॒ | ग॒ म॒ प॒ ध॒ नी सां ५ नी ध॒पम॒ग॒ ||
 ल से . मिट ग ये नामनि | शा न' ||
 ५ + १३ १ ५

✓ राग भैरवी

यह भैरवी थाट का आश्रय राग है। इस राग में ऋषभ, गंधार, धैवत और निषाद कोमल लगते हैं। बाकी सब स्वर शुद्ध। जाति संपूर्ण-संपूर्ण। राग की सुंदरता बढ़ाने के लिए कभी कभी रे शुद्ध और तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाता है। वादी स्वर पंचम और संवादी षड्ज। कुछ लोग मध्यम वादी मानते हैं। गाने का समय प्रातःकाल है। कुछ लोग इसे सार्वकालिक मानते हैं। महफिल के समाप्ति के समय इसे गाने का प्रघात है। कुछ कुशल गायक इसमें बारहों स्वरों का प्रयोग राग स्वरूप कायम रखते हुए करते हैं। इस राग में अधिकतर छोटे ख्याल, भजन, होरी, ठुमरी आदि गाये जाते हैं।

आरोह :—निं सा ग् म पध्निंसा, या सारे ग् मपध्नीं सा।

अवरोह :—सां निध् प मग् रे सा।

पकड :—ध् प, ग् म ग् रे, सा।

आलाप

(१) सा, निं सा, धं निं सा, सा रे, सा, ग् रे सा, सा रे, ग् म, ग् रे, सा निं धं निं सा।

(२) निं सा ग् रे, ग् रे सा, सा ग् म, मग् रे सा, निं सा ग् म प, ग् म ग् प, प म, ग् म ग् रे, ग् रे सा।

(३) निं सा ग् म प, ग् म प ध्, प, ग् म प ध् नि, ध्, प, ग् प ध् नि, ध् प, ध्, प म, ग् प, म, ग् रे, ग् रे, सा ।

(४) निं सा ग् म प ध् नि सा, ध् नि ध् सा, सा नि रें, सा नी ध् सा, ध् नी सा रें ग्, ग् रें, ग् रें सा, नी सा रें सा, सा नी ध् प, ग् म, ग् प, म ध्, प नी, ध् प, ग् म प ध्, प म, म ग्, रे सा, ध् निं सा ग्, रे, सा ।

(५) ग् म ध् नि सा, नि रें सा, ध् नि सा रें ग्, ग् रें, रें, रें, सा, सा, ग् म, ग् म ग् प, प म ग् रें, ग् रें सा, सा, नि रें, सा नि ध् प, प ध् सा नि ध् प, नि, ध् प, ध्, प म, प, म ग्, म, ग् रे, ग्, रे सा, ध् निं ध् सा ।

तानें

(६) निं सा ग् रे सा, निं सा ग् म ग् रे सा, निं सा ग् म प म ग् रे सा, निं सा ग् म प ध् प म ग् रे सा, निं सा ग् म प ध् नि ध् प म ग् रे सा, निं सा ग् म प ध् निं सा नि ध् प म ग् रे सा ।

(७) सा, सा नि ध् नि सा, सा नि ध् नि सा रें सा, सा नि, ध् नि सा रें ग् रें सा, सा रें ग् म ग् रें सा नि ध् प म ग् रे सा ।

(८) निं सा ग् म प, ग् म प ध् प म ग् रे सा, निं सा ग् म प ग् म प नि ध् प म ग् रे सा, निं सा ग् म प ध् निं सा ध् निं सा नि ध् प म ग् रे सा, निं सा ग् म ध् निं सा ध् निं सा रें सा नि ध् प म ग् रे सा ।

(९) ग् म प ग् म प ग् म प नि ध् प म ग् रे सा, ध् नि सा
 ध् नि सा ध् नि सा रें, सा नि ध् प म ग् रे सा, सा रें ग्
 सा रें ग् सा रें ग् मं ग् रें सा नि ध् प म ग् रे सा ।

(१०) प प म प प म ग् रे सा, नि नि ध् नि नि ध् प म ग् रे
 सा, सा सा नि सा सा नि ध् प म ग् रे सा, ग् ग् सा ग्
 ग् सा नि ध् प म ग् रे सा, मं मं ग् मं मं ग् रें सा नि
 ध् प म ग् रे सा, पं पं मं पं पं मं ग् रें सा नि ध् प म
 ग् रे सा, नि सा ग् म प ध् नि सा नि सा ग् मं पं पं मं
 ग् रें सा नि ध् प म ग् रे सा ।

राग भैरवी—तीनताल

स्थायी

नीसा ग्म | धपऽनी धप मप ग्मध्प नीध् सानी | धपमप

१३ १ ५ + १३ १

ग्म धप मग् रे सा ||

५ +

अंतरा

सा ऽ सा ऽ सानीध्नी सारेंसा^{नी} धनीसाऽ | ग्ऽरेंसा

१ ५ + १३ १

ऽमं ग्ऽरेंसाऽनी धऽनीप | ऽ धम ऽ प ग् ऽ म ग् रे साऽ

५ + १३ १ ५ +

नीसा ग्म | पध्नीसा सानीध्प मग् रे सा ||

१३ १ ५ +

जयति जय रागिनी, मैरवी नामिनी ।
भक्ति रस पूरिनी, प्रात गुन गावनी ॥
सप्त सुर रूपिनी, सकल मृदु स्वैरिनी ।
षड्ज संवादिनी, पंचम सुवादिनी ॥

स्थायी

प प प प प ध् प गु म | प ध् सा
ज य ति ज य रा गी नी मै नी ध् प म गु
१ ३ + द १ ३ र वी . . .

ग रे गु रे सा ऽ | ग ऽ गु गु गु गु म प म गु
ना मी नी भ क्ति र स पू रि नी
+ द १ ३ + द

ग रे गु | सा रे सा नी सा सा सा गु म प ध् म रे सा
० प्रा त गु न गा . . व नी .
१ ३ + द

अंतरा

धुं ५ म धुं नी धुं नि सा रे सा ५ नी नी नि सा
स . प्त सु र . पि नी . स क ल मृ
१ ३ + ५ १ ३

सा नी सा नी सा रे सा ध प | गं गं गं गं स सा रे
 दु स्वै री नी ष ड् ज सं वा
 + ... १ ३ +

नी सा
 सा ध प | प ध नी ध प म गं रे गं रे सा स ||
 दि नी पं . च म सु वा दि नी
 न १ ३ + ... न

राग भैरवी—रूपक ताल

मत कर मोह तूं हरि भजन को मान रे ॥

नैन दिये दरसन करने को, श्रवण दिये सुन ग्यान रे ॥

वदन दिया हरि गुण गाने को, हाथ दिये कर दान रे ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो कंचन निपजत खान रे ॥

स्थायी

प प प प प स ध | म प म ध प ध नी | ध प म गं
 मत कर मो . ह | तू ह रि . म
 १ ४ ६ १ ४ ६ १
 सा रे सा रे गं म | गं रे गं रे सा स स स ||
 ज न को मा न ले
 ४ ६ १ ४ ६

अंतरा

ध स म ध ध नी नी | सा सा सा सा नि सा रे सा
 नै . न दि ये द र | श न क र नै को
 १ ४ ६ १ ४ ६

नी नी नी सां सां सां सां | नी सां रे सां नी ध् ५ प ५ ||
 श्र व ण दि ये सु न | ग्या . . न . . रे . . ||
 १ ४ ६ १ ४ ६

राग भैरवी—तीनताल (मध्यलय)

जोगी मत जा मत जा मत जा, पाँव परूँ मैं तेरी ॥
 प्रेम भक्ति को पेड़ोंहि न्यारो, हमको गैल बता जा ॥
 अगर चंदन की चिता रचाऊँ, अपने हाथ जला जा ॥
 जल बल भई भस्म की ढेरी, अपने अंग लगा जा ॥
 मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, ज्योत में ज्योत मिला जा ॥

स्वरकार—वि० ना० पटवर्धन

स्थायी

गुम मगु रे सा सा रे गु ५ म म ध् ५ नी नी |
 जो . . गो . म त जा . म त जा . म त |
 ५ + १३
 सां ५ ५ ५ गु ५ गु गु गु रे गु रे सा धनी सारें
 जा . . पाँ . व प रूँ . . मैं . ते . .
 १ ५ + १३
 सां नी ध् प | मगु रे सा ||
 १

अन्तरा

गु ५ गु म ५ म ध् नी सां ५ सां सां नी सां रे सां ५ |
 प्रे . म भ . क्ति को . पे . ढों ही न्या . . रो . .
 १ ५ + १३

(१८७)

गं गं गं ऽ गं रे गं सां रे सां ऽ धनी सां रे
ह म को . गै . ल व ता . जा . . .
१ ५ +

गं मं गं रे सां नी ध प म ग रे सा ||
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ||
३३ १

राग भैरवी-तीन ताल (मध्यलय)

सरस्वती शारदा विद्या दानी दयानी दुःख हरनी जगत
जननी ज्वाला मुखी माता ॥ कीजे सुदृष्टी सेवक जान
आपनो इतनो कर बच दीजे तान ताल कर सुहाग
बुध अलंकार ॥

स्थायी

म ग रे सा ऽ नीं सा सा ध ऽ प ऽ प ऽ प ध नीं सा
स र स्व ती . शा . र दा . . . वि . द्या . . .
+ १३ १ ५

म म ध प गं ऽ म म प धनी ध प गं ऽ म ग रे सा ऽ
दा . नी . द या . . नी . दु . ख ह र नी .
+ १३ १ ५

नीं सा गं म प प प नी ध प गं ऽ गं म ऽ गं रे सा ||
ज ग त ज न नी ज्वा . . . ला . मु खी . मा . ता ||
+ १३ १ ५

अंतरा

प स ध स नी सा स सा
की जे सु ह छी
१ ५

नी नी सा ग स म ग रे सा स नी सा नी सा ग
से व क जा न आ प नो इ त नो
+ १३ १ ५

रे सा प ध प म ग रे सा प ध प म म रे ग
कर ब च दी जे ता न ता ल कर
+ १३ १ ५

म ग रे सा प प ध प स स प ध नी सा नी ध
सु हा ग बु ध आ लं का
+ १३ १

प म ग रे सा नी सा स
० ० ० ० ० ० र
५

राग भैरवी—ताल केहरवा

वीत गये दीना भजन विनारे ।

वाल अवस्था खेल गवायो । जब जवानी तव मान क्रियारे ॥१॥

लाहे कारन मूल गवायो अजहुन मिटी तेरी मन की वृष्णारे ॥२॥

कहत कवीर सुनो भाई साधो पार उतर गये संत जनारे ॥३॥

स्थायी

ग म ग स रे सा रे सा नी सा रे ग स प म
धी त ग ये दी ना भज
१ २ + ४ १ २ + ४ १ २

(१८९)

$\begin{array}{c} \text{५ गू} \\ \text{० न} \end{array} \quad \begin{array}{c} \text{५ रे} \\ \text{० धी} \end{array} \quad \begin{array}{c} \text{सा रे} \\ \text{ना रे} \end{array} \quad \begin{array}{c} \text{सा ५} \\ \text{५ गू} \end{array} \quad \begin{array}{c} \text{म गू} \\ \text{० त ग} \end{array} \quad \begin{array}{c} \text{५ रे} \\ \text{० यै} \end{array} \quad \parallel$
 + ४ १ २ + ४ १ २ + ४

अन्तरा

$\begin{array}{c} \text{सा सा सा सा सा} \\ \text{वा ले अ व स्था} \end{array} \quad \begin{array}{c} \text{नी ध नी सा नी ध प} \\ \text{० खे ० ल ग वा ० यो} \end{array} \quad \begin{array}{c} \text{प प प} \\ \text{० ज वा ० नी ० त व} \end{array} \quad \begin{array}{c} \text{५ प ध नी} \\ \text{० मा ० न की या ० रे ०} \end{array} \quad \begin{array}{c} \text{५ प} \\ \text{० वी} \end{array} \quad \parallel$
 १ २ + ४ १ २ + ४ १ २ + ४ १ २ + ४ १ २
 $\begin{array}{c} \text{म गू} \\ \text{० त ग} \end{array} \quad \begin{array}{c} \text{५ रे} \\ \text{० यै} \end{array} \quad \parallel$
 + ४

राग मालकंस

यह भैरवी थाट का राग है । गंधार, धैवत और निषाद कोमल लगते हैं । रे और प वर्ज्य हैं । इसलिए जाति औडव-औडव है । इसमें मध्यम स्वर मुक्त और महत्त्वपूर्ण है । प्रकृति गंभीर है । गंधार, धैवत और निषाद आंदोलित है । वादी मध्यम और संवादी षड्ज है । गाने का समय रात्रि का तीसरा प्रहर है ।

आरोहः—निं सा, ग् म, ध्, निं सा ।

अवरोहः—सां निं ध्, म, ग् म ग्, सा ।

पकडः—ग् म, ध् निं ध्, म, ग् सा ।

आलाप

- (१) सा, धं निं सा, निं सा, धं निं सा ग्, सा, सा, धं निं धं मं, धं निं सा ।
- (२) निं सा, धं निं धं सा, ग् सा, म, ग् सा, धं निं सा म, ग् म ग् सा, म ग्, म ग् सा, धं निं सा ।
- (३) सा म, म ग्, म ग् सा, धं निं सा म, ग् म ध्, म, ध् म निं निं ध् म, ध् म ग्, सा ग् म ध् म ग्, म ग्, निं सा धं निं सा ।
- (४) धं निं सा म, म, ग्, म ध्, म ध् निं, ध् म, ध् म ग्, म ध् निं सां, सां निं ध् निं सां, सां ध् निं ध् म, निं ध्, म ग्, म ध्, म ग्, ग् म ग्, सा ग् म ग्, सा, धं निं सा ।

- (५) मग्, म ध् नि सा, ध् नि सा, नि सा, नि ध्, म ध् नि सा,
 ग् सा, नि सा, नि ध्, म ध् नि ध्, मग्, नि ध्, म ध्
 मग्, ग्, सा नि, ध्, म ध् सा, नि ध्, म नि ध्, ध्, मग्,
 मग्, सा, नि नि ध्, मं ध्, सा ।
- (६) नि सा ग् म ध् नि सा, ध् नि ध् सा, नि सा, नि,
 ग् सा, ध् नि सा ग्, सा नि ध् नि सा, ध् नि सा,
 सा नि ध्, म ध् नि सा, ग् म ध् नि सा, मग्,
 ध् म, नि ध्, सा, ध् नि ध् म, ग् मग् सा ।
- (७) सा, नि सा, सा नि ध्, म ध् नि सा, ध् नि सा,
 ध् नि सा ग्, सा नि सा ग्, म्, ग् सा, सा म्,
 ग् सा, ध् नि सा म्, ग्, ग्, म्, ग् सा, ग् सा,
 नि सा, ध् नि ध् सा, म ध् नि सा, नि ध् म्, म्,
 ग् सा, सा, नि ध् म ध् नि सा, नि ध्, मग्,
 ग् म, ग्, सा ग् म, ग् सा, ध् नि सा ।

ताने

- (१) नि सा ग् सा, नि सा ग् मग् सा, नि सा ग् म
 ध् मग् सा, नि सा ग् म ध् नि ध् मग् सा,
 नि सा ग् म ध् नि सा नि ध् मग् सा, नि सा
 ग् म ध् नि सा ग् सा नि ध् मग् सा, नि सा
 ग् म ध् नि सा ग् म् ग् सा नि ध् मग् सा ।
- (२) नि सा ग् सा ग् मग् सा, नि सा ग् सा ग् म ध्
 मग् सा, नि सा ग् सा ग् म ध् नि ध् मग्
 सा, नि सा ग् सा ग् म ध् नि सा नि ध् मग्
 सा, नि सा ग् सा ग् म ध् नि सा ग् सा ध् नि

म ग् सा, नि सा ग् सा ग् म ध् नि सां ग् मं ग्
सां नि ध् म ग् सा ।

(३) सां नि ध् म ग् सा, सां ग् सां नि ध् म ग् सा,
सां ग् मं ग् सां नि ध् म ग् सा, मं—ग् सां नि
ध् म ग् सा, ग्—सां नि ध् म ग् सा, सां—नि ध्
म ग् सा ।

(४) नि सा ग् म ग् सा ग् म ध् नि ध् म ग् म ध् नि
सां नि ध् म ग् सा, ग् म ध् म ग् म ध् नि ध्
म ग् म ध् नि सां ग् सां नि ध् म ग् सा, ध् नि सां
नि ध् नि सां ग् सां नि ध् नि सां ग् मं ग् सां
नि ध् म ग् सा ।

(५) म म ग् म ग् सा, ध् ध् म ध् म ग् सा, नि नि
ध् नि ध् म ग् सा, सां सां नि सां नि ध् म ग् सा,
ग् ग् सां ग् सां नि ध् म ग् सा, मं मं ग् मं ग्
सां नि ध् म ग् सा ।

(६) ग् म म ग् म म ग् म म ग् सा, म ध् ध् म ध् ध्
म ध् ध् म ग् सा, ध् नि नि ध् नि नि ध् नि नि ध् म ग्
सा, नि सां सां नि सां सां नि सां सां नि ध् म ग् सा, सां
ग् ग् सां ग् ग् सां ग् ग् सां नि ध् म ग् सा, ग् मं मं
ग् मं मं ग् मं मं ग् सां नि ध् म ग् सा ।

(७) नि सा ग् म ध् नि सां नि ध् म ग् सा, नि सा ग् सा ग् म
ध् नि सां ग् सां नि ध् म ग् सा, सां ग् मं ग् सां नि ध् म ग्
सा, नि सा ग् म ध् म ग् म ध् नि सां नि ध् नि सां ग् मं
गं सां नि ध् म ग् सा, म म ग् म ग् सा, ध् ध् म ध् ध्

(१९३)

म ध् ध् म ग् सा, सां सां नि सां नि ध् म ग् सा, ग् ग् सां
ग् ग् सां ग् ग् सां नि ध् म ग् सा, मं मं ग् मं ग् सां नि ध्
म ग् सा, नि सां ग् म ध् ग् म ध् नि सां ध् नि सां ग् मं
ग् सां नि ध् म ग् सा ।

राग—मालकंस—भूपताल

स्थायी

सां ऽ सां नि ध् म ध् नि ध् म | ग् ग् म ध् म ग् म नि सा सा |
१ ३ + ऽ १ ३ + ऽ
नि सा ध् नि सा म ग् म ध् म | ग् म ध् नि सां ग् सां नि ध् म ||
१ ३ + ऽ १ ३ + ऽ

अंतरा

ग् ग् म ध् म सां ऽ नि सां सां | नि सां ध् नि सां मं ग् मं ग् सां |
१ ३ + ऽ १ ३ + ऽ
ग् ग् नि सां नि ध् ध् नि ध् म | ग् ग् म ग् सा नि सा ग् म ध् नि सां
१ ३ + ऽ १ ३ + ऽ
ध् नि ||
० ० ||

राग मालकंस—तीनताल (मध्यलय)

राग लक्षण

मालकंस को रूप वखानत, सव सुर कोमल मधुर लगावत ॥
औडव जाति हीन रिप भाखत, सम वादी संवादी संमत ।
गान समय उत्तर नित संमत, गमधनिसानिधमगमधमगमगसा ॥

पं० खरे शास्त्री

(१९४)

स्थायी

गुमगुसांनिसाधुंनि | सा म म म गुम मम गुगुगुमधुनि |
 मा. लकं . सको. | रु . प व खा . नत स व सुरकोम ल
 + १३ १ ५ + १३

नि
 सां सां सां सां धु नि धु म ||
 म धु र ल गा . व त ||
 १ ५

अंतरा

म गु गु म धु नि | सां सां सां सां गुंनिसां सांसां निनिनि
 औड व जा ति ही | . न रि प भा . . ख त स म वा
 + १३ १ ५ +

नि
 सां सां नि | धु नि धु म गु म म म नि सां म गुं सां सां |
 दी सं . वा . दी . स . म्म त गा न स म य उ |
 १३ १ ५ + १३

गुसांनि धु नि धु मम गुमधुनि सांनिधुम | गमधम गुमगुसा ||
 त्तर नि स सं . मत ग म धनि सा नि धम | गं मधम गमगुसा ||
 १ ५ + १३ १ ५

राग मालकंस—चारताल (धृपद)

आये रघुवीर धीर लंकधीश अवध मान ।
 संग सखा अंगद सुग्रीव और हनुमान ॥
 रहस रहस गावत युवती जग बंधन विधान ।
 देव कुसुम वरसत घन जाके रहे नभ विमान ॥

स्थायी

अन्तरा

गु गु म धु धु नि सा स सा सा नि नि
र ह सर ह स गा व त यु व
१ + ५ + ९ ११

सा स सा सा सा नि धु नि धु म म
ती ज ग बं ध न वि धा न
१ + ५ + ९ ११

सा स म गु सा सा नि सा गु सा नि धु म धु म धु नि
दे व कु सु म ब र स त घ न जा कै
१ + ५ + ९ ११ १ +

ध् म ग् ग् म ग् सा सा ॥
 र हे न भ वि मा . न ॥
 ५ + ९ ११

राग मालकंस—सुरफाक ताल

ॐकार हर हर शंकर महादेव ।

सकल-कला पूरन पूरन करत आस ॥

सब दुख हरत द्वन्द्वसोहत जटा गंग ।

राजत गले मुण्ड माल संग फणिधर ॥

स्थायी

सा सा ऽ नि ध् म ग् ग् नि सा | सा नि ध् नि सा
 ॐ . का . र ह र ह र | शं . क र म
 १ + ५ ७ + १ + ५

म ऽ ग् म म | ग् ग् म ध् नि सा सा ऽ सा सा | सा ऽ
 हा . दे . व | सक ल क ला . पू . र न | पू .
 ७ + १ + ५ ७ + १

नि ध् ग् ग् म नि सा सा ॥
 र न क र त आ . स ॥
 + ५ ७ +

अंतरा

ग् ग् म ध् नि सा सा नि सा सा | सा ऽ
 स व दु ख ह र त द्व . न्द्र | सो .
 १ + ५ ७ + १

सा नि ध् ध् नि ध् म म | सा नि s s सा ग्
 ह त ज टा . गं . ग | रा . . . ज त
 + ५ ७ + १ +

म म

ग् ग् म् ग् सा सा | सा s नि ध् s म
 ग ले . मु . ख | मा . ल सं . ग
 ५ ७ + १ + ५

ग् म् ग् सा ||
 फ गी ध र ||
 ७ +

राग मालकंस-भूपताल

सा सुन्दर बदन के मंदर दीपन ।
 मनरंजन कहे जात छिपेरे ॥
 नख शिख सुन्दरता कहे लाजत ।
 अत्र ही में मुखचन्द्र चकेरे ॥

स्थायी

नि सा ग् न ध् नि सा ध् नि सा सा नि ध् s
 सा सु न्द र ब . .
 १ ३ + ५

नि ध् s म | नि s ध् नि सा s s ध् म ग् म
 द . . न | के . . मं . . . द र दी .
 १ ३ + ५

गुं सा सा | नि ध् नि सां मं गुं ऽ सां गुं मं गुं मं
 प . न | म न रं ज . .
 १ ३ +

गुं सां नि सां नि ध् म | ध् नि ऽ ध् नि सां ऽ ऽ
 न . क . . हे . | जा . . . त . . .
 न १ ३

सां सां गुं सां नि सां नि ध् नि ध् म ध् म गुं म गुं
 छि पे . . . रे
 + न

सा गुं सा नि सा ||
 ||

अंतरा

म नि
 गुं म ध् नि ध् नि सां ऽ ऽ नि सां ऽ सां सां |
 न ख शि . ख सु न्द र |
 १ ३ + न

नि सां ऽ नि गुं सां ऽ ध् म ध् नि ध् म ऽ |
 ता . . . क . . हे . ला . ज त . |
 १ ३ + न

सां नि ऽ सां मं गुं सां गुं सां गुं मं गुं सां
 अ . . अ . . ही में .
 १ ३ +

नि॒ सां ऽ ध॒ म॒ | ध॒ नि॒ ऽ ध॒ नि॒ सां ऽ ऽ सां
 मु॒ . . ख॒ . | चं॒ . . . द्र॒ . . . च
 न १ ३

सां गु॒ सां नि॒ सां नि॒ ध॒ नि॒ ध॒ म॒ ध॒ म॒ गु॒ म॒ गु॒ सा
 के॒ . . . रे॒
 + द

गु॒ सा नि॒ सा ||

राग मालकंस—तिलवाडा (ख्याल)

कबहो कपी राघो आवेंगे ।

मेरे नैना चकोर पीति बसे, राका शशी मुख देखे न आवेंगे ॥

स्थार्ई

' ' गु॒ सा ध॒ ध॒ नीं सा | म॒ ऽ ऽ गु॒ म॒ ध॒ म॒ ध॒ नी
 - ० गु॒ सा ध॒ ध॒ नीं सा | म॒ ऽ ऽ गु॒ म॒ ध॒ म॒ ध॒ नी
 . . क व हो . . क | पी . . रा घो . . .
 १३ १ ५

ध॒ म॒ गु॒ ऽ गु॒ म॒ नीं सा सा नीं सा ऽ ||
 आ . . वे गे
 + १३

अंतरा

' ' ' गु॒ म॒ नी ध॒ नी सां ऽ ऽ ऽ ऽ नी सां ऽ | सां ऽ
 - ० गु॒ म॒ नी ध॒ नी सां ऽ ऽ ऽ ऽ नी सां ऽ | सां ऽ
 . . . मे रे . . . नै ना .
 + १३ १

नी नी सां सां नी सां ऽ ऽ ऽ ध् नी ध् म म ग् ग् नी सां
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 च की . र प्री ती . व से . . रा .
 ५ +

ग् म ग् सां ध् नी ध् | म ग् ध् नी सा ग् म ध् नी नी
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 . . का . श शि मु | ख . दे . खे . . न . आ
 १३ १ ५

ध् म ग् ध् नी ध् म ग् ग् म नी सा सा नी सा ऽ ||
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 . . आ वे गे ||
 + १३

राग मालकंस-तीनताल (मध्यलय)

हम खोज-खोज गये हार हार । गिरिवन निकुंज घर बार बार ॥
 कौनसी नगरी वसे हो मेरे मोहन । आऊँ कहां मेरे प्रेम निकेतन ।
 हुई देर अब खोल द्वार ॥

पं० रामनरेश त्रिपाठी

स्थायी

मम मग् म ग् सा नि सा ध् नि | सा मम ध् ग् मम ग् ग् म ध्
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 हम खो . . ज खो . जग ये | हा . र हा . . र गिरि वन
 + १३ १ ५ +

नि ध् नि सा नि सा सा | ध् नि ध् ग् मम
 ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
 नि कु . . ज घ र | बा . र बा . र ||
 १३ १ ५

(२०१)

अंतरा

ग॒ग॒ग॒ग॒ म॒म॒ध॒न्नि॒ सा॒ सा॒ सा॒ ग॒न्नि॒ सा॒सा॒सा॒ नि॒नि॒नि॒ सा॒सा॒
कौनसीन गरीब से हो मे रे मो. ह न आऊँक हा मे
+ १३ १ ५ + १३

सा॒ ध॒न्नि॒ ध॒म॒ ग॒ म॒म॒म॒ सा॒ म॒ स॒ ग॒ सा॒सा॒सा॒सा॒ ध॒न्नि॒ध॒ ग॒ म॒म॒
रे प्रे. मनिके . तन हु ई . दे . र अ व खो. लोद्धा. र
१ ५ + १३ १ ५

राग मालकंस-तीनताल (मध्यलय)

तराना

तोम् तनन तन देरेना तक्धारे तारे दानि, तदानि नाद्रे तुंद्रे
तदरे दानि ॥ यारे मो यलि यला यला लाले तन देरेना तन
देरेना तदानि धा किटतक धुमकिट धेत्ता क्डान् धा क्डान् धा
क्डान् धा ॥

स्थायी

सा॒ सा॒ नि॒ ध॒ म॒ ग॒ सा॒ सा॒ सा॒ सा॒ म॒ स॒ म॒ म॒ म॒ म॒ म॒
तौ त न न त न दे रे ना त क्धा . रे ता रे दा नि
+ १३ १ ५

ध॒ म॒ ग॒ ग॒ ग॒ म॒ ध॒ नि॒ सा॒ सा॒ सा॒ ध॒ स॒ नि॒
त दा . नि ना द्रे तुं द्रे त द रे दा . नि
+ १३ १ ५

अंतरा

सा सा सा ध् नि ध् म ऽ म सा सा सा नि नि सा
 या रे मो य लि य ला . य ला ला ले त न दे
 ५ + १३ १ +

सा गु सा सा सा सा ध् नि ध् म ऽ म सा सा सा सा
 रे ना त न दे रे ना . त दा . नि धा कि ट त
 + १३ १ ५

सा म म म म म म म सा सा सा ऽ सा
 क धु म कि ट त क धे ता क्डान् धा क्डान् ऽ धा
 + १३ १

ध् नि सा
 क्डान् ऽ धा ||
 ५

ईश-प्रार्थना

जय जगदीश हरे ।

भक्त जनों का संकट छिन में दूर करे ।
जो ध्यावे फल पावे दुख बिनसे मन का ॥१॥
सुख संपत्ति गृह आवे कष्ट मिटे तन का ।
मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी ॥१॥
तुम पूरण परमात्मा तुम अंतर्दामी ।
पार ब्रम्ह परमेश्वर तुम सब के स्वामी ।
तुम कृपा करुणा के सागर तुम पालन करता ।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भरता ॥२॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपती ।
किस विध मिलूँ गुसाईँ तुमको मैं कुमती ।
दीन बंधु दुख हरता ठाकुर तुम मेरो ।
आपने हाथ उठावो द्वार पर्यो तेरो ।
विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ावो संतन की सेवा ॥३॥

स्थायी

अ	प	ध	नि	सां	नि	ध	प	म	ग	रे	ग	प	म	५	रे	ग	रे
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ज	य	.	.	.	ज	ग	दी	.	.	.	श	ह	रे	.	.	.	.
+							१३						१		५		

सा ५, सा ग म प ध म प | ' म ध नि प ध म प ५
 . . भ क्त ज नों का . . | . सं क ट छि न मे . .
 + १३ १ ५

म ग रे ग प म ५ | प ग सा ग म प ध म प ग म
 ० ० . . र क रे . | जो ध्या वे फ ल पा वे . . दु ख
 + १३ १ ५ + १३

प ध | सा रे ग रे सा नि सा नि ध प म ग म ||
 वि न | से . . म न का ||
 १ ५

अंतरा (१)

' सा सा सा नि ५ ध प | म ग रे ग प ध सा ५ ५ ध सा सा सा
 सु ख सं . . प ति | गृ ह . आ . वे . . . क ष्ट मि टे
 + १३ १ ५ + १३

रे ग | रे सा नि सा नि ध प ध सा नि ध प ध म म ग रे ग | सा ५
 . . | त न का मा . . . त पि ता . तु म मे . . | रे .
 १ ५ + १३ १

सा सा ग म प प प ध म प ५ | ग म ध ध सा नि ५ ध नि ध प ध प ग
 श र गा ग हूँ कि स की . . . | तु म वि न औ . . र न दू . जा आ
 ५ + १३ १ ५ + १३

प ध | सा रे ग रे सा नि सा नि ध प म ग म ||
 सक | रु . . जि स की ||
 १ ५

(२०५)

अंतरा (२)

सा सा ग गम पप | पध पध नि ऽ धप पप ध सा सा सा सा रे ग |
 तु म पूरणपर | मा त्मा... तुम अं. त र या . . |
 + १३ १ ५ + १३

ऽ रेसा ऽ सा धनि ऽ ध पधपग म ग रे | सारे गप मग रेग सा ऽ
 . मी. . पा र ब्र . म्ह पर मे . . श्वर | तुम सब के स्वा . मी .
 १ ५ + १३ १ ५ +

सा सा रे म | ऽ पप पप पधनि ध प ऽ ऽ | प प ध सा सा
 तु म कृ पा | . करुणाकेसा . . ग र . . | तु म पा . ल
 १३ १ ५ + १३ १ ५

सा सा सा सा रे ग ऽ रेम ग रे सा ऽ | रे निसा नि ध प म ग
 न क र ता | मे . . मू र ख ख ल
 + १३ १ ५

रे ग सा ग प ध | सा रे ग रे सा नि सा नि ध प
 का . मी कृ पा क | रो . . भ र ता
 + १३ १ ५

म ग म ||
 . . . ||

अंतरा (३)

सा सा ग ग म रे | ग म प ध ग प म ग रे ग
 तु म हो ए क अ | गो . च र स व के प्रा ण प
 + १३ १ ५ +

सा ऽ | ग म प प प प प प ध नि नि प प ध रे |
 ती . | कि स वि ध मि लुं गु सां . . ई तु म को . |
 १३ १ ५ + १३

सा नि ध नि प ऽ नि ऽ ध प ध प | म म म प
 मैं . कु म ती . दी . न वं धू . | दु ख ह र
 १ ५ + १३ १

ग ऽ सा रे ग म प म ग | रे सा ऽ ऽ ग म प ध नि
 ता . ठा कु र तु म मे . | रो
 ५ + १३ १ ५

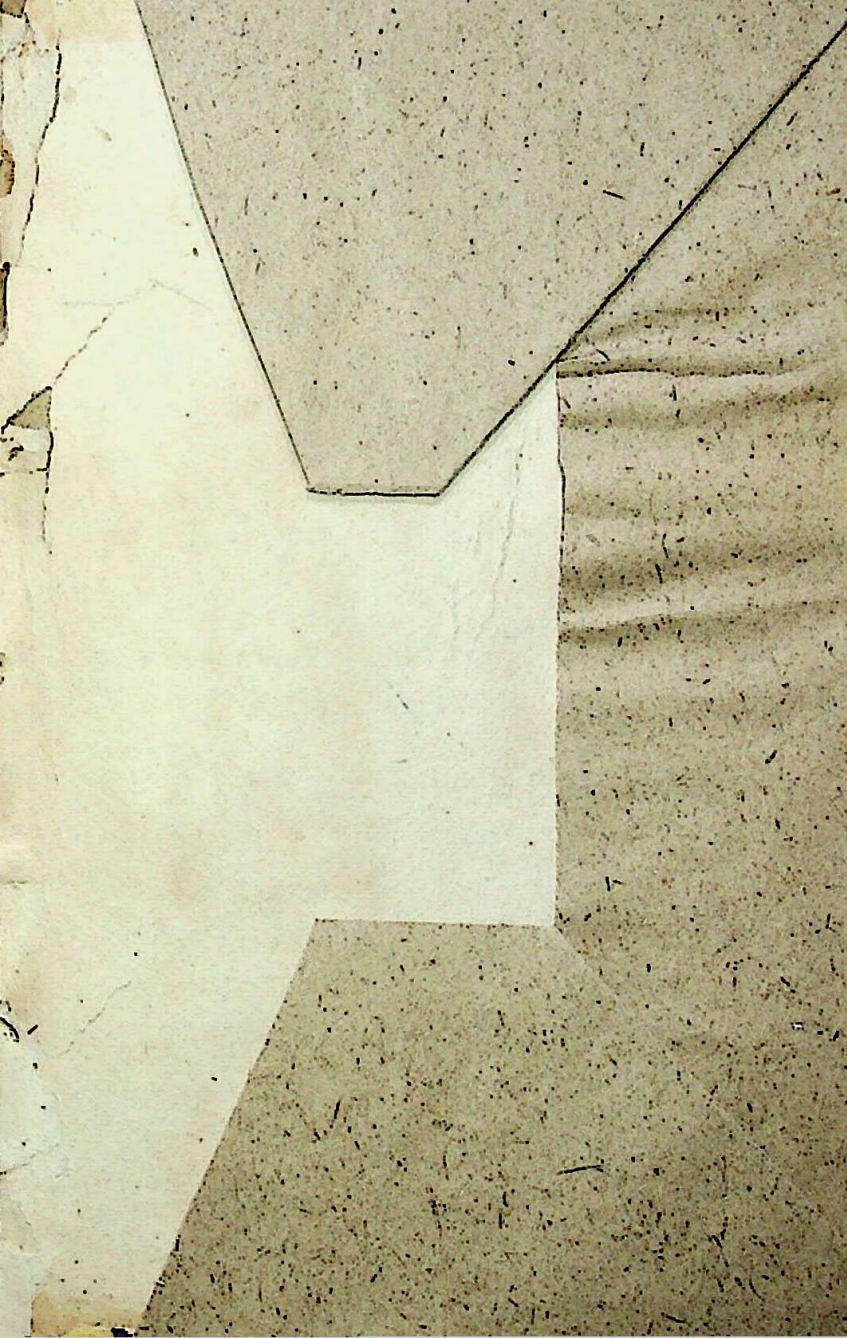
सा ऽ सा नि ध प ध म रे | ग प ध सा ऽ ऽ ध
 . . आ प ने हा . थ उ | ठा . वो . . . द्वा
 + १३ १ ५ +

सा सा सा रे ग रे सा | नि सा नि ध प ऽ ऽ ध नि
 र प र्यो . . ते . | रो वि ष
 १३ १ ५ +

ध प प ध म म | रे ग सा सा ग म प प ध म
 य वि का . र मि | टा . वो पा प ह रो दे वा .
 १३ १ ५ + १३

प ऽ | म ध ध नि नि प ध प ग प ध | सा रे ग
 . . श्र द्धा भ क्ति व द्वा . वो सं त न | की . .
 १ ५ + १३ १

रे सा नि सा नि ध प म ग म ||
 से . वा ||
 ५



आम
भरतनिधि